इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
शिक्षा विद्यापीठ

बी.ई.एस-123
अधिगम और शिक्षण

खंड

4

शिक्षक एक वृत्तिक

इकाई 13
विविध भूमिकाओं में शिक्षक 5

इकाई 14
नवाचारी और क्रियात्मक शोधकर्त्ता के रूप में शिक्षक 27

इकाई 15
मुक्त चिंतक के रूप में शिक्षक 52

इकाई 16
शिक्षकों का वृत्तिक विकास 69

विशेषज्ञ समिति

प्रोफेसर आई.के. बंसल (अध्यक्ष)
भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक षिक्षा विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रषिक्षण परिषद, नई दिल्ली

प्रोफेसर श्रीधर वशिष्ठ
पूर्व कुलपति
लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली

प्रोफेसर परवीन सिंक्लेयर
पूर्व निदेषक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रषिक्षण परिषद
नई दिल्ली एवं
प्रोफेसर, विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

प्रोफेसर एजाज़ मसीह
षिक्षा संकाय, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली

प्रोफेसर प्रत्यूष कुमार मंडल
डी.ई.एस.एस.एच.
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रषिक्षण परिषद, नई दिल्ली

प्रोफेसर अंजू सहगल गुप्ता
मानविकी विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

प्रोफेसर एन.के. दाष
पूर्व निदेषक, षिक्षा विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

प्रोफेसर एम. सी. शर्मा
(कार्यक्रम समन्वयक-बी.एड.)
षिक्षा विद्यापीठ, इग्नू
नई दिल्ली

डॉ. गौरव सिंह
(कार्यक्रम सह-समन्वयक-बी.एड.)
षिक्षा विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

विशेष आमंत्रित सदस्य (षिक्षा विद्यापीठ के संकाय सदस्य)

प्रोफेसर डी. वेंकटेष्वरलू
प्रोफेसर अभिताव मिश्रा
सुश्री. पूनम भूषण
डॉ. आयषा कन्नाडी
डॉ. एम.वी. लक्ष्मी रेड्डी
डॉ. भारती डोगरा
डॉ. वंदना सिंह
डॉ. एलिज़ाबेथ कुरुविला
डॉ. निराधर डे

पाठ्यक्र समन्यवक : गौरव सिंह

खंड निर्माण दल

पाठ्यक्रम योगदान

इकाई 13 ई.एस.335 से लिया गया है।

प्रो. सरोज पाण्डेय (इकाई 14)
निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली एवं
डॉ. गौरव सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. सरोज पाण्डेय (इकाई 15)
निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. गौरव सिंह (इकाई 16)
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

विषयवस्तु संपादन

प्रो. सरोज पाण्डेय
निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

आरूप संपादन

डॉ. गौरव सिंह
शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू
नई दिल्ली

अनुवादक दल

डॉ. सत्यवीर सिंह
प्रधानाचार्य, एस.एस. इंटरकॉलेज, पिलाना, वागपत

डॉ. चंपा पंत (सेवानिवृत्त)
एस.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली

श्री गिरीश कुमार तिवारी
शोधार्थी, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी

भाषा संपादन एवं हिन्दी पुनर्रीक्षण

डॉ. गौरव सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
षिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

सामाग्री निर्माण

प्रो. सरोज पाण्डेय
निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू

श्री एस.एस वेंकटाचलम
सहायक सचिव, शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू

अक्टूबर, 2016

©इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2016

ISBN-978-81-

सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

शिक्षा विद्यापीठ एवं इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के बारे में विश्वविद्यालय कार्यालय मैदान गढ़ी नई दिल्ली से अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से निदेशक, प्रो. विभा जोशी, शिक्षा विद्यापीठ द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेजर टाइप सेटिंग : टेसा मीडिया एण्ड कम्प्यूटर, C-206, A.F.Enclave-II, नई दिल्ली

मुद्रक :

बी.ई.एस.123 अधिगम और षिक्षण

खंड 1 अधिगम : परिप्रेक्ष्य और उपागम

इकाई 1 अधिगम की समझ

इकाई 2 अधिगम के उपागम

इकाई 3 ज्ञान की रचना हेतु अधिगम

इकाई 4 विभिन्न संदर्भों में अधिगम

खंड 2 षिक्षार्थी को समझना

इकाई 5 सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में षिक्षार्थी

इकाई 6 वैयक्तिक रूप में षिक्षार्थी-I

इकाई 7 वैयक्तिक रूप में षिक्षार्थी-II

खंड 3 षिक्षण-अधिगम प्रक्रिया

इकाई 8 षिक्षण को समझना

इकाई 9 षिक्षण-अधिगम का नियोजन

इकाई 10 षिक्षण-अधिगम का संगठन

इकाई 11 षिक्षण-अधिगम संसाधन

इकाई 12 कक्षाकक्ष में षिक्षण-अधिगम प्रबंधन

खंड 4 षिक्षक एक वृत्तिक

इकाई 13 विविध भूमिकाओं में षिक्षक

इकाई 14 नवाचारी और क्रियात्मक शोधकर्त्ता के रूप में षिक्षक

इकाई 15 मुक्त चिंतक के रूप में षिक्षक

इकाई 16 षिक्षकों का वृत्तिक विकास

खंड 4 शिक्षक एक वृत्तिक

खंड परिचय

हमने पिछले तीन खंड़ों में अधिगम के मूल आधारों, शिक्षार्थी तथा शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के विभिन्न आयामों की चर्चा की है। परन्तु शिक्षण–अधिगम पर कोई भी चर्चा इसके महत्त्वपूर्ण अंग ''शिक्षक'' पर विचार किए बिना अधूरी है। पाठ्यक्रम का यह अन्तिम खंड शिक्षक की विभिन्न भूमिकाओं पर केन्द्रित है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षक केवल ज्ञान प्रद्याता नहीं है बल्कि इससे कहीं अधिक है। यह खंड आपको विविध परिप्रेक्ष्यों के शिक्षक की भूमिका समझने में मदद करेगा। इस खंड में चार इकाईयां हैं:

इकाई 13: विविध भूमिकाओं में शिक्षक, एक शिक्षक के मानवमात्र के रूप में स्थान पर बात करती है। इकाई में शिक्षक के विश्वास, व्यवहार तथा उन अभ्यासों की चर्चा की गई है जो शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। शिक्षक की योजनाकार, प्रबन्धक विषयवस्तु प्रद्याता, सहायक, नेता, सह–निर्माता, आदि भूमिकाओं में चर्चा आपको शिक्षक के विविध परिप्रेक्ष्यों को समझने में मदद करेगी। हम पहले ही अधिगम के व्यवहारवादी, संज्ञानात्मक एवं संरचनावादी परिप्रेक्ष्यों की चर्चा कर चुके हैं, शिक्षकों पर भी यही लागू होता है।

इकाई 14: नवाचारी एवं क्रियात्मक शोधकर्ता के रूप में शिक्षक में परिचर्चा नवाचारों से प्रारम्भ होती है। हम शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में नवाचारों से क्या समझते हैं? और एक शिक्षक कितने भिन्न प्रकार के नवाचार प्रयोग कर सकता है? इकाई में इसकी भी चर्चा की गई है। इकाई में नवाचार अपनाने में शिक्षक की भूमिका तथा क्रियात्मक शोध की सहायता से नवाचार लाने की प्रक्रिया की चर्चा की गई है। इकाई क्रियात्मक शोध के विविध स्वरूपों तथा क्रियात्मक शोध करने तथा प्रतिवेदन लिखने में शिक्षक की भूमिका का भी वर्णन करती है।

इकाई 15: मुक्त चिन्तक के रूप में शिक्षक, एक मुक्त चिन्तक के रूप में शिक्षक की भूमिका रेखांकित करती है। मुक्तचिन्तन एवं शिक्षकों में मुक्त चिन्तन की आवश्यकता पर परिचर्चा आपको मुक्तचिन्तन का महत्व समझने में मदद करेगी। इकाई में मुक्तचिन्तन हेतु युक्तियां/विधियां भी सुझायी गई हैं जिनका उपयोग आप एक मुक्त चिन्तक बनने के लिए कर सकते हैं।

इकाई 16: शिक्षकों का वृत्तिक विकास में परिचर्चाओं का केन्द्र शिक्षकों के सतत वृत्तिक विकास की आवश्यकता एवं उपलब्ध अवसर हैं। इकाई में सतत वृत्तिक विकास से जुड़ी विविध योजनाओं एवं कार्यक्रमों का आलोचनात्मक विश्लेषण किया जायगा तथा इसके तरीकों एवं माध्यमों की व्याख्या की जायेगी। इकाई सूचना–संप्रेषण औद्योगिकी माध्यित वृत्तिक विकास हेतु शिक्षकों के लिए उपलब्ध अवसरों की चर्चा करेगी, जिनका उपयोग करके वे एक जीवन–पर्यन्त शिक्षार्थी के रूप में आगे बढ़ सकते हैं।

इकाई 13 विविध भूमिकाओं में षिक्षक*

इकाई की रूपरेखा

13.1 प्रस्तावना

13.2 उद्देष्य

13.3 एक व्यक्ति के रूप में शिक्षक

- 13.3.1 कक्षाकक्ष में षिक्षक
- 13.3.2 सहकर्मी के रूप में षिक्षक
- 13.3.3 समुदाय में षिक्षक
- 13.3.4 नागरिक के रूप में षिक्षक

13.4 षिक्षक की व्यक्तिगत विशेषताएँ

13.5 षिक्षक – ज्ञान संप्रेषक के रूप में

13.6 षिक्षक – एक नियोजक (योजनाकार) के रूप में

13.7 षिक्षक – एक मददगार के रूप में

13.8 षिक्षक – एक सह–सृजक के रूप में

13.9 षिक्षक – एक नेता के रूप में

13.10 षिक्षक – एक प्रबंधक के रूप में

- 13.10.1 पूर्व षिक्षण चरण में षिक्षक की भूमिका
- 13.10.2 षिक्षण वाले चरण में षिक्षक की भूमिका
- 13.10.3 षिक्षणअनुवर्ती चरण में षिक्षक की भूमिका

13.11 षिक्षक – एक परामर्षदाता के रूप में

13.12 सारांष

13.13 इकाई के अंत में अभ्यास

13.14 बोध प्रष्नों के उत्तर

13.15 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पठन सामग्री

13.1 प्रस्तावना

"षिक्षक क्या है, उससे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि वह क्या पढ़ाता है।" – कार्ल ए. मेनिनजर।

यह प्रसिद्ध उद्धरण एक षिक्षक होने के महत्व को दर्षाता है। षिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में षिक्षक एक आधार है। वर्तमान संदर्भ में षिक्षक केवल एक ज्ञान प्रसारक ही नहीं है बल्कि वह अनेक भूमिकाएँ निभाता है। षिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में परिवर्तन होने के कारण षिक्षक से इतनी आकांक्षाएँ बढ़ गई है कि उसकी भूमिका और अधिक चुनौतीपूर्ण हो गई है। उन आकांक्षाओं के अनुरूप बनने हेतु उसे विविध भूमिकाएँ निभानी पड़ती है जैसे – योजनाकार, प्रोत्साहक, सह–रचनाकार, कक्षाकक्ष के अंदर और उसके बाहर नेता, प्रबंधक, परामर्षदाता और इन सबके अतिरिक्त एक सच्चा मनुष्य। इस इकाई में हम षिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में

***इस इकाई में अधिकांश खंड/उपखंड, ई.एस.335: शिक्षक एवं विद्यालय, इकाई पांच व छः से लिए गए हैं।**

षिक्षक की विविध भूमिकाओं और उनके महत्व पर चर्चा करेंगे। इस इकाई में हम षिक्षक के व्यक्तिगत गुणों के बारे में भी चर्चा करेंगे, जैसे – विष्वास, व्यवहार और अभ्यास, आदि जो षिक्षण–अधिगम प्रक्रिया पर प्रभाव ड़ालते हैं।

13.2 उद्देष्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप :

- अनेक स्थानों पर षिक्षक की भूमिका का परीक्षण कर सकेंगे;
- षिक्षण–अधिगम और षिक्षक के व्यक्तिगत गुणों के बीच सम्बन्ध स्थापित कर सकेंगे;
- षिक्षक की ज्ञानसंप्रेषक एवं योजनाकार के रूप में भूमिका की व्याख्या कर सकेंगे;
- षिक्षक की प्रोत्साहक एवं सह–रचनाकार के रूप में भूमिका का परीक्षण कर सकेंगे;
- षिक्षक की प्रबंधक के रूप में भूमिका को समझ सकेंगे; और
- परामर्षदाता के रूप में षिक्षक के महत्व पर चिन्तन कर सकेंगे।

13.3 एक व्यक्ति के रूप में शिक्षक

पहले हमें विविध स्थितियों में षिक्षक की भूमिकाओं को समझना होगा। हम जानते हैं कि षिक्षक को देष के साथ–साथ परिवार, विद्यालय और समाज की आषाओं को पूरा करना पड़ता है। इस भाग में हम सीखेंगे कि षिक्षक से कक्षाकक्ष में तथा देष का नागरिक होने के नाते हम उससे क्या–क्या अपेक्षाएं रखते हैं?

13.3.1 कक्षाकक्ष में षिक्षक

कक्षाकक्ष में एक षिक्षक की मुख्य जिम्मेदारी यह है कि वह इस बात के लिए आष्वस्त हो कि षिक्षा द्वारा निर्धारित लक्ष्य प्राप्त किए जा रहे हैं। विशिष्ट विषयों में निर्धारित किए गए कौषलों, ज्ञान और विचारों को सीखने से यह जाना जा सकता है। इन विषयों के द्वारा षिक्षक विद्यालय द्वारा निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करने और साथ ही सीखने वाले के सर्वांगीण विकास का प्रयत्न करता है, जो षिक्षा का विस्तृत लक्ष्य है। इसे पाने के क्रम में षिक्षक कक्षा में षिक्षार्थियों की सुविधा हेतु एक कृत्रिम वातावरण तैयार करता है जो उन्हें सीखने में सहायता करता है। वह षिक्षार्थियों को सूचना प्रदान करता है, उन्हें सीखने के लिए प्रेरित करता है, उनकी गलतियाँ सुधारने में सहायता करता है, विभिन्न परिस्थितियों में उनका मार्गदर्षन करता है और उनके प्रदर्षन का मूल्यांकन करता है। दूसरे शब्दों में षिक्षक विषयवस्तु का प्रयोग न केवल षिक्षार्थियों को ज्ञान, कौषल या विचार प्रदान करने हेतु माध्यम या साधन के रूप में करता है बल्कि उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायता करता है, यही षिक्षा का मूल सिद्धान्त है। अगले भागों में कक्षाकक्ष में षिक्षक की विविध भूमिकाओं पर विस्तार से चर्चा की गई है।

13.3.2 सहकर्मी के रूप में षिक्षक

सहकर्मी के रूप में षिक्षक की भूमिका के बारे में सोचते हैं तो हमारे मन में उसकी ''एक समूह के एक भागीदार खिलाड़ी'' की भूमिका का चित्र उभरता है। विद्यालय के साथ–साथ कक्षाकक्ष मे अनेक गतिविधियाँ हैं, जिन्हें एक षिक्षक केवल अपने सहकर्मियों की सहायता से ही पूरा कर सकता है।

क्रियाकलाप 1

कुछ ऐसे कार्य या गतिविधियाँ लिखिए जिन्हें पूरा करने के लिए आपको अपने सहकर्मियों की सहायता की आवष्यकता हो। उस गतिविधि को पूरा करने में सहकर्मी की अपेक्षित भूमिका भी लिखिए।

उपर्युक्त गतिविधि आपकी सफलता में आपके साथी के महत्व को पहचानने में आपकी सहायता करेगी।

एक अच्छा सहकर्मी बनने के लिए एक षिक्षक में निम्नलिखित गुणों की आवष्यकता है:

- सबसे पहले आपको चाहिए कि आप दूसरों के विचारों का आदर करें।
- आपको जानना चाहिए कि षिक्षार्थियों के लाभ के लिए वे कौन–से क्षेत्र हैं जहाँ आपको दूसरों की सहायता की आवष्यकता है और जहाँ आप दूसरे षिक्षकों की सहायता कर सकते हैं।
- आपकी विनम्रता और योग्यता बिना किसी पूर्वाग्रह और पक्षपात के आपको आपके सहकर्मियों के पास पहुँचाती है जो अच्छे रिष्ते बनाने के लिए अधिक महत्वपूर्ण है, लेकिन इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि अपने सहकर्मियों के मामलों में अधिक दखल देना आपके लिए समस्याएँ उत्पन्न कर सकता है। अपनी दखल की सीमा के आप स्वयं न्यायाधीष हैं।

  निरंतर विचार–विमर्ष और साथ कार्य करना षिक्षक को न केवल अपने षिक्षार्थियों और उनकी समस्याओं को समझने में सहायता करता है बल्कि स्वयं षिक्षक को उसके व्यक्तित्व के विकास में प्रोत्साहित करता है। अप्रत्यक्ष रूप से यह षिक्षार्थियों में खुलेपन की विचारधारा के विकास का मार्ग प्रषस्त करता है।

13.3.3 समुदाय में षिक्षक

यह पूछने से पहले, "समुदाय में षिक्षक की क्या भूमिका है?" हमें यह सोचना चाहिए, "वे कौन–सी सामाजिक आकांक्षाएँ हैं जो समाज एक षिक्षक से चाहता है?" समुदाय में षिक्षक की बड़ी सक्रिय भूमिका होती है। इस भूमिका में अनेक पहलू सन्निहित हैं:

i) षिक्षक की एक सबसे बड़ी भूमिका यह है कि वह अभिभावकों में षिक्षा के महत्व को प्रचारित करें, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्र में, ताकि वे अपने बच्चों को विद्यालयों में प्रवेष कराएँ।

ii) हमारे अधिकांष ग्रामीण लोगों को टीकाकरण, जन्म नियंत्रण उपायों, गर्भावस्था और बच्चे के जन्म के समय नारी स्वास्थ्य, घर के अंदर और बाहर साफ–सफाई, संक्रामक रोग, व्यक्तिगत स्वास्थ्य, आदि से सम्बन्धित विषयों पर जागरूकता की आवष्यकता है। समाज का जिम्मेदार सदस्य होने के नाते षिक्षक को या तो प्रत्यक्ष रूप से लोगों को सूचित करना चाहिए अथवा फिर एक चिकित्सक की भाँति सूचना के उचित स्रोतों की ओर उनका मार्गदर्षन करना चाहिए।

iii) समुदाय के लोग विशेष रूप से षिक्षकों से अपने बच्चों के लिए आदर्ष बनने की आषा रखते हैं जैसे कि वे अपने आप हैं। वे चाहते हैं कि षिक्षक कोई ऐसा आचरण न करे जो बुरा हो और बच्चे उसकी नकल करें।

iv) ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ वयस्कों की बहुत बड़ी संख्या निरक्षर है, षिक्षक को मार्गदर्षक, दार्षनिक और परामर्षदाता की भूमिका निभानी पड़ती है। प्रायः अपनी समस्याओं के समाधान के लिए लोग षिक्षकों से सम्पर्क करते हैं।

यह प्रत्यक्ष है कि समाज में विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को षिक्षकों से बहुमुखी आषाएँ हैं। इसलिए षिक्षक की भूमिका बहुआयामी होती है।

13.3.4 नागरिक के रूप में षिक्षक

एक षिक्षित व्यक्ति के रूप में और एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो दूसरों को षिक्षा देता है, षिक्षक भविष्य के नागरिकों के लिए आदर्ष रूप प्रदान करता है। एक षिक्षक लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भागीदारी करते हुए लोकतांत्रिक प्रणाली को समर्थ बनाता है। समाज के पक्षपातरहित उद्देष्यों के गुण–दोषों की समीक्षा करता है, देष में भ्रष्टाचार, घोटाले, उपद्रव, शोषण जैसी घटनाओं के प्रति संवेदनषील होता है जो घटनाएँ देष के विकास में रुकावट उत्पन्न करती हैं और असामाजिक और राष्ट्रविरोधी गतिविधियाँ हैं, उनको रोकने से समाज में गति प्रदान करता हैं।

इन सबसे ऊपर एक षिक्षक को षिक्षार्थियों के लिए एक मित्र, दार्षनक और पथप्रदर्षक बनना पड़ता है। उसे षिक्षार्थियों को सबसे अच्छा बनाना होता है और देष के सेवा के लिए प्रेरित करना पड़ता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी: क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें तथा अपने उत्तरों को नीचे दिए गए स्थान में लिखें।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की तुलना करें।

1) समुदाय की किस प्रकार की गतिविधियों में षिक्षक से बड़ी सहायता मिल सकती है?

....

....

....

....

....

एक षिक्षक से यह आषा की जाती है कि वह इन सब भूमिकाओं के योग्य बनें। चाहे वह किसी भी भूमिका का निर्वाह कर रहा हो उसके व्यक्तिगत गुण, विष्वास और व्यवहार स्पष्ट प्रभाव छोड़ते हैं। अगला भाग आपको षिक्षक के व्यक्तित्व के गुणों को पहचानने में सहायता करेगा जो आपको जानने ही चाहिए।

13.4 षिक्षक की व्यक्तिगत विशेषताएँ

हम पहले देख चुके हैं कि वर्तमान समय में षिक्षक को प्रभावी बनने हेतु एक क्रमबद्ध प्रषिक्षण की आवष्यकता है। आज जब अन्य सभी वृत्तिक अपने कार्यों में अधिक विशेषज्ञ होते जा रहे हैं तो एक षिक्षक से यह तीव्र आषा की जा रही है कि वह एक समय में बहुआयामी बने। उदाहरण के लिए, कुछ व्यवसायी, जैसे– वकील, चिकित्सक और अभियन्ता स्पष्ट रूप से सीमित भूमिका निभाते हैं जबकि एक षिक्षक से अपने व्यवसाय में विविध गतिविधियों से जुड़ने की आषा की जाती है। एक षिक्षक षिक्षार्थी के केवल बौद्धिक विकास से ही नहीं जुड़ा है बल्कि उसे उनके नैतिक, भावात्मक, नागरिकीय, सौन्दर्य सम्बन्धी और यहाँ तक की उसके जीविकोपार्जन सम्बन्धी विकास का भी ध्यान रखना है। इस प्रकार षिक्षक का कार्य एक चुनौतीपूर्ण कार्य बन गया है।

एक आदर्ष षिक्षक (वास्तव में यदि वह वैसा अस्तित्व रखता है) को एक सन्यासी जैसा चरित्र रखना चाहिए, एक विशेषज्ञ जैसा ज्ञान और कौषल होने चाहिए और उन्हें प्रयोग करने हेतु एक कलाकार जैसी संवेदनषीलता और भावनाएँ होनी चाहिए। ये सब बातें इस बात को दर्षाती हैं कि एक षिक्षक को प्रभावषाली होना चाहिए, अपने अंदर अनेक व्यक्तिगत गुणों और वृत्तिक योग्यताओं का विकास करना चाहिए। इकाई के इस भाग में हम षिक्षकों के व्यक्तिगत और वृत्तिक विकास से जुड़े मुद्दों के पहलुओं पर विचार करेंगे।

व्यक्तिगत गुण

हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं कि प्रभावषाली और कार्यकुषल बनने के लिए एक षिक्षक में व्यक्तिगत और साथ ही वृत्तिक योग्यताओं की आवष्यकता है। आइए, उन गुणों पर एक नजर डालें जो एक षिक्षक को प्रभावी बनाने की दिषा में ले जाते हैं।

ईमानदारी, सच्चाई, वफादारी, समय की पाबंदी, समर्पण, प्रेम, आदि जैसे गुण प्रायः पढ़ने की अपेक्षा दूसरों के व्यवहार का निरीक्षण करने से अर्जित किए जाते हैं। इसका अर्थ यह है कि एक षिक्षक को अपने षिक्षार्थियों के लिए लम्बे समय तक प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए एक आदर्ष के रूप में प्रस्तुत होना चाहिए, यदि उनमें व्यक्तित्व और चरित्र के इन गुणों का विकास करना है।

प्रत्येक व्यक्ति यह आषा करता है कि षिक्षक का एक स्थापित मूल्य तंत्र हो। यदि एक षिक्षक आलसी और उत्साहहीन है, उसमें कठिन परिश्रम करने की इच्छा की कमी है तो उससे आषा नहीं की जा सकती कि वह अपने षिक्षार्थियों में अच्छे गुणों का विकास कर सकेगा। षिक्षार्थी बड़ी बारीकी से निरीक्षण करते हैं। वे षिक्षक के भाषण देने और वास्तविक व्यवहार करने के अंतर को परखने लायक काफी बुद्धिमान होते हैं। यदि एक षिक्षक धूम्रपान करता है तो उसे कोई अधिकार नहीं है कि वह अपने षिक्षार्थियों को धूम्रपान करने से रोके। इसी प्रकार अगर कोई षिक्षक बेईमान है और अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं करता है तो उसे कोई अधिकार नहीं है कि वह अपने षिक्षार्थियों को ईमानदार और खरा बनने की सलाह दे।

क्रियाकलाप 2

हम यह पहले ही जान चुके हैं कि सामान्य रूप से प्रभावी बनने हेतु एक षिक्षक में कुछ मूल्य और सकारात्मक चरित्र लक्षित होने चाहिए। व्यक्तिगत रूप से आपने विद्यालयी जीवन के अनेक वर्ष बिताएँ होंगे, इसलिए आप इस योग्य हैं कि आप उनमें से कुछ लोगों की सूची तैयार कीजिए जिन्होंने आपको प्रभावित किया। याद कीजिए और नीचे दिए गए स्थान पर उनमें पाए गए कुछ व्यक्तिगत गुणों एवं नैतिक मूल्यों को लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

आपके लक्षणों या मूल्यों की इस सूची में, दूसरों में, शायद स्नेह, दयालुता, प्रेम, दिलचस्पी, आपसी समझ, खरापन, सहयोग, समर्पण, विनोद आदि जैसे गुण शामिल हों।

स्नेह

जैसा कि आप जानते हैं कि स्नेह षिक्षक के लिए एक मूलभूत लक्षण है। हम प्रत्येक षिक्षक से यह आषा नहीं करते कि वह आइंसटीन जैसा बुद्धिमान हो और न ही हम यह आषा करते हें कि उसमें फ्लोरेंस नाइटिंगेल जैसा समर्पण मौजूद हो। फिर भी हम सभी यह उम्मीद करते हैं कि प्रत्येक षिक्षक में समुचित रूप में लगाव विद्यमान हो। वास्तव में धरती पर कोई भी बच्चा ऐसा नहीं है जो अपने चारों ओर के वातावरण विशेष रूप से अभिभावकों और षिक्षकों से स्नेह की लालसा नहीं रखता हो। जैसे एक माँ अपने बच्चे पर प्यार बरसाती है वैसे ही एक षिक्षक को अपने षिक्षार्थियों को प्यार करना चाहिए और उनमें दिलचस्पी लेनी चाहिए। षिक्षक के रूप में हम स्नेह के अभाव में अपने षिक्षार्थियों को यह अहसास नहीं करा सकते कि हम उन्हें चाहते हैं और स्वीकार करते हैं। यदि वे अनुभव करते हैं कि वे पूर्णतः अनचाहे और अस्वीकृत हैं तो उनका मन बुरे विचारों से उद्विग्न हो जाएगा जो उन्हें कक्षाकक्ष में होने वाली गतिविधियों के लिए उत्साहित होने से रोकेगा। किसी कार्य में भाग न लेना कमजोर प्रदर्षन का कारण बनता है और कमजोर प्रदर्षन किसी को भी उस पद्धति से अलग कर देता है।

तदानुभूति (Empathy)

तदानुभूति दूसरा बड़ा गुण है जो एक षिक्षक होने के नाते आपमें होना आवष्यक है। यह गुण आपको इस योग्य बनाएगा कि आप अपने षिक्षार्थियों की समस्याओं से जुड़ाव महसूस करें और उनसे निपटने के प्रयासों में उनसे जुड़े। यह गुण आपको इस योग्य बनाएगा कि आप अपने षिक्षाथियों को भावात्मक के साथ बौद्धिक दोनों रूप में बेहतर रूप से समझ सकें। एक बच्चे की तरह से विष्व को देखने के लिए आपको भावनात्मक रूप से अधिक लचीला होना चाहिए। तदानुभूति आपको न्यायानुरूप, निष्पक्ष और वस्तुनिष्ठ बनने में सहायता करेगी। यह आपमें एक आवष्यक समझ उत्पन्न करेगी जो आपको बने बनाए दृढ़ विचारों और पूर्वाग्रहों से अलग करेगी और आप सभी षिक्षार्थियों के साथ यह जाने बिना कि वे किस पृष्ठभूमि से आए हैं, समानता का बर्ताव करेंगे। साथ ही तदानुभूति आपके अंदर एक बच्चे के मन की कार्य प्रणाली में जागरूकता उत्पन्न करेगी जो आपके अंदर एक परिवर्तन करेगी कि आप ऐसे शब्दों का प्रयोग न करें जिससे बच्चे का अपमान हो और उसके दिल को ठेस पहुँचे।

चिन्ता और वचनबद्धता

वास्तविक चिन्ता और वचनबद्धता दो ऐसे दूसरे सामान्य गुण हैं जिनकी हम षिक्षकों में आषा करते हैं। आपको भी अपने षिक्षार्थियों के विकास के बारे में उसी प्रकार समर्पित और चिन्तित होना चाहिए जिस प्रकार उनके अभिभावक होते हैं और उसके बाद यह देखने के लिए अपनी योग्यतानुसार प्रयास करने चाहिए कि समाज ने बच्चों की वृद्धि एवं विकास के लिए समुचित अवसर प्रदान किया है। आपको याद रखना चाहिए कि सुधार स्वेच्छा से कम ही होता है। अधिकांषतः यह सुनियोजित प्रयासों से प्राप्त किया जाता है। एक बच्चे के दिमाग तक पहुँचने के लिए आपको उसके मन में जगह बनानी चाहिए। जब बच्चा ठीक अनुभव करता है केवल तब ही वह ठीक सोच सकता है। इसलिए यदि आप बच्चों से अपने रिष्ते सुधारना चाहते हैं तो आपको अपनी अस्वीकार्य भाषायी आदत को बदलने की आवष्यकता है और नई स्वीकार्य भाषा को अपनाने की आवष्यकता है। बच्चे के साथ बात करने का आपका तरीका यह प्रकट करता है कि आप उसके बारे में कैसा महसूस करते

हैं। बिना सोचे–समझे बोले गए आपके वक्तव्य आपके आत्मसम्मान और स्वयोग्यता को प्रभावित कर सकते हैं। यदि आप सचमुच अपने षिक्षार्थियों के विकास के लिए समर्पित और चिन्तित हैं तो आपको अपनी बातचीत में ऐसी असंगत बातों से बचने का प्रयास करना चाहिए जो बच्चे को अपने ज्ञान के प्रति अविष्वासी बनाता है, अपने अनुभव व्यक्त करने से रोकता है और उसके अंदर संदेह उत्पन्न करता है। जहाँ तक संभव हो आपको षिक्षार्थियों के समक्ष दोषारोपण और बनावटी बातें करने, आदेष देने और प्रमुख बनने और उपहास करने तथा निंदा करने से बचना चाहिए। केवल वास्तविक चिन्ता और वचनबद्धता के द्वारा ही आप उनके भले के लिए इस उद्देष्य की प्राप्ति कर सकते हैं।

फिर से अगर आप वास्तव में अपने षिक्षार्थियों की भलाई में रूचि रखते हैं तो आपको विष्वसनीय, यथार्थवादी और खरा बनने की आवष्यकता है। जब आप स्वयं धैर्यविहीन हो रहे हों, आपको सहनषीलता का उपदेष देने का कोई अधिकार नहीं है, जब आप बुरा महसूस कर रहे हों, आपको शोर मचाकर पाखंड करने की आवष्यकता नहीं है। यदि आप स्वयं प्रकाषवान हैं, यदि आप अपने और अपने षिक्षार्थियों के प्रति जागरूक हैं और यदि आपने बिना किसी नुकसान के उन्हें व्यक्त करना सीख लिया है तो आपको अपने गुस्से और असहनषीलता से डरने की कोई आवष्यकता नहीं है।

विनोद (हँसी–मजाक)

षिक्षक में हँसी–मजाक का तत्व एक अच्छा लक्षण है। जब हम उन तत्वों से घिरे होते हैं जो भिन्न, अनुपयुक्त और हमारी अपेक्षा के विपरीत हैं तो हम उन्हें हँसी–मजाक द्वारा हटा देते हैं। एक षिक्षक होने के नाते आपको निरंतर विचारों, धारणाओं और रिष्तों के साथ खेलने की योग्यता का विकास करना चाहिए। साथ ही आपमें इतनी योग्यता होनी चाहिए कि आप गंभीर घटनाओं में भी बिनोदी तत्वों को सुनियोजित कर सकें और हास–परिहास के तरीके से व्यक्त कर सकें। ये सभी बातें कक्षाकक्ष में हँसी–मजाक का वातावरण बनाती हैं। यहाँ एक मजाक और विनोदपूर्ण कथन आपके षिक्षार्थियों को प्रसन्नता का अनुभव कराएगा और आपके एकाधिकार को दूर करेगा। इससे वे जोर–जोर से हँस सकते हैं या उनके होंठों पर मुस्कराहट आ सकती है, जिससे उनके मन हल्के हो सकते हैं। इस प्रकार हँसी–मजाक एक प्रकाषवान षिक्षक के हाथों में एक अच्छा साधन बन सकता है। इसकी सहायता से षिक्षक कक्षाकक्ष को सजीव बना सकता है और उसमें तनावरहित वातावरण बना सकता है। फिर भी बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि हँसी–मजाक किसी षिक्षार्थी विशेष पर बोझ न डालें। अनजाने में बच्चों को ठेस न पहुँचे। व्यंग्य करने से बचे। षिक्षक षिक्षार्थी के वार्तालाप में अपमानजनक टिप्पणियों के लिए कोई स्थान नहीं है। मस्तिष्क में यह बात सदैव रहनी चाहिए कि षिक्षक का कार्य घाव भरना है, घाव देना नहीं। आपको ऐसी टीका–टिप्पणी को नकारना चाहिए जो बच्चे के आत्मसम्मान को ठेस पहुंचाती हो।

अन्य विशेषताएँ

प्रभावी बनने हेतु एक षिक्षक में सफाई, समय की पाबंदी, ईमानदारी आदि जैसे कुछ व्यक्तिगत गुणों की आवष्यकता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि हम एक षिक्षक से महात्मा बुद्ध या महावीरजी की तरह पवित्र होने की आषा करते हैं। फिर भी एक षिक्षक में इन गुणों का होना इस योग्य बनाता है कि वह इन गुणों को अपने षिक्षार्थी में विकसित कर सके, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार एक लैम्प दूसरे लैम्प को जलाकर अपने समान रोषनी प्रदान करता है। इसलिए आपको इन गुणों की आवष्यकता है ताकि आप अपने षिक्षार्थियों को ईमानदार, समय का पाबंद, सच्चा, आदि बनने की प्रेरणा दे सकें। दया केवल दयालुता से ही पढ़ाई जा सकती है। सौन्दर्यषास्त्र कुरूपता से नहीं पढ़ाया जा सकता। इसी प्रकार

दयालुता, ईमानदारी, सच्चाई, आदि गुण उन व्यक्तियों से सीखे जाते हैं जो उन्हें अपने व्यवहार में दर्षाते हैं। आप गुणों को केवल भाषण देकर नहीं सिखा सकते, उदाहरण के लिए, तैरना और साइकिल चलाना केवल भाषण देकर नहीं सिखाया जा सकता। ये अनुभव से ही सीखे जा सकते हैं। इन गुणों की ओर प्रेरित करने हेतु एक सच्चरित्र षिक्षक की आवष्यकता होती है।

इकाई के इस भाग में हमने देखा कि एक षिक्षक को प्रभावी बनने हेतु प्रेम, तदानुभूति, चिंता, समर्पण, हँसी–मजाक, आदि जैसे अनेक व्यक्तिगत गुणों की आवष्यकता है। हमने यह भी देखा कि इन लक्षणों या गुणों में से अधिकांषतः पढ़ाए नहीं जाते बल्कि विकसित किए जाते हैं। इस प्रकार सच्चाई यह है कि प्रत्येक षिक्षक, इनमें वे भी शामिल हैं जो षिक्षक बनने की प्रक्रिया में हैं, इन गुणों को अधिक से अधिक प्राप्त करने हेतु जागरूक प्रयास करते हैं ताकि वे और अधिक कुषल और प्रभावी बनते रहें।

बोध प्रश्न

टिप्पणी: क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें तथा अपने उत्तरों को नीचे दिए गए स्थान में लिखें

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की तुलना करें।

2) एक षिक्षक में प्रभावी बनने हेतु निम्नलिखित कुछ व्यक्तिगत गुण होने चाहिएः

i) .... ii) ....

iii) .... iv) ....

v) .... vi) ....

vii) .... viii) ....

ix) .... x) ....

13.5 षिक्षक – ज्ञान संप्रेषक के रूप में

संप्रेषक के रूप में षिक्षक की भूमिका को समझने के क्रम में हमें परम्परागत षिक्षा के ढाँचे में षिक्षक की भूमिका की जाँच करनी चाहिए। जहाँ षिक्षक से निम्नलिखित आषाएँ की जाती हैंः

i) एक षिक्षक पाठ का परिचय कराता है;

ii) एक षिक्षक संकल्पना की व्याख्या करता है;

iii) एक षिक्षक उचित उदाहरणों द्वारा षिक्षार्थियों के संदेहों को दूर करता है,

iv) एक षिक्षक व्याख्या करते समय चित्र बनाता है,

v) एक षिक्षक सीखने वालों से प्रष्न पूछता है।

उपर्युक्त सभी स्थितियों में एक षिक्षक षिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में सहभागी होता है, सीखने वालों को सिखाने के लिए प्रदान की गई उत्तेजना का एक हिस्सा होता है। दूसरे आगम (इनपुट) वह विषयवस्तु है जो सीखने वाले में सम्पादित होती हैं, षिक्षक द्वारा सम्पादन का तरीका और वे दूसरे दृश्य–श्रव्य साधन जो सीखने को प्रभावी बनाने हेतु षिक्षक द्वारा प्रयोग में लाए जाते हैं।

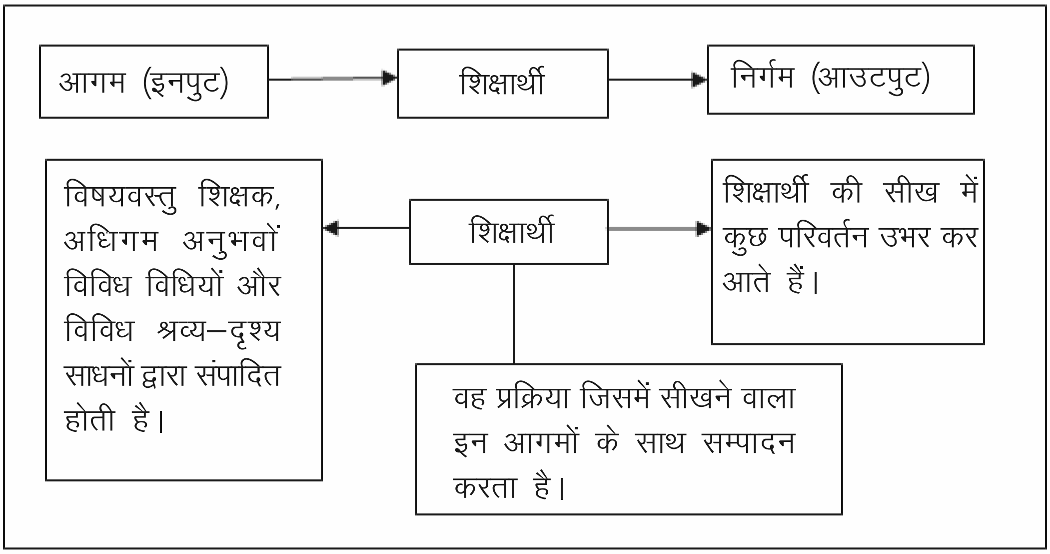

चित्र 3.1: अध्यापन–एक अंतःक्रियात्मक प्रकार्य

चित्र 13.1 यह स्पष्ट करता है कि षिक्षक और सीखने वाले में आमने–सामने पारम्परिक सम्बन्ध होता है। वास्तव में यही वह बात है जो सामान्यतः समझी जाती है कि अध्यापन एक संवादात्मक कार्य है।

बोध प्रश्न

टिप्पणीः क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें तथा अपने उत्तरों को नीचे दिए गए स्थान में लिखें।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की तुलना करें।

3) एक षिक्षक द्वारा उस समय क्या भूमिका निभाई जाती है जब वह षिक्षार्थियों को शैक्षिक भ्रमण पर ले जाता है?

....

....

....

....

....

4) अनुदेषात्मक आगम देने वाले के रूप में षिक्षक की भूमिका की व्याख्या 5–8 पंक्तियों में कीजिए।

....

....

....

....

....

....

13.6 षिक्षक–एक नियोजक (योजनाकार) के रूप में

नियोजक के रूप में षिक्षक की भूमिका दूसरी भूमिकाओं की तुलना में बिल्कुल स्पष्ट है। आप इस बात से सहमत होंगे कि षिक्षण–अधिगम हेतु एक षिक्षक को बहुत सारी बातों की योजना बनानी पड़ती है। एक षिक्षक के रूप में आपने अपने षिक्षाथियों, अपने विषय अथवा विद्यालय हेतु अनेक बातों की योजनाएँ बनाई होंगी। इस प्रकार की प्रत्येक योजना बनाते समय आप एक नियोजक के रूप में कार्य कर रहे होते हैं। क्या आपने कभी योजना के आरंभिक चरणों पर चिंतन किया है जो आपने षिक्षण–अधिगम या मूल्यांकन या किसी गतिविधि (षैक्षिक या सह–षैक्षिक) घटना के लिए किए हैं।

इस भाग में आइए हम कुछ मूल चरणों को पहचानने की कोषिष करें जो षिक्षण–अधिगम प्रक्रिया से जुड़ी प्रत्येक योजना में शामिल हैं:

- **उद्देष्यः** प्रत्येक योजना के कुछ उद्देष्य होते हैं। ये उद्देष्य किसी प्रत्यय की व्याख्या करते हैं, किसी अभ्यास पर पुनर्विचार करते हैं, किसी घटना का निरीक्षण करते हैं या जीवन कौषलों का विकास करते हैं, आदि।
- **किसके लिएः** षिक्षण–अधिगम में प्रत्येक योजना का केन्द्र बिन्दु षिक्षार्थी है। उनके लिए कोई भी योजना बनाते समय षिक्षाथियों की योग्यताओं, क्षमताओं, कमजोरियों आदि को ध्यान में रखा जाता है।
- **कबः** चाहे वह एक पाठ–योजना हो, कार्य योजना हो, या कोई आयोजन हो एक नियोजक के रूप में आपको समय को मस्तिष्क में रखना चाहिए। यह कब होगा?
- **कहाँः** कार्य के स्थान, जैसे– कक्षाकक्ष, विद्यालय वातावरण या विद्यालय से बाहर को ध्यान में रखा जाना चाहिए, जब आप स्थान और दूरी की योजना बना रहे हों।
- **कैसेः** कार्य संपादन के लिए उचित व्यूह रचना भी सहायता का महत्वपूर्ण अंग है। एक नियोजक के रूप में आपको तरीका, माध्यम, प्रक्रिया, क्रम, आदि की योजना तैयार करनी पड़ती है जो आपकी इच्छानुसार आपकी योजना को सम्पादित करने में सहायता करेगी।
- **परिणामः** एक अच्छा नियोजक सदैव इच्छित परिणामों के बारे में योजना बनाता है। फिर भी रचनात्मक यथार्थ में सीखना, परिणामों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है। एक षिक्षक होने के नाते आपको इच्छानुसार सीखने की योजना का निर्माण भी करना चाहिए, जो षिक्षार्थियों की सुविधा हेतु योजना को सही दिषा में ले जाती है। योजना में एक षिक्षक की भूमिका की बेहतर समझ के लिए आइए, इस अभ्यास को करें।

क्रियाकलाप 3

आपके द्वारा पूरी की गई एक पाठ योजना, एक इकाई परीक्षा, और वाद–विवाद प्रतियोगिता की तुलना करें। अपने द्वारा योजना में प्रत्येक के लिए अपनाए गए पदों को निम्नलिखित तालिका में देखें:

पद	पाठ योजना	इकाई परीक्षा	वाद–विवाद प्रतियोगिता
उद्देष्य			
किसके लिए			

कब			
कहाँ			
कैसे			
परिणाम			

13.7 षिक्षक–एक मददगार के रूप में

सहायता प्रदान करने का अर्थ है – उन्नति में सहायक होना, आगे बढ़कर सहायता करना और दूसरों के कार्यों को आसान बनाना। इसलिए निर्देष देने के संदर्भ में एक षिक्षक की भूमिका सीखने में वृद्धि के लिए होनी चाहिए, उसे षिक्षाथियों की सहायता करनी चाहिए ताकि वे अधिगम द्वारा अधिक से अधिक विकास कर सकें, उन्हें प्रेरक वातावरण दिया जाना चाहिए, निर्देष में आपसी संवाद, अधिगम और आगामी विकास के लिए हों। अधिगम के मददगार की भूमिका में, षिक्षार्थी की भूमिका संवादात्मक और बलपूर्वक आगे बढ़ने की है, और षिक्षक की भूमिका पृष्ठभूमि में एक पथ प्रदर्षक और मददगार की है, ठीक उसके विपरीत जैसा कि हम पहले भाग 13.5 में एक ज्ञान संप्रेषक के रूप में देख चुके हैं।

जब एक षिक्षक उस वातावरण का हिस्सा बनता है जिसमें षिक्षार्थी सीखे रहे होते हैं या निर्देषन की प्रक्रिया में भाग ले रहे होते हैं तो षिक्षक ज्ञान का संप्रेषक होता है, लेकिन जब वह षिक्षाथियों को सिखाने के उद्देष्य से आपसी संवाद और सम्बन्धित निर्देषात्मक घटकों द्वारा कुछ आवष्यक पथ प्रदर्षन कर रहा होता है तो उस समय वह अधिगम का मददगार होता है। इन दोनों स्थितियों पर दृष्टिपात करो।

i) षिक्षक घर के वातावरण की सफाई के महत्व पर व्याख्यान देता है।

ii) षिक्षक षिक्षार्थियों को गन्दे वातावरण से जुड़ी पेपर कटिंग, स्लाइड्स और वीडियो फिल्म दिखाता है, मानवीय जीवन पर पड़ने वाले उनके नकारात्मक प्रभाव को बताता है, और घरेलू वातावरण में सफाई के महत्व को दिखाते हुए षिक्षाथियों के विचार लेने के लिए एक वाद–विवाद आरंभ करता है।

और

i) षिक्षक सूर्य की रोषनी की तीव्रता में अंतर के द्वारा फूल के रंग में अनुमानित परिवर्तन की घटना पर व्याख्यान देता है।

ii) षिक्षिका सूर्य की रोषनी की तीव्रता में अंतर के कारण गुलाब के रंग में अनुमानित परिवर्तन की घटना पर परियोजना कार्य करने के लिए षिक्षार्थियों का मार्गदर्षन करती है। षिक्षिका उन्हें रंग परिवर्तन के बारे में नहीं बताती है, लेकिन दिन और रात के विभिन्न समयों पर पौधे के रंग में आने वाले स्वाभाविक परिवर्तनों को अवलोकन करने के लिए निर्देष देती है और उन्हें अभिलेखन के लिए तरीके बताती है। बाद में वह उनके अवलोकनों पर चर्चा कराती है अंत में फूल के रंग पर सूर्य की रोषनी के प्रभाव की घटना सबको समझ आ जाती है।

दोनों स्थितियों में षिक्षकों की भूमिकाएँ स्पष्ट रूप से भिन्न हैं। स्थिति संख्या 1 में दोनों षिक्षकों का अधिगम उनकी व्याख्या पर आधारित है, अथवा यह षिक्षक केन्द्रित तरीका है

जहाँ षिक्षार्थी की भूमिका नगण्य है। दूसरे शब्दों में षिक्षक एक निर्देषात्मक आगम की भूमिका निभाता है। लेकिन दोनों बार स्थिति संख्या 2 में अधिगम दृष्य और चर्चा द्वारा उत्पन्न हुए विशेष वातावरण में षिक्षार्थी द्वारा आपसी संवाद द्वारा होता है (जैसा कि पहले मामले में) अथवा चर्चा के द्वारा अनुसरण किए गए निरीक्षण एवं रिकार्ड, जो प्राकृतिक स्थिति में किए जाते हैं, के द्वारा होता है (जैसा कि दूसरी स्थिति संख्या 2 में)। आयोजित किए गए क्रम षिक्षार्थी केन्द्रित हैं जहाँ षिक्षार्थी के निरीक्षण, समझ, रिकार्ड अथवा चर्चा ही केन्द्र बिन्दु होते हैं, यह सब अधिगम प्रक्रिया में सहायता के लिए आवष्यक स्तरों पर षिक्षक के मार्गदर्षन में होता है।

अधिगम को प्रोत्साहित करने की अनेक विधियाँ होती हैं, उनमें से कुछ षिक्षार्थी केन्द्रित हैं– जैसे– पुस्तकालय कार्य, परियोजना कार्य, प्रयोग करना, गृह कार्य, आदि। जहाँ मुख्य ध्यान इस बात पर दिया जाता है कि एक षिक्षार्थी अपने अधिगम के पदों को वातावरण के विभिन्न तत्वों, जैसे– छपी हुई (मुद्रित) सामग्री, प्राकृतिक वास्तविक पदार्थों, आदि से जोड़ते हुए किस प्रकार आयोजित करता है। इस प्रकार के सभी तरीकों में षिक्षक षिक्षार्थियों का इस बात के लिए मार्गदर्षन करता है कि अधिगम प्रक्रिया में किस प्रकार आगे बढ़ा जाय, इस प्रकार षिक्षक उनके अधिगम में मददगार होता है। दूसरे शब्दों में, सभी षिक्षार्थी केन्द्रित विधियों में षिक्षक भागीदार न होकर एक मददगार होता है। यहाँ और कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं:

i) जॉन डिवी के दर्षनषास्त्र में आरंभिक पहल की संक्षिप्त चर्चा के बाद षिक्षक विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध उससे सम्बन्धित पुस्तकों की एक सूची देता है, और षिक्षार्थियों से इस विषय पर एक निबंध लिखने को कहता है।

ii) षिक्षार्थियों को षिक्षक के मार्गदर्षन में पत्तियों की बनावट के नमूने एकत्र करने, उन्हें सुरक्षित रखने और उनके चित्र बनाने और और कक्षा में उस पर चर्चा करने को कहा जाता है।

iii) षिक्षार्थियों को बर्तनों में बीज बोने, रोषनी की विभिन्न स्थितियों का निरीक्षण करने, सूर्य की रोषनी की अनुपस्थिति में कृत्रिम रोषनी के प्रभावों तक पहुँचाने के लिए कहा जाता है, उसके बाद विभिन्न स्तरों पर विकास की रिपोर्ट तैयार की जाती है और षिक्षक को निर्देषात्मक आगम (इनपुट), प्रबंधक और मददगार की भूमिका में देखा। इसके अतिरिक्त और भी अनेक भूमिकाएँ हैं जिन्हें एक षिक्षक निभाता है। इन पर हम अगले भागों में चर्चा करेंगे।

बोध प्रश्न

टिप्पणी: क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें तथा अपने उत्तरों को नीचे दिए गए स्थान में लिखें

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की तुलना करें।

5) व्याख्या कीजिए कि अधिगम में मददगार के रूप में शिक्षक की भूमिका निर्देशात्मक आगम (इनपुट) से किस प्रकार भिन्न है?

....

....

....

....

6) एक शिक्षक की भूमिका क्या होती है जबः

क) जब वह शिक्षार्थियों को परियोजना कार्य में मार्गदर्शन करता है?

....

....

....

....

....

ख) शिक्षार्थी द्वारा वाद–विवाद प्रतियोगिता के लिए तैयार किए गए व्याख्यान में सुधार करता है?

....

....

....

....

13.8 शिक्षक – एक सह–सृजक के रूप में

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF-2005) में शिक्षक को सह–सृजक के रूप में दर्शाया गया है। कभी–कभी शिक्षक को शिक्षार्थी का ज्ञान–साझीदार समझा जाता है। आइए, शिक्षक और शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया की कुछ विशेषताओं का विश्लेषण करें जहाँ शिक्षक को ज्ञान के सह–सृजक बनने की आवश्यकता पड़ती है। शिक्षक सह–सृजक हैं, यदि वेः

- शिक्षार्थियों को विविध निरीक्षणों के बारे में अपने प्रश्न स्वयं निर्मित करने के लिए प्रेरित करते हैं;
- शिक्षार्थियों को अपने तरीके से किसी स्थिति की व्याख्या करने को कहता है और शिक्षकों द्वारा प्रदान की गई मदद से समस्या का संभावित हल पहचाने के लिए कहता है;
- शिक्षार्थियों को समूह में काम करने के लिए प्रोत्साहित करता है और स्वयं भी समूह का सक्रिय सदस्य बन जाता है;
- शिक्षार्थियों को सक्रिय रखता है और उन्हें निरीक्षण करने, प्रतिक्रिया देने और लगातार चिन्तन करने के लिए प्रेरित करता है;
- चर्चाओं, वाद–विवाद, पूछताछ और प्रयोगों के द्वारा अपने पूर्व ज्ञान का प्रयोग करते हुए शिक्षार्थियों को नए ज्ञान से जुड़ने में सहायता करता है।

क्रियाकलाप 4

आप माध्यमिक स्तर पर जिस विषय को पढ़ा रहे हैं उसमें से एक प्रकरण/प्रसंग को चिन्हित कीजिए। एक ज्ञान के सह–सृजक के रूप में उस प्रकरण के लिए आप किस प्रकार कार्य करेंगे। एक स्पष्ट योजना बनाइए और इस पर कार्य कीजिए। प्रक्रिया के दौरान अपने निरीक्षणों को रजिस्टर में लिखिए।

13.9 शिक्षक – एक नेता के रूप में

जब शिक्षक के साथ एक नेता की धारणा जोड़ी जाती है तो प्रायः उसका अर्थ शिक्षक संघ में नेतृत्व से लिया जाता है। शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में यह इतना सूक्ष्मदर्शी विचार नहीं है। परिभाषा द्वारा **"नेतृत्व समूह को आगे बढ़ाने, दिए गए कार्य को पूरा करने की प्रेरणा देने और कार्य की जिम्मेदारी और गुणवत्ता में भागीदारी की योग्यता है।"** जब आप इसे शिक्षक के संदर्भ में लागू करते हैं, आप कह सकते हैं, "एक नेता के रूप में शिक्षक बेहतर शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के लिए शिक्षार्थियों को कक्षा में या शिक्षार्थियों को समूह में रास्ता दिखाता है, कार्य में भागीदारी करके, उस कार्य को पूरा करने के लिए प्रेरित करते हुए, जिम्मेदारियों में भाग लेते हुए, सफलता और असफलता के साथ। (............)।" इसका अर्थ है कि शिक्षक को नेता के रूप में विविध भूमिकाएँ निभानी पड़ती हैं जिन्हें दो भागों में विभाजित किया जा सकता हैः

क) कक्षाकक्ष में नेतृत्व

ख) विद्यालय में नेतृत्व भूमिकाएँ

जब हम कक्षाकक्ष में नेतृत्व के बारे में बात करते हैं, तो इसका अर्थ होता है कि शिक्षक को कक्षा का नेतृत्व या तो किसी कार्य को पूरा करने के लिए करना पड़ता है या कभी–कभी कक्षा में सकारात्मक और प्रभावी सम्बंध विकसित करने और उन्हें बनाए रखने के लिए करना पड़ता है। वहीं जब हम विद्यालय में शिक्षकों की नेतृत्व सम्बन्धी भूमिकाओं की बात सोचते हैं, हम सामान्यतः विद्यालय की विविध समितियों में उसकी भूमिका की बात करते हैं, विविध कार्यक्रमों को आयोजित करने की जिम्मेदारियों की बात करते हैं, पाठ्य सहगामी गतिविधियों के साथ–साथ अपने साथी शिक्षकों के वृत्तिक विकास हेतु गतिविधियों की बात करते हैं। इस भूमिका में एक शिक्षक से यह आशा की जाती है कि उसका वृत्तिक उद्देश्य विद्यालय की कल्पना और उद्देश्य के समरूप हो। शिक्षक को विद्यालय में प्रबंध समिति के साथ मिलकर विद्यालय की सफलता और बेहतरी के लिए विविध जिम्मेदारियों में भाग लेना चाहिए।

क्रियाकलाप 5

आपने अपने विद्यालय में कुछ शिक्षकों को देखा होगा जो सदैव विद्यालय की जिम्मेदारियों में भाग लेने के लिए तैयार रहते हैं या विविध कार्यों के आयोजन में उत्प्रेरक की भूमिका निभाते हैं। ऐसे किसी एक शिक्षक की पहचान कीजिए और कार्य से पहले, कार्य के समय और कार्य के बाद उसके व्यवहार का निरीक्षण कीजिए और उसके गुण या विशेषताएँ सूचीबद्ध कीजिए जो उसे एक नेता बना रहे हैं।

आपकी सूची में कुछ निम्नलिखित गुण हो सकते हैं जो शिक्षक नेताओं में सामान्य हैंः

विश्वास पैदा करनाः एक शिक्षक नेता सदैव दूसरों पर विश्वास रखने में भरोसा करता है साथ ही ऐसा वातावरण तैयार करता है जहाँ लोग उस पर विश्वास कर सकें। एक समूह का नेतृत्व करने के लिए एक व्यक्ति को अपने साथ काम करने वाले व्यक्तियों के बीच सम्बन्ध विकसित करने की आवश्यकता होती है। एक नेता के लिए यह एक आवश्यक गुण है जिसके बिना जिम्मेदारियों में सहभागी होना संभव नहीं है।

संस्थानिक परिस्थितियों को पहचाननाः एक अच्छा शिक्षक नेता संस्थानिक परिस्थितियों के प्रति पूरी तरह जागरूक भी होता है। वह प्रयोग के तौर पर कार्य के वातावरण, कार्य की स्वतंत्रता और विद्यालय/संस्था की प्रबंध समिति की इच्छा को भी इसमें सम्मिलित

करता है। वह किसी कार्य के लिए योजना बनाने या सुझाव देने से पहले स्थिति की पहचान करता है, साथ ही अपनी भूमिका के लिए क्षेत्र का विश्लेषण करता है।

प्रक्रिया के साथ व्यवहारः आपने देखा होगा कि किसी भी गतिविधि को आयोजित करते समय एक नेता को कुछ जरूरी प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है। कभी–कभी ये आंतरिक भी हो सकते हैं जैसे अनुशासन समूह या प्रबंध समिति या वित्तीय समिति से अनुमोदन प्राप्त करना। कभी–कभी बाहरी संस्थाओं या सरकारी संस्थाओं से जुड़ी विविध प्रक्रियाएँ हो सकती हैं। एक शिक्षक नेता सदैव इन प्रक्रियाओं को पहचानता है और इस प्रकार की सभी प्रक्रियाओं से निपटने के लिए तैयार रहता है।

कार्य प्रबंधनः नेतृत्व आपसे जुड़े हुए अनेक व्यक्तियों की गतिशीलता में समाहित है जो आपके शिक्षार्थी या सहकर्मी हो सकते हैं। एक अच्छा शिक्षक नेता सदैव जानता है कि कार्य में भागीदारी कैसे की जाए, सार्वजनिक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सभी को कैसे प्रेरित किया जाए और एक दल (टीम) का निर्माण कैसे किया जाए?

इसके अतिरिक्त आपकी सूची में अन्य दूसरे गुण या विशेषताएँ हो सकती हैं जो आपने चिन्हित की हैं। उन सब पर विस्तारपूर्वक कार्य करना आपको कक्षाकक्ष के अंदर और बाहर एक शिक्षक नेता के रूप में बदलने में आपकी सहायता करेगा।

बोध प्रश्न

टिप्पणीः क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें तथा अपने उत्तरों को नीचे दिए गए स्थान में लिखें।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की तुलना करें।

7) विद्यालय में एक शिक्षक की नेतृत्वपूर्ण भूमिका को सूचीबद्ध कीजिए।

....

....

....

....

....

....

13.10 शिक्षक – एक प्रबंधक के रूप में

एक प्रबंधक किसी भी संगठन के लिए मूलतः एक पतवार होता है। उसे निर्णय लेने होते हैं, स्थिति पर नियंत्रण रखना पड़ता है, परिस्थिति के अनुसार संगठन की कार्यशैली को बेहतर बनाने हेतु निर्णयों को बदलने हेतु स्वैच्छिक और साधनपूर्ण बनना पड़ता है। हम सभी किसी कम्पनी, विद्यालय अथवा महाविद्यालय आदि के प्रबंधन से परिचित हैं। आइए, अपने प्रबंधकीय योग्य ज्ञान का प्रयोग अनुदेशन के मामले में करें और देखें कि एक शिक्षक प्रबंधक की भूमिका कैसे निभाता है?

दूसरी संस्थाओं में नियुक्त अधिकारियों की भाँति शिक्षकों से यह आशा की जाती है कि वे शिक्षार्थियों को नेतृत्व प्रदान करें और विविध गतिविधियों में उन्हें सहयोग प्रदान करें क्योंकि

वे और शिक्षार्थी स्वतंत्र रूप से विद्यालय के शैक्षणिक और सामाजिक लक्ष्यों को संगतिपूर्वक पाने के लिए कार्य करते हैं। एक प्रबंधक के रूप में शिक्षक की भूमिका शिक्षण के तीन चरणों से जुड़ी है, शिक्षण–पूर्व, शिक्षण के समय और शिक्षण के बाद।

13.10.1 पूर्व शिक्षण चरण में शिक्षक की भूमिका

शिक्षण पूर्व के चरण में शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया योजना की गतिविधियाँ सम्मिलित हैं। वास्तव में योजना बनाना किसी जटिल प्रक्रिया को आसान बनाना है। शिक्षण पूर्व के चरण में निम्नलिखित विशेष गतिविधियाँ जुड़ी हैंः

i) विषयवस्तु का विश्लेषण करना;

ii) अनुदेशन के लिए विषयवस्तु के भाग को चुनने हेतु निर्णय लेना;

iii) ज्ञान के आधार पर चुनी गई विषयवस्तु के लिए अनुदेशात्मक उद्देश्यों पर निम्नलिखित के बारे में निर्णय लेना :

   क) शिक्षार्थी का स्तर

   ख) उनका सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ

   ग) समय की उपलब्धता

iv) विविध अधिगम अनुभवों की परीक्षा लेना जो निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए यथायोग्य (उचित) हैं।

v) अधिगम अनुभवों के भंडार में से सबसे अच्छे विकल्प पर निर्णय करना और पूर्व–विशिष्ट अधिगम को लाने के लिए सबसे अच्छे क्रम को तय करना। उदाहरण के लिए, एक व्याख्यान जिसका अनुसरण चर्चा द्वारा किया गया हो, जिसका अनुसरण कुछ दृश्य साधनों को दिखाकर किया गया हो, जिसका अनुसरण पुनः चर्चा द्वारा किया गया हो, आदि।

vi) अधिगम की जाँच के लिए तरीके को तय करना (एक लिखित परीक्षा, मौखिक परीक्षा, एक प्रदर्शनात्मक परीक्षा और जाँच का विशेष विषय) (मौखिक लिखित परीक्षा के मामले में प्रश्न प्रदर्शनात्मक परीक्षा के मामले में भावों का निरीक्षण एवं मूल्यांकन किया जाए)।

उपर्युक्त सभी गतिविधियों में शिक्षक निर्देशात्मक प्रक्रिया में भाग नहीं ले रहा है। वह एक बाहरी व्यक्ति है और एक निर्णायक और मार्ग–निर्माता है। अनुदेशन की प्रक्रिया आयोजित करनी पड़ती है। इन सभी स्थितियों में शिक्षक की भूमिका निश्चिततः एक प्रबंधक की कही जाती है, एक इनपुट की नहीं, यद्यपि प्रबंधन विविध गतिविधियों को प्रभावी रूप से लागू करने में एक महत्वपूर्ण इनपुट है।

13.10.2 शिक्षण वाले चरण में शिक्षक की भूमिका

इससे पूर्व के उपभाग में हम देख चुके हैं कि शिक्षक किस प्रकार शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का एक हिस्सा बनता है और एक अनुदेशात्मक इनपुट के रूप में जाना जाता है। नीचे दिए गए अनुच्छेदों में आप देखेंगे कि किस प्रकार एक शिक्षक अनुदेशात्मक/शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के दौरान एक प्रबंधक की भूमिका निभाता है। निम्नलिखित परिस्थितियों की जाँच करेंः

i) यह अनुभव करते हुए कि शिक्षार्थी ऊब गए हैं, एक शिक्षक शिक्षण कार्य बंद करने का निर्णय लेता है।

ii) यह अनुभव करते हुए कि एक शिक्षार्थी एक बिन्दु को पूरी तरह से नहीं समझ पाया है, एक शिक्षक बहुत से उदाहरणों द्वारा अपनी व्याख्या को सरल करने का निर्णय लेता है।

iii) किसी पाठ को और अधिक रूचिकर बनाने हेतु, एक शिक्षिका उससे जुड़ी एक कहानी सुनाने का निर्णय लेती है।

iv) क्योंकि शिक्षार्थी बहुत अधिक शोर मचाना शुरु कर देते हैं और शिक्षिका द्वारा संभाले नहीं जा सकते, वह उन्हें बाहर जाने और खेलने देने का निर्णय लेती है।

v) क्योंकि तैयार की गई पाठ योजना शिक्षार्थियों को किसी विषय बिन्दु को समझने में प्रभावी सिद्ध नहीं हुई, एक शिक्षक पाठ योजना से हटने का निर्णय लेता है और अधिगम अनुभवों के दूसरे क्रम अपनाने की कोशिश करता है।

इन सभी स्थितियों में एक शिक्षक अनुदेशात्मक पद्धति का हिस्सा है, लेकिन भाग नहीं ले रहा है, और न ही अनुदेशात्मक इनपुट है। हालाँकि वह उद्देश्यों को प्रभावी बनाने हेतु प्रक्रिया के बीच में तुरंत निर्णय लेता है। दूसरे शब्दों में अर्थपूर्ण अधिगम के लिए एक शिक्षक, शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार अपने साधनों और स्वेच्छा से कार्य करने के तरीके को बदल सकता है।

इन स्थितियों में शिक्षक एक रूपकार, प्रबंधक, निर्णायक का कार्य कर रहा है। वास्तव में, वह एक गतिशील अवस्था में होता है या भागीदार की भूमिका से निर्णायक का अलग तरीका अपनाते हुए अनुदेशात्मक इनपुट की भूमिका में चला जाता है।

यह स्थान परिवर्तन चित्र 13.2 द्वारा स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है:

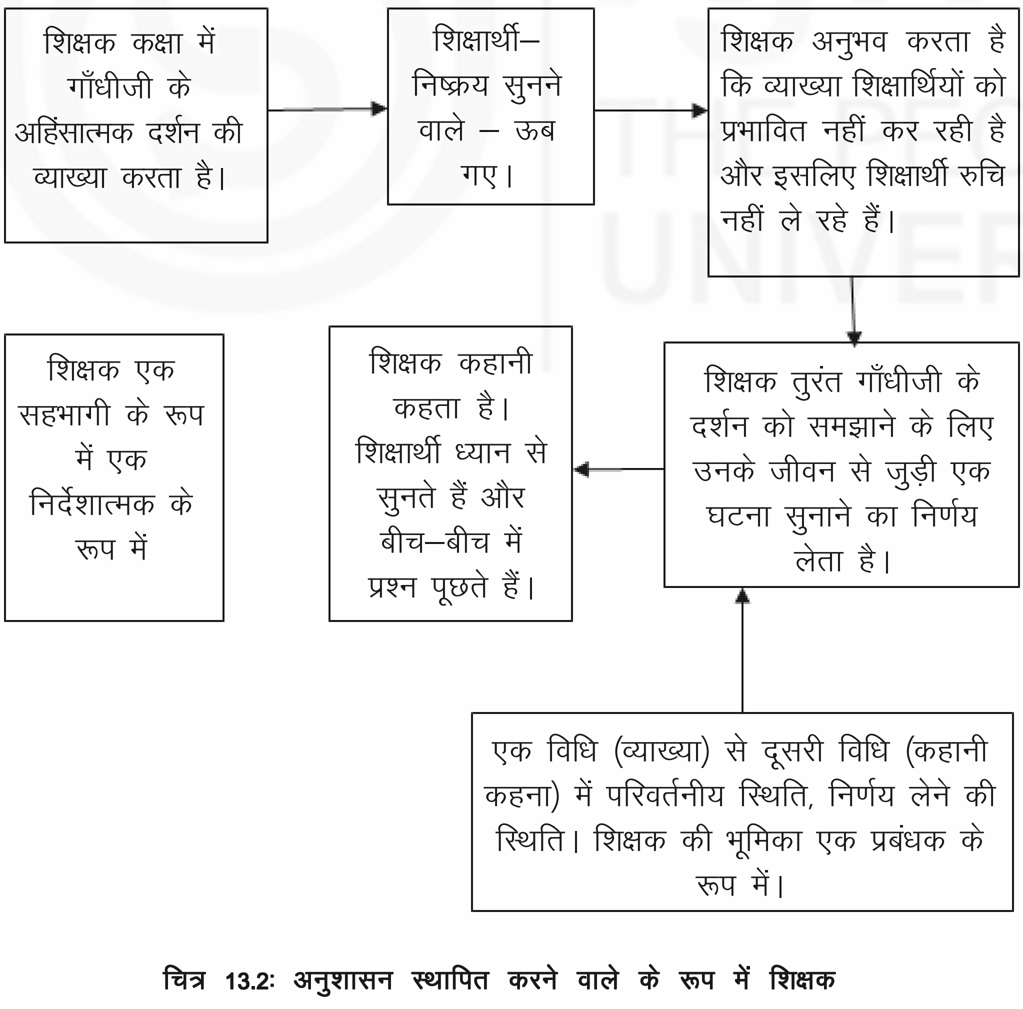

चित्र 13.2: अनुशासन स्थापित करने वाले के रूप में शिक्षक

आप सब लोगों द्वारा कहे गए इस कथन से परिचित हैं, "वह कक्षा को बहुत अच्छे तरीके से संभाल लेती है" अथवा "शिक्षार्थी उसकी कक्षा में पूरी तरह अनुशासित होते हैं। इन स्थितियों में यह स्पष्ट है कि एक शिक्षक शिक्षार्थियों के कक्षा में प्रवेश करते समय उत्पन्न समस्याओं से वैकल्पिक हलों के साथ निपटता हुआ शिक्षार्थियों को प्रभावी तरीके से संभालता है। ये वैकल्पिक हल विविध कारणों पर निर्भर करते हैं जैसे– शिक्षार्थियों का आयु समूह, समूह की शारीरिक योग्यता (यदि वे शारीरिक शिक्षा के कालांश के बाद शारीरिक थकान के कारण कक्षा में रूचि नहीं ले रहे हैं।) विद्यालय की सामान्य वातावरण (आबो–हवा) (यदि वार्षिक दिवस पास आ रहा है, या मजेदार मेला होने वाला है और शिक्षार्थी मजा लेने की स्थिति में हैं) आदि। एक प्रभावी शिक्षक अपना नियंत्रण खोए बिना अनुशासन स्थापित करने और शिक्षार्थियों को संभालने में सफल होगा और उसी समय शिक्षार्थियों का विश्वास भी प्राप्त करेगा। इन स्थितियों में एक प्रभावी प्रबंधक बनने के लिए बच्चे/किशोर के मनोवैज्ञानिक ज्ञान की अच्छी जानकारी होनी आवश्यक है। एक शिक्षक को प्रबल, चतुर, शांत और सहनशील होना चाहिए।

13.10.3 शिक्षणअनुवर्ती चरण में शिक्षक की भूमिका

जैसा कि इस भाग की प्रस्तावना में कहा गया है कि शिक्षणअनुवर्ती चरण में शिक्षक की वे गतिविधियाँ शामिल हैं जिनके द्वारा शिक्षार्थियों के अधिगम को निश्चित करने के लिए ली गई परीक्षा के परिणाम का वह विश्लेषण करता है, विशेष क्षेत्रों के ज्ञान में आने वाली समस्याओं को दूर करता है, किसी एक के शिक्षण पर प्रकाश डालता है और अगले अनुदेशात्मक कालांश में उसमें आवश्यक परिवर्तनों का निर्णय लेता है। एक शिक्षक की निम्नलिखित गतिविधियों की पड़ताल कीजिएः

i) शिक्षक कक्षा VII के शिक्षार्थियों के लिखित प्रदर्शन का विश्लेषण करता है और महसूस करता है कि कक्षा VII के 80 प्रतिशत शिक्षार्थी एक अंक की गुणा को ठीक प्रकार से करने के योग्य नहीं हैं।

ii) शिक्षक गुणा पर बनाई गई पाठ योजना को गौर से देखता है और महसूस करता है कि शिक्षार्थी को योग का ज्ञान होगा, यह अनुमानित तो किया गया था परंतु उसे दोहराया नहीं गया था।

iii) यह महसूस करते हुए कि गुणा योग के सीखे बिना नहीं सीखी जा सकती है, शिक्षक पुनः योग से ही प्रारंभ करने का निर्णय लेता है।

इन तीनों स्थितियों में शिक्षक शिक्षणअनुवर्ती चरण में एक संरचना बनाने वाला है, अर्थात् अगले अनुदेश पाठ की संरचना बनाने वाला है।

सारांश के रूप में हम कह सकते हैं कि शिक्षणअनुवर्ती चरण में एक शिक्षक परिणामों का विश्लेषण करता है, स्वयं का चिन्तन करता है और शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को सुधारता है, जो एक शिक्षक के प्रभावी होने के उद्देश्य को पूरा करती है।

विभिन्न स्तरों पर प्रबंधक के रूप में शिक्षक की भूमिका को स्पष्ट करने में चित्र 13.3 हमारी सहायता करेगाः

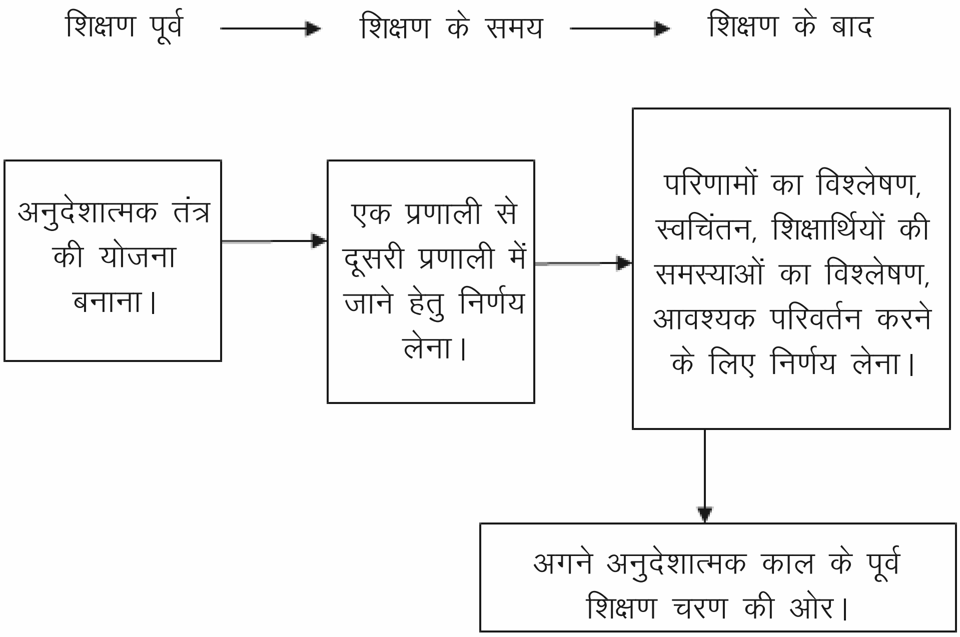

चित्र 13.3: शिक्षण के विविध चरणों पर एक प्रबंधक के रूप में शिक्षक

बोध प्रश्न

टिप्पणी: क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें तथा अपने उत्तरों को नीचे दिए गए स्थान में लिखें।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की तुलना करें।

8) एक शिक्षक की भूमिका क्या होती है जब:

क) वह किसी संदेह को स्पष्ट करने के लिए श्यामपट्ट पर एक चित्र का निर्माण करता है।

....

....

....

....

ख) वह प्रश्नपत्रों का निर्माण करता है।

....

....

....

....

ग) वह किसी पाठ को अपने शिक्षार्थियों के लिए अधिक रूचिकर बनाने के लिए विविध तरीकों से दोहराने का निर्णय लेता है।

....

....

....

13.11 शिक्षक – एक परामर्शदाता के रूप में

परामर्शदाता के रूप में शिक्षक की भूमिका अब तक वर्णित की गई सभी भूमिकाओं से बिल्कुल अलग है। शब्दकोश के अनुसार परामर्श देने का अर्थ सलाह देना है, यद्यपि यह सलाह देने से कहीं ज्यादा है।

एक विद्यालय के संदर्भ में, शिक्षक एक परामर्शदाता है और शिक्षार्थी या तो शिक्षक से तब संपर्क करता है जब उसे कोई समस्या होती है जिसे वह स्वयं हल नहीं कर सकता या शिक्षक समस्या की अनुभूति करता है और शिक्षार्थी को समस्या हल करने में सहायता प्रदान करता है। एक परामर्शदाता के रूप में शिक्षक केवल विद्यालय अध्ययन से जुड़ी समस्याओं को ही संबोधित नहीं करता बल्कि मित्रों, परिवार, स्वास्थ्य, आदि से जुड़ी समस्याओं पर भी मदद करता है।

एक प्रभावी परामर्शदाता बनने के लिए एक शिक्षक का सबसे महत्वपूर्ण गुण यह है कि उसमें समस्यायुक्त शिक्षार्थियों को पहचानने के लिए संवेदनशीलता है। इसका कारण यह है कि विद्यालय तंत्र में शिक्षार्थी अपनी समस्याओं के लिए सहायता लेने हेतु कम ही संपर्क करते हैं, क्योंकि वे समस्याओं को दूसरों को बताने के बारे में शंकालु होते हैं। यह केवल गंभीर प्रयास से ही संभव है कि एक संवेदनशील शिक्षक समस्याओं से घिरे शिक्षार्थी की पहचान के बाद उसके साथ संपर्क कर रहा हो। समस्या की प्रकृति को जानने के बाद एक शिक्षक की भूमिका यह है कि वह उस समस्या को हल करने में शिक्षार्थी को उसकी सामर्थ्य को जानने में सहायता करें। परामर्श इस सिद्धान्त पर कार्य करता है कि यदि किसी को सही तरीके से मार्गदर्शन दिया जाता है तो वह अपनी समस्याओं को हल करने के लिए अपनी शक्ति को समझ सकता है। इस प्रकार एक शिक्षक सदैव हल प्रदान नहीं करता है। वह इतना कर सकता है कि समस्या हल करने के लिए विभिन्न मार्गों को स्पष्ट करें और समस्या के हल करने की प्रक्रिया में शिक्षार्थी चल पड़े। निम्नलिखित स्थितियों पड़ताल कीजिए:

क) एक संवेदनशील शिक्षिका देखती है कि एक शिक्षार्थी अधिकांश कक्षाओं में असावधान और दुखी रहती है। वह शिक्षार्थी को अकेले में बुलाती है और उससे बातचीत करती है, समस्या का पता चलता है, शिक्षार्थी की दादी जिसे वह प्यार करती थी, उसकी मृत्यु हो गई है और इसी से उसके जीवन में बड़े परिवर्तन आ गए हैं। शिक्षिक उसके साथ तदानुभूति बनाती है और बहुत ही वास्तविक तरीकों से उसके साथ जीवन और मृत्यु के बारे में बात करती है और तब उसे अनेक तरीके सुझाती है ताकि वह (शिक्षार्थी) घर पर अपने आपको उनमें लगाए रखें। शिक्षिक उसे इस बात पर सोचने में सहायता करती है कि अपने किसी प्रिय से बिछुड़ने की कठिन वास्तविकता क्या है और उससे कैसे बाहर निकला जा सकता है, हालाँकि यह बहुत कष्टदायक है। ऐसे अनेक सत्रों के बाद शिक्षार्थी एक संतुष्ट व्यक्ति के रूप में उभर कर आता है, उसकी उदासी दूर हो जाती है और वह कक्षा में सावधान और चुस्त रहना प्रारंभ कर देता है।

ख) एक शिक्षार्थी शीला, जो शिक्षक के मतानुसार एक उज्जवल और कठिन परिश्रमी शिक्षार्थी है, अपनी परीक्षाओं में वह अच्छा प्रदर्शन नहीं कर रही है। शिक्षक महसूस करता है कि कुछ समस्या है और उसके साथ खुला वार्तालाप करता है। कुछ समय बीतने के बाद शिक्षक परीक्षाओं के लिए शीला की अति व्याकुलता की समस्या को समझ लेता है कि वह परीक्षा आरंभ होने से पहले ठीक से सो नहीं पाई थी इसलिए परीक्षाओं में अच्छा प्रदर्शन करने में असमर्थ रही। शिक्षक सामान्य कार्यों को अच्छा

करने के लिए मानसिक स्वास्थ्य के महत्व से बातचीत प्रारंभ करता है, और विशेष रूप से यह बताता है कि परीक्षा में अच्छे प्रदर्शन के लिए कितने घंटों की नींद आवश्यक है। तब वह परीक्षा के दिनों में तनावरहित रहने के विभिन्न तरीकों पर बात करता है जो परीक्षाओं में अच्छे प्रदर्शन के लिए आवश्यक है। इन सबके अतिरिक्त शिक्षक शीला में मौजूद योग्यताओं का वर्णन करते हुए उसके साहस को बढ़ाता है जिनका प्रयोग करते हुए वह एक सफल व्यक्ति के रूप में उभर कर आ सकती है।

यह स्पष्ट है कि उपर्युक्त स्थितियों में शिक्षक में कुछ ऐसे गुण हैं जो उसे एक प्रभावी परामर्शदाता बनाते हैं। वे गुण निम्नलिखित हैं:

- एक प्रखर कर्त्तव्यनिष्ठ होना
- संवेदनशील होना
- तदानुभूतिपूर्ण होना (शिक्षार्थी से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी समस्याओं को देखने योग्य होना)
- वस्तुनिष्ठ (उद्देश्यपूर्ण) होना

और इन सबके अतिरिक्त एक शिक्षक को अपने शिक्षार्थियों का विश्वास जीतने के लिए प्यार करने वाला और मित्र होना चाहिए जिससे वे उसके सामने खुल सकें, यह भी उसका एक गुण है।

13.12 सारांश

इस इकाई में हमने शिक्षक की एक व्यक्ति के रूप में चर्चा की जहाँ मुख्य ध्यान शिक्षक के कार्यस्थल, कक्षा और समुदाय था, उसकी सहकर्मी और साथ ही देश के नागरिक की भूमिका पर भी था। यह सिद्ध हो गया कि शिक्षक शिक्षार्थियों के लिए एक मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक है। शिक्षक के व्यक्तिगण गुण जैसे– स्नेह, तदानुभूति, शिक्षार्थियों और अपने व्यवसाय में रूचि और साथ ही वचनबद्धता, शिक्षक के रूप में उसे सफल बनाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इकाई में शिक्षक की भूमिका को योजना बनाने वाले के साथ–साथ ज्ञान के संप्रेषक के रूप में भी बताया गया है। रचनात्मकता ने शिक्षक की भूमिका को एक मददगार और ज्ञान के सह–सृजक के रूप में प्रस्तावित किया है, इन दिशाओं में भी इस इकाई में चर्चा की गई थी। एक नेता होने के नाते शिक्षक को विश्वसनीय, संस्था की परिस्थितियों को जानने वाला होना चाहिए। प्रक्रियाओं और कार्य प्रबंध कौशलों के साथ व्यवहार करने वाला होना चाहिए। एक प्रबंधक के रूप में शिक्षक की भूमिका शिक्षणपूर्व, शिक्षण के समय और शिक्षणअनुवर्ती प्रत्येक चरण में बहुत महत्वपूर्ण है। इकाई में इस बात पर भी प्रकाश ड़ाला गया है कि शिक्षक को अपने शिक्षार्थियों की अनेक दैनिक समस्याओं को हल करने के लिए एक परामर्शदाता की भूमिका भी निभानी पड़ती है।

13.13 इकाई के अंत में अभ्यास

1) एक सामुदायिक सदस्य होने के रूप में शिक्षक की भूमिका उसके शिक्षण–अधिगम को किस प्रकार प्रभावित करती है? व्याख्या कीजिए।

2) अपने विद्यालय में अभिभावकों के साथ एक चर्चा का आयोजन कीजिए और शिक्षकों के व्यक्तित्व से जुड़ी विशेषताओं की पहचान कीजिए जो अभिभावकों की राय में शिक्षार्थियों को प्रभावित कर रही हैं।

3) शिक्षार्थियों के लिए एक क्षेत्र भ्रमण की योजना बनाने में योजनाकार के रूप में एक शिक्षक की भूमिका पर चर्चा कीजिए।

4) क्या आप सोचते हैं कि रचनात्मकता ने शिक्षक की भूमिका को प्रभावित किया है? विस्तार से चर्चा कीजिए।

13.14 बोध प्रश्नों के उत्तर

1) अपने अनुभव या सहकर्मियों के साथ बातचीत के आधार पर गुणों को सूचीबद्ध कीजिए।

2) भाग 13.4 के अध्ययन के आधार पर उत्तर दीजिए।

3) शिक्षक को योजनाकार, प्रबंधक, मददगार और मार्गदर्शक की भूमिका निभानी पड़ती है।

4) अपने स्वयं के शब्दो में व्याख्या कीजिए।

5) अपने स्वयं के शब्दो में व्याख्या कीजिए।

6) अपने स्वयं के शब्दो में व्याख्या कीजिए।

7) एक शिक्षक को अपने सहकर्मियों और प्रबंधन समिति में विश्वास स्थापित करने के लिए, शैक्षणिक दशाओं और भविष्यवाणियों के विश्लेषण के लिए, विविध कार्यालयी/सामाजिक/ शैक्षणिक प्रक्रियाओं के व्यवहार करने के लिए और कार्य दबाव तथा कार्य भार के प्रबंधन के लिए, नेतृत्व की भूमिका निभानी पड़ती है।

8) भाग 13.4 के अध्ययन के आधार पर उत्तर दीजिए।

13.15 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पठन सामग्री

- अचूयोनी, के.ए. एवं अजोकू. एल.आई. (2003), फाउण्डेशन्स ऑफ करीकुलमः डेवलपमेंट एंड इम्प्लीमेंटेशन, पोर्ट हारकोर्ट : पर्ल पब्लिशर्स
- अवोतुआ–इफीबो, ई.बी. (1999). इफैक्टिव टीचिंग : प्रिसिपल्स एंड प्रैक्टिस : पैराग्राफिक्स
- ब्रुकफील्ड, एस. (1990). द स्किलफुल टीचर : सेनफ्रांसिसको : जोसी–बास
- इग्नू (2012). अध्यापक का व्यक्तित्व (इकाई 5). शिक्षकः भूमिका एवं विकास (खंड 2) ई.एस.335ः अध्यापक एवं विद्यालय : शिक्षाविद्यापीठ
- इग्नू (2012). अध्यापक की भूमिका (इकाई 6). शिक्षकः भूमिका एवं विकास (खंड 2) ई. एस.335ः अध्यापक एवं विद्यालय : शिक्षाविद्यापीठ
- जॉनसन डी. डब्ल्यू. एवं जॉनसन आर.टी. (1991). लर्निंग टूगेदर एंड अलोन. एंगलबुड क्लिफ्स एन.जे.: प्रिटिंस हॉल
- पोरटर. ए. (1986). टीचर कोलेबोरेशन : न्यू पार्टनरशिप टू अट्रैक्ट ओल्ड प्राबलम्स. फाई डेल्टा कप्पा. 69(2), 147–152

इकाई 14 नवाचारी और क्रियात्मक शोधकर्त्ता के रूप में षिक्षक

इकाई की रूपरेखा

14.1 प्रस्तावना

14.2 उद्देष्य

14.3 नवाचार : आवष्यकता एवं प्रत्यय

- 14.3.1 नवाचार क्या है?
- 14.3.2 नवाचार के प्रकार
- 14.3.3 नवाचार की प्रक्रिया

14.4 एक क्रियात्मक शोधकर्त्ता के रूप में शिक्षक

- 14.4.1 क्रियात्मक शोध क्या है?
- 14.4.2 क्रियात्मक शोध के उपागम

14.5 क्रियात्मक शोध के लिए पूर्व दषाएँ

14.6 क्रियात्मक शोध में गुणवत्ता सम्बंधी मुद्दे

14.7 क्रियात्मक शोध के पद

14.8 क्रियात्मक शोध के प्रतिवेदन (रिपोर्ट) का प्रारूप

14.9 सारांष

14.10 इकाई के अंत में अभ्यास

14.11 बोध प्रष्नों के उत्तर

14.12 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पठन सामग्री

14.1 प्रस्तावना

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने अपनी पुस्तक *"इन्डामिटेबल स्प्रिट"* में अपने प्रथम षिक्षक श्री षिव सुब्रामण्यम अय्यर को उनकी नवीन षिक्षण विधियों विशेषतः पक्षी कैसे उड़ते हैं के षिक्षण की विधि के कारण उनको याद करना पसंद किया। श्री अय्यर ने यह रामेष्वरम् के समुद्र तट पर पक्षियों के उड़ने के प्रदर्षन द्वारा सिखाया। इसने गाँव के छोटे बच्चे के जीवन में उल्लेखनीय परिवर्तन किया। डॉ. कलाम लिखते हैंः

"For me it was not merely an understanding of how a bird files. The lesson of the bird's flight created a speical feeling in me and I thought to myself what my future course of study would have to be with reference to flying and flight system. Sir Iyer's teaching and the event I witnessed helped me to decide my future career". (*Indomitable Spirit*, p.26).

मेरे लिए यह मात्र यह समझना नहीं था कि एक चिड़िया कैसे उड़ती है। चिड़िया के उड़ने के पाठ ने मुझमें एक विशेष अनुभव उत्पन्न किया और मैंने स्वयं सोचा कि क्या मेरा भविष्य का अध्ययन क्षेत्र उड़ना एवं उड़ान तंत्र होना चाहिए। सर अय्यर की शिक्षा और जो घटना मैने देखी, उसने मुझे मेरा भविष्य निर्धारित करने में मदद की।

(इन्डामिटेवल स्प्रिट; पृष्ठ 26)

श्री. अय्यर ने एक छोटे लड़के में भविष्य के वैज्ञानिक के बीज बोए जो बाद में भारत के "मिसाइल मैन" के रूप में प्रसिद्ध हुआ। वे ऐसा अपने षिक्षण में नवाचारी/नवीन युक्तियों को अपनाने के कारण कर पाए जिसके कारण उनके षिक्षार्थियों के जीवन में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ।

नवाचार क्या है? क्या यह आवष्यक है कि नवाचार कहलाने के लिए कुछ नया निर्मित किया जाए? आप जानते हैं कि षिक्षकों को परिवर्तन के कारक, नवाचारी और शोधकर्त्ता के रूप में कार्य करना पड़ता है। क्या ये सभी भूमिकाएँ सम्बन्धित हैं? ये प्रष्न उभरते शैक्षिक परिदृष्य में जहाँ षिक्षकों से अधिगम को सहज बनाने और षिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में षिक्षार्थी के वास्तविक जीवन के अनुभवों और सामाजिक संदर्भों में सामंजस्य की अपेक्षा की जाती है, और भी महत्वपूर्ण हो जाते हैं। प्रस्तुत इकाई के अध्ययन द्वारा आप इन सभी प्रष्नों के उत्तर प्राप्त कर सकेंगे। इस इकाई में हम षिक्षक की एक नवाचारी के साथ–साथ क्रियात्मक शोधकर्त्ता के रूप में भूमिका पर ध्यान केन्द्रित करेंगे।

14.2 उद्देष्य

इस इकाई के अध्ययन के पष्चात् आप :

- नवाचार के प्रत्यय की व्याख्या और षिक्षा में इसकी आवष्यकता के बारे में बता सकेंगे;
- क्रियात्मक शोधकर्त्ता के रूप में षिक्षक की भूमिका का वर्णन कर सकेंगे;
- क्रियात्मक शोध के पदों की व्याख्या कर सकेंगे; और
- षिक्षार्थियों की सुगमता के लिए क्रियात्मक शोध का प्रारूप निर्माण और क्रियान्वयन कर सकेंगे।

14.3 नवाचार : आवष्यकता एवं प्रत्यय*

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। मानव की विकास यात्रा में पुरानी व्यवस्था का स्थान नई व्यवस्था लेती रहती है। पुरानी संस्कृति, सिद्धान्तों, विचारों और तकनीकियों का स्थान नई संस्कृति, सिद्धान्त, विचार और तकनीकियाँ ले लेती हैं। ऐसी व्यवस्था और संगठन, जो परिवर्तित नहीं होते अथवा परिवर्तन की आवष्यकता अनुभव नहीं करते, उनका विकास अवरूद्ध, पतन और अन्ततः विनाष हो जाता है। लक्ष्यों, संरचना और किसी प्रणाली/व्यवस्था की प्रक्रिया में सम–सामयिक परिवर्तन आते रहते हैं। यही बात शैक्षिक प्रणाली के विषय में भी सत्य है।

बिना योजना बनाए भी अंजाने में ही जब कुछ परिवर्तन बहुत लम्बे समय के लिए हो जाते हें, तो कुछ परिवर्तनों के लिए विचारपूर्वक योजना बनाई जाती है।

ये परिवर्तन कम समयावधि में भी घटित हो सकते हैं। दूसरे प्रकार के परिवर्तनों के सिद्धान्त और उपागम विचारकों, आयोजकों, प्रषासकों और व्यवसायियों द्वारा बनाए जाते हैं। ये किसी प्रणाली में सुधार हेतु परिवर्तन की आवष्यकता पर आधारित होते हैं। उनकी आवष्यकता सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों अथवा अधिगम के सिद्धान्तों और परिप्रेक्ष्य के कारण अनुभव की जाती है।

षिक्षण–अधिगम के परिप्रेक्ष्य में ऐसा परिवर्तन राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF) 2005 और ''षिक्षा के अधिकार अधिनियम'', (RTE Act, 2009), जो कि रचनात्मक प्रणाली और बाल केन्द्रित षिक्षण–अधिगम प्रक्रिया पर बल देता है, के विद्यालयी षिक्षा में लागू होने के रूप में देखा जा सकता है।

***खण्ड 14.3 ''नवाचारः आवश्यकता एवं प्रत्यय'' को बी.ई.एस.–053, की इकाई 7 से लिया गया है।**

परिवर्तन प्रायः नवाचार की प्रक्रिया द्वारा आता है। राष्ट्रीय षिक्षा नीति ने (NPE, 1986) ने षिक्षकों के द्वारा प्रयोग एवं नवाचार की आवष्यकता को पहचाना और सिफारिष की कि *"षिक्षकों को नवाचार और समुदाय की आवष्यकताओं, क्षमताओं और परिप्रेक्ष्यों के अनुसार संप्रेषण और गतिविधियों के लिए उपयुक्त विधियों को अपनाने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।"* व्यक्तिगत स्तर पर पुरानी समस्याओं के लिए नए समाधान ढूँढ़ना अथवा प्रकरण के षिक्षण के नए तरीके की प्रेरणा ही नवाचार है। दूसरे शब्दों में, अन्य राष्ट्रों, समाजों, संस्थाओं और संगठनों द्वारा सफलतापूर्वक अपनाए गए तरीकों से प्रेरणा पाकर उन्हें अपनी परिस्थितियों और आवष्यकताओं के अनुसार अपनाना भी नवाचार है (सब्बरवाल और पाण्डेय, 1998)। ऐसे नवाचार वहाँ होते हैं जहाँ समस्या का समाधान व्यवस्था के बाहर से आता है और उसको अचानक नहीं बल्कि सोच–समझकर अपनाया जाता है।

वर्तमान स्थिति में असंतोष होना नवाचार की पूर्व दषाओं में से एक है। यह असंतोष विद्यमान शैक्षिक संरचना और विधियों के निष्क्रिय अथवा अप्रभावी होने के कारण हो सकता है। अनिष्चितताओं का सामना करने के साथ–साथ अपनी अभिलाषाओं को पूरा करने की इच्छा और अन्य अपेक्षाएँ, व्यक्ति को नवाचार और प्रयोग के लिए प्रेरित करती हैं। इसके अतिरिक्त षिक्षार्थियों की संख्या प्रतिवर्ष बदलती रहती है और षिक्षार्थी विविध सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमियों से आते हैं, जिनके पूर्व–अनुभव और प्रदर्षन भी भिन्न–भिन्न होते हैं। षिक्षक को उनके साथ प्रभावषाली रूप से व्यवहार करने के लिए अनवरत् प्रयास और रचनात्मक युक्तियों की आवष्यकता होती है। इस प्रकार के प्रयास षिक्षकों को नवाचार और शोध की ओर ले जाते हैं। यहाँ यह ध्यान देने योग्य बात है कि कुछ नवाचार व्यवस्था पर इतना प्रभाव डालते हैं कि उन्हें इस प्रकार स्वीकार कर लिया जाता है कि वे व्यवस्था में समाहित हो जाती हैं जबकि कुछ को पूरी तरह से स्वीकार नहीं किया जाता और धीरे–धीरे वे विलुप्त हो जाते हैं।

14.3.1 नवाचार क्या है?

नवाचार के प्रत्यय को विभिन्न विचारकों और शोधकर्त्ताओं ने भिन्न–भिन्न प्रकार से समझकर इसका प्रयोग, वर्णन और परिभाषित किया गया है। "नवाचार" षब्द लैटिन षब्द "नोवस" से लिया गया है, जिसका अर्थ है नया, नवीन, नवीनता या पुननिर्माण। नए का अर्थ है वह चीज जो अभी हाल ही में निर्मित हुई है और जो पहले से अस्तित्व अथवा प्रयोग में नहीं थी। साधारण षब्दों में कहा जा सकता है कि यह अपरिचित से परिचित में बदलती है और पुराने के स्थान पर नवनिर्माण करती है। *डिक्षनरी ऑफ एजुकेषन* (1977) ने नवाचार की परिभाषा नए विचारों अथवा सिद्धान्तों को बढ़ावा देने के रूप में की है। इस प्रकार नवाचार का अर्थ है। *''नया विचार अथवा पहले से अस्तित्व में आए किसी उत्पाद का सुधार/विकास, प्रक्रिया या विधि जोकि किसी विशेष संदर्भ में गुणवत्तापरक उत्पाद निर्मित करने के इरादे से लागू किया जाता है''* (क्रिकलैंड और सच, 2009)।

नवाचार में या तो मूल परिवर्तन या जानीमानी कार्य प्रणाली में सतत परिवर्तन सम्मिलित है। षिक्षणषास्त्रीय कार्य प्रणाली में नवाचार इसलिए आवष्यक है क्योंकि आप सक्रिय अधिगम को तभी सहज बना सकते हो जब आपमें नवीन प्रणालियों को अपनाकर क्रियाकलाप द्वारा षिक्षार्थियों की अभिप्रेरणा तथा रूचि को बनाए रखने की योग्यता हो।

कॉसटॉफ (2008) का सुझाव है कि नवाचार वर्तमान गतिविधि में सकारात्मक रूपांतरण के रूप में प्रदर्षित होता है। इस प्रकार, नवाचार में ज्ञान का इच्छित प्रयोग, कल्पना और संसाधनों का अधिकतम अथवा भिन्न उपयोग करने की पहल करना और वे सभी प्रक्रियाएँ जिनके द्वारा विचार उत्पन्न होते हैं, सम्मिलित हैं। अधिकांष षिक्षा साहित्य में नवाचार को

न केवल नए विचारों को वरन् संषोधित विचारों, ज्ञान और कार्य प्रणाली को लागू करने के रूप में परिभाषित किया गया है (मिषेल, 2003)।

इसके बावजूद भी, नवीनता संदर्भ से सम्बन्धित विशिष्ट षब्द है। जो किसी एक व्यक्ति या संदर्भ के लिए नया है, वह हो सकता है कि किसी दूसरे के लिए नवीन न हो। अतः नवीन किसे कहा जाना चाहिए? यदि कोई नवाचार सम्पूर्ण षिक्षा प्रणाली के लिए नवीन नहीं है लेकिन किसी विशेष संदर्भ में वह नया है तो उसको केवल सम्बन्धित परिप्रेक्ष्य में ही नवाचार माना जाता है। रोजर्स (जिसका उल्लेख क्रिकलैंड और डेन ने भी किया है) (2005, पृ.11)।

"यदि किसी व्यक्ति के लिए विचार नवीन प्रतीत होता है तो वह नवाचार है।" कोई चीज किसी दिए गए सामाजिक संदर्भ में किस सीमा तक नई है, नवाचार को पहचानने में यह अति महत्वपूर्ण है। इसलिए "स्मार्ट क्लास" का प्रत्यय किसी एक सामाजिक संदर्भ में नवाचार हो सकता है जबकि ऐसे प्रगतिषील समाज में जहाँ पहले से ही आधुनिक तकनीकियाँ प्रयोग में है, यह नवाचार नहीं कहलाएगा। राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रषिक्षण परिषद (NCERT) ने 1977 में "षिक्षा में नवाचार" पर एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया जिसमें कुछ महत्वपूर्ण नवाचारों पर चर्चा की गई और उसके व्यापक प्रचार के लिए उसे रिपोर्ट में प्रकाषित किया गया।

इस रिपोर्ट के अनुसार नवाचार में निम्नलिखित बातें होनी चाहिए:

- व्यक्ति द्वारा कथित प्रणाली अथवा पर्यावरण के लिए नवीन,
- जो चीज पहले से विद्यमान है उससे उन्नत,
- संयोगवष नहीं बल्कि जानबूझकर योजनाबद्ध तरीके से किया गया प्रयास,
- क्षेत्रीय व्यवस्था अथवा पर्यावरण अथवा परिस्थितियों के प्रासंगिक,
- व्यवहार, अधिगम अथवा व्यक्तियों की अभिवृत्ति अथवा व्यक्तियों के समूह में परिवर्तन का साधन
- अपरिचित को परिचित बनाने में सहायक,
- पूर्व–निर्धारित लक्ष्यों के परिणामों को प्राप्त करने में सहायक,
- प्रकृति के प्रति सकारात्मक, और
- कुछ ऐसा जिसका परिणाम व्यवस्था में सुधार हो।

14.3.2 नवाचार के प्रकार

नवाचार सामान्यतया निम्नलिखित चार प्रकार के होते है:

उत्पाद नवाचार – जिसमें नए उत्पादों का विकास सम्मिलित है जैसे कार, टेलीविजन, फ्रिज, खाद्य–पदार्थ, शैक्षिक किट, जैसे कि राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रषिक्षण परिषद द्वारा विकसित विज्ञान और गणित की किट, शैक्षिक खिलौने, आदि। बहुत से षिक्षकों द्वारा नवाचारी शैक्षिक सामग्री का निर्माण और प्रयोग निरंतर करते रहते हैं।

प्रक्रिया नवाचार – इसमें नए प्रतिपादित तंत्र/प्रणाली में संषोधन जिसके अंतर्गत तकनीकी, उपकरण, सॉफ्टवेयर, आदि में परिवर्तन आते हैं, सम्मिलित हैं। सेवा–पूर्व षिक्षक प्रषिक्षण कार्यक्रम के दौरान आपने सूक्ष्म–षिक्षण के विषय में अवष्य अध्ययन किया होगा, षिक्षण प्रतिमान, योजनाबद्ध अनुदेषन, आदि को पूरे विष्व में प्रक्रिया नवाचार के प्रसिद्ध उदाहरण के रूप में स्वीकार किया जाता है।

पिछले कुछ दषकों के दौरान षिक्षा के क्षेत्र में एकीकृत तकनीक की अनेक नवीन विधियों का विकास और प्रयोग किया गया है। इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विष्वविद्यालय (IGNOU) और राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रषिक्षण परिषद द्वारा सेवा–पूर्व और सेवाकालीन षिक्षक षिक्षा कार्यक्रमों में टेलीकॉन्फ्रेंसिंग और वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग का सफलतापूर्वक प्रयोग किया जा रहा है। ये सभी प्रक्रिया नवाचार के उदाहरण हैं। कुछ वर्षों पूर्व आप केवल चॉक और बातों को षिक्षण की एकमात्र विधि के रूप में उपयोग कर रहे थे। जबकि, आज सूचना और संप्रेषण प्रौद्योगिकी (ICT) षिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और यह सब षिक्षा के क्षेत्र में प्रक्रिया नवाचार के कारण संभव हो पाया है। इस प्रकार कम्प्यूटर जहाँ उत्पाद नवाचार का उदाहरण है वहीं कम्प्यूटर की सहायता से की जाने वाली षिक्षण–अधिगम प्रक्रिया नवाचार का उदाहरण है।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के षिक्षकों का नवाचारी अभ्यास

सुश्री. हरमिंदर कौर ने विज्ञान षिक्षण के लिए सूचना और संप्रेषण प्रौद्योगिकी (ICT) का प्रयोग किया। उन्होंने अधिगम के लिए आनंददायक और सहभागिता का वातावरण तैयार किया जो षिक्षार्थियों की उपलब्धि स्तर को बढ़ाता है। "फ्लाइंग ज्वैल्स" नामक वेबसाइट तितलियों से सम्बन्धित सूचनाओं का संग्रह है जो उनके षिक्षार्थियों द्वारा किए गए कार्यों का विवरण है, जो उनकी उपलब्धियों को दर्षाता है।

सुश्री. लता रामचन्द्रन ने संसाधनों में बहुरूपता लाकर अनेक प्रयोग किए। उन्होंने दृश्य निर्देषिका (विजुयल डायरेक्टरी) का निर्माण किया, षिक्षार्थियों के संग्रह को इकट्ठा करना और उन्हें छोटे–छोटे समूहों में योजनाबद्ध अध्ययन करने और अपने अधिगम को एक–दूसरे के साथ विभाजित करने के लिए प्रषिक्षित किया। वह स्वयं भी सूचना और संप्रेषण प्रौद्योगिकी का प्रयोग करती रही और अपने षिक्षार्थियों को भी सूचना और संप्रेषण प्रौद्योगिकी के विभिन्न उपकरणों का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया और इस प्रकार अपने षिक्षार्थियों को अपनी कक्षा स्तर की पहुँच से परे के कार्यों के लिए प्रेरित किया।

सुश्री. जेन्स जैकब ने अपने षिक्षार्थियों से प्राकृतिक पर्यावरण के प्रति बाहरी रूचि उत्पन्न करने के लिए अनेक प्रारंभिक तकनीकों को एकीकृत किया। उनके षिक्षार्थियों द्वारा पक्षियों के बारे में छानबीन करना इस बात का अच्छा उदाहरण है कि छोटे बच्चे कैसे अपनी परम्परागत कक्षा की सीमाओं से परे जाकर भी कार्य कर सकते हैं। आपने षिक्षार्थियों की सम्बन्धित सूचनाओं को ढूँढ़ने, डाउनलोड करने और प्रस्तुतीकरण करने, तस्वीरें खींचने और उनके दैनिक अधिगम के हिस्से के रूप में एक वेबसाइट का परिचालन करने में उनकी सहायता की।

स्रोतः विद्यालय के षिक्षकों का राष्ट्रीय सूचना और संप्रेषण प्रौद्योगिकी (ICT) सम्मान (2010–11), एम. एच.आर.डी.।

परिप्रेक्ष्य (Paradigm) नवाचार में विचार प्रक्रिया/चिंतन में होने वाले मुख्य परिवर्तन सम्मिलित हैं। जैसे कि कुछ वर्षों पहले विद्यालयी षिक्षा में अधिगम पद्धति का व्यवहारवादी के स्थान पर रचनावादी हो जाना। इस प्रकार का परिप्रेक्ष्य परिवर्तन ''राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा'' (NCF)-2005 लागू होने के बाद से देखा जा सकता हे। खुली पुस्तक परीक्षा प्रणाली (OTBA) और कक्षा 10 से बोर्ड परीक्षा को वैकल्पिक बनाना, परिप्रेक्ष्य नवाचार का ही उदाहरण है।

चौथे प्रकार का नवाचार **स्थिति नवाचार** से सम्बन्धित है जिसका अर्थ है कि किसी उत्पाद में किसी अलग उद्देष्य से मौलिक रूप से नवाचार लाया जाता है लेकिन बाद में उस नवाचार को किसी अन्य उद्देष्य के लिए पुनः प्रतिष्ठित करना।

ल्यूकोज़ेड (Lucozde) नामक रोगनाषक पेय पदार्थ जो मूल रूप से औषधीय पेय के रूप में प्रयोग किया गया, बाद में खेलों में प्रयुक्त होने वाले पेय के रूप में प्रतिष्ठित हो गया, स्थिति नवाचार का सुप्रसिद्ध उदाहरण है।

व्यापक रूप से इस बात को स्वीकार कर लिया गया है कि षिक्षण–अधिगम में लोच और सृजनात्मकता को बढ़ाने और संदर्भित अधिगम के लिए षिक्षण–अधिगम में और अधिक वैयक्तिकता और सहभागिता सुनिष्चित करने के लिए, षिक्षकों के नवाचारी होने की आवष्यकता है।

लेकिन क्या षिक्षक नवाचार लाने और प्रयोग करना चाहेंगे? जब कभी षिक्षकों के नवाचारी, परिवर्तन का कारक या शोधकर्त्ता होने की आवष्यकता पर चर्चा–परिचर्चा की जाती है तो षिक्षकों द्वारा दी गई कुछ सामान्य प्रतिक्रियाओं को पढ़ते हैं।

उपर्युक्त प्रतिक्रियाएँ शिक्षकों के परंपरागत व्यवस्था में परिवर्तन और नई या नवाचारी विधियों में प्रयोग करने के प्रतिरोध की ओर संकेत करती हैं। लेकिन क्या सभी षिक्षक ऐसी ही हैं? यदि श्री. अय्यर पक्षी कैसे उड़ते हैं, यह समझाने के लिए षिक्षण की नई युक्ति का प्रयोग करने की पहल नहीं करते तो इसका जो प्रभाव डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम पर पड़ा वह कभी नहीं हो पाता। श्री. अय्यर जैसे अनेक ऐसे षिक्षक हैं जो पाठ्यपुस्तकों और कक्षा की चारदीवारी से बाहर जाकर षिक्षार्थियों के लिए षिक्षण–अधिगम को प्रभावषाली बनाने का प्रयास करते हैं।

नवाचार को सम्मिलित करने के लिए आपके सहकर्मियों के कुछ उदाहरण भी यहां दिए गए हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि किसी नए सिद्धान्त अथवा विधि को प्रतिपादित करने के लिए बहुत सारा धन लगाने या महँगे उपकरण प्रयोग करने की आवष्यकता नहीं है, बल्कि इसके स्थान पर थोड़ी सी कल्पनाषक्ति और सृजनात्मकता का प्रयोग करके षिक्षण–अधिगम सामग्री (TLM) अथवा षिक्षण युक्ति बनाई जा सकती है जो षिक्षण–अधिगम

प्रक्रिया को रूचिकर और प्रभावषाली बना सकती है। नीचे गुजरात के ग्रामीण क्षेत्र से षिक्षकों के कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं जो कल्पनाषक्ति और नवाचारिता के साथ अधिगम को सहज बनाने हेतु प्रयासरत हैं।

शंकरभाई सैंधव, कृषि आदर्ष प्राथमिकषाला, सामी का तुवाड, पत्तन, गुजरात में कार्यरत हैं। कुछ वर्षों पूर्व षंकरभाई शैक्षिक प्रगति में सुधार के लिए विभिन्न प्रयोगों में संलग्न हो गए। उदाहरणार्थ, षिक्षार्थियों के पढ़ने और लिखने के कौषलों में सुधार के लिए उन्होंने वर्णों के उनकी आकृति के आधार पर समूह बना दिए। दूसरा प्रयोग उन्होंने षिक्षार्थियों को विद्यालय में रोके रखने के लिए किया, इस प्रयोग के दो उद्देष्य थे – एक तो उन्हें विद्यालय में रोकना और दूसरा उन्हें विषयगत ज्ञान के साथ–साथ, उनके वास्तविक जीवन का ज्ञान और व्यावहारिक अधिगम प्रदान करना। उन्होंने "गार्डन लाइब्रेरी" नामक एक आंदोलन आरंभ किया और उसके लिए कक्षा VII के पाँच षिक्षार्थी नियुक्त किए। ये षिक्षार्थी कुछ बालकों की पुस्तकें बगीचे में वृक्षों के नीचे रखेंगे। जब षिक्षक कक्षा में न हों अथवा आधी छुट्टी के दौरान षिक्षार्थी वहाँ जाएँगे और बैठकर इन पुस्तकों को पढ़ेंगे। ऐसे बच्चों को जो कभी गाँव से बाहर नहीं गए थे नाल सरोवर, पक्षी अभ्यारण्य दिखाने ले जाना उनका एक अन्य प्रयोग था जो बच्चों में विद्यालय के प्रति शौक उत्पन्न करने में सहायक हुआ।

झूलते पुस्तकालय

वह विद्यालय जहाँ प्रजापति कार्यरत थे, वह एकल षिक्षक विद्यालय था। अतः जब वह प्रषासनिक कार्यों में व्यस्त होते थे अथवा आधी छुट्टी लेते, उस दौरान षिक्षार्थियों को व्यस्त करना एक समस्या थी। उन्होंने एक "झूलते पुस्तकालय" का निर्माण किया। उन्होंने एक लंबा तार लिया और उसे ऊपर बाँध दिया। उस तार पर उन्होंने कहानी की कुछ किताबें क्लिप की सहायता से लटका दी। आधी छुट्टी के दौरान कुछ कक्षाओं के षिक्षार्थी पुस्तकों को ले लेते थे और निम्न कक्षाओं के षिक्षार्थी उनके पास बैठ जाते थे। बड़े षिक्षार्थी कहानी पढ़ते थे और छोटे उन्हें सुनते थे। इसके बाद पुस्तकों का स्थान बदल दिया जाता था। हर तीन या चार दिन बाद पुस्तकों को बदल दिया जाता था। इस प्रयोग द्वारा बच्चों में पढ़ने के कौषल में सुधार हुआ। प्रार्थनासभा के दौरान षिक्षार्थियों ने गीत गाना और कहानियाँ सुनना भी शुरु कर दिया। आधी छुट्टी के दौरान षैतानी की षिकायतें भी बंद हो गई। इस प्रकार षिक्षार्थी पंचतंत्र, रामायण और महाभारत से परिचित हो गए और उन्होंने अपने माता–पिता को इनकी कहानियाँ सुनानी भी षुरु कर दी।

गणित अधिगम हेतु शिक्षार्थी भण्डार

अभ्यास द्वारा गणित षिक्षण हेतु करषंदभाई ने विद्यालय में "षिक्षार्थी ग्राहकवस्तु भण्डार" के नाम से षिक्षार्थी भण्डार की षुरुआत की। षिक्षार्थी खरीदना, बेचना और वह सभी हिसाब सम्बन्धी कार्य जो वे अंकगणित की कक्षा में सीखते थे, वे स्वयं करते थे। इसका लाभ यह हुआ कि षिक्षार्थियों में हिसाब रखने की आदत विकसित हो गई। बच्चे भण्डार के वित्तीय प्रबंध पर चर्चा करते थे और इस प्रक्रिया में वे सभी सक्रिय रूप से भाग लेते थे। इस गतिविधि की सफलता से उन्होंने एक बचत योजना शुरु करने की सोची। तब विद्यालय ने एक सहकारी बचत बैंक का निर्माण करवाया।

स्रोतः *चांद, एवं अन्य (2011). "लर्निंग फ्रोम इन्नोवेटिव प्राइमरी स्कूल टीचर्स ऑफ गुजरात, एक केस स्टडी फॉर टीचर डेवलपमेंट", अहमदाबाद, वेबसाइट http:// teindia.nic.in से ली गई।*

बोध प्रश्न

टिप्पणी: क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें तथा अपने उत्तरों को नीचे दिए गए स्थान में लिखें।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की तुलना करें।

1) नवाचार के मुख्य प्रकार क्या हैं? प्रत्येक के लिए अपने विद्यालयी अनुभव पर आधारित दो–दो उदाहरण दीजिए।

....

....

....

....

....

14.3.3 नवाचार की प्रक्रिया

सामान्यतया नवाचार परिचित आवष्यकताओं और रूचियों को संतुष्ट करने के लिए सभी संभव उपागमों के प्रयोग का परिणाम है। परीक्षण एवं मूल्यांकन नवाचार की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण पद है। उतना ही महत्वपूर्ण पद प्राप्त पृष्ठ–पोषण के आधार पर प्रतिक्रियाओं में परिवर्तन की पद्धति है। यह प्रक्रिया कार्य प्रणाली में संषोधन के साथ चलती रहती है इसे निम्नलिखित चित्र द्वारा प्रदर्षित किया गया है:

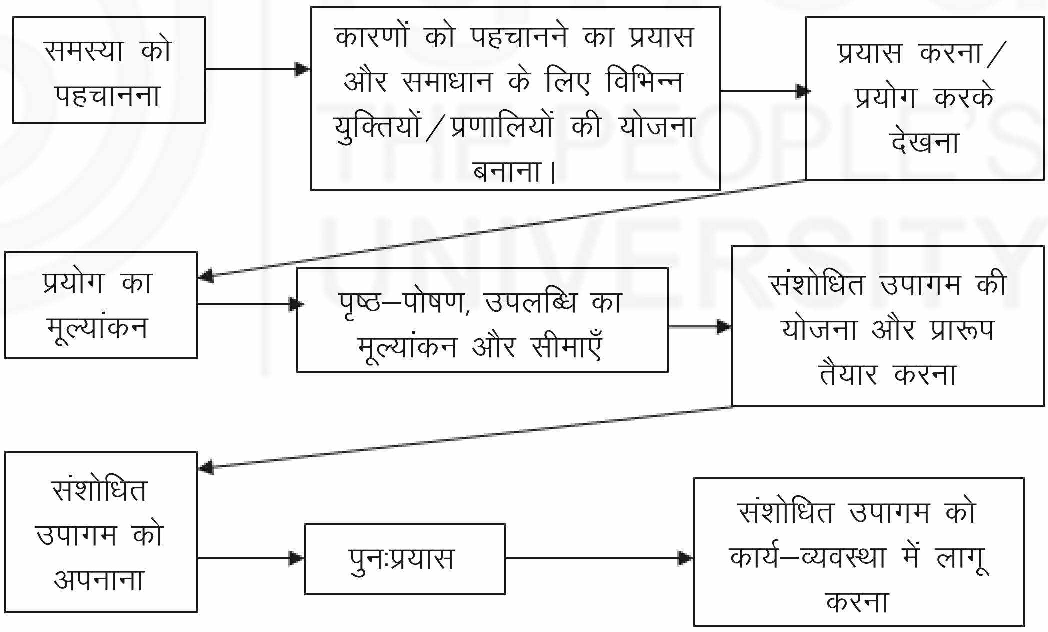

चित्र 14.1: नवाचार की प्रक्रिया

उपर्युक्त चित्र से यह स्पष्ट है कि नवाचार ध्यानपूर्वक की गई योजनाबद्ध गतिविधि है और नवाचार के लिए शोध अनिवार्य है। नवाचार का चक्र उस समय शुरु होता है जब या तो आप किसी ऐसी समस्या का सामना करते हैं जिसके लिए आप विशिष्ट समाधान ढूँढ़ना चाहते हैं अथवा आप कुछ नया करना चाहते हैं। ऊपर दिए गए सभी उदाहरणों में आपने देखा कि सभी षिक्षक अपनी कक्षागत प्रक्रियाओं को अधिक प्रभावषाली बनाना चाहते थे। एक बार जब समस्या की पहचान कर ली जाती है तो षिक्षक उसे दूर करने के लिए विभिन्न

वैकल्पिक प्रणालियों अथवा युक्तियों को बनाता है। इस प्रक्रिया में भिन्न–भिन्न परिप्रेक्ष्यों जैसे – समय, प्रस्तुत समस्या के लिए चुने गए विकल्प की उपयुक्तता, षिक्षार्थियों की आयु और वर्ग, आय (यदि वह भी इसमें सम्मिलित है) आदि अनेक संदर्भों में विभिन्न विकल्पों के गुण–दोषों को देखा जाता है। तब समस्या के समाधान के लिए सर्वाधिक उपयुक्त समाधान को अपना लिया जाता है।

लेकिन नवाचार की प्रक्रिया यहीं समाप्त नहीं होती, क्योंकि युक्ति के परीक्षण पर आधारित अनुभवों के आधार पर, इसे पुनः संषोधित अथवा परिवर्तित किया जाता है और अंतिम रूप में प्राप्त उत्पाद को सम्बन्धित षिक्षक अथवा व्यवस्था द्वारा अपना लिया जाता है। सम्पूर्ण प्रक्रिया में षिक्षक क्रियाकलाप के साथ–साथ क्रियात्मकता और शोध के लिए चिंतन में लगातार संलग्न रहता है लेकिन यह क्रिया आधारित (action-oriented) है जिसे क्रियात्मक शोध अथवा कक्षागत शोध के रूप में जाना जाता है।

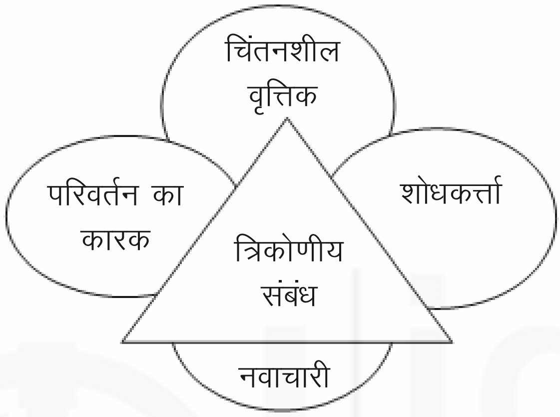

चित्र 14.2: षिक्षक एक नवाचारी और शोधकर्त्ता के रूप में

चित्र 14.2 में दषाई गई षिक्षक की तीन भूमिकाओं – चिंतनषील वृत्तिक, परिवर्तन का कारक, नवाचारी और शोधकर्त्ता के मध्य उपस्थित सम्बन्ध के आकार पर टिप्पणी की जा सकती है।

एक प्रभावषाली षिक्षक प्रकरण, परिप्रेक्ष्य और कक्षागत प्रक्रिया पर लगातार चिंतन करता है और जब पहले से उपलब्ध किसी युक्ति के स्थान पर अपेक्षाकृत अच्छे विकल्प खोज अथवा जब उपलब्ध युक्तियाँ स्थायी अधिगम अनुभव प्रदान नहीं करती तब नवाचारी षिक्षण के लिए नई युक्तियों, तकनीकों और सामग्री का विकास करता है। ऐसा षिक्षक केवल चॉक और बात की परंपरागत विधि पर निर्भर नहीं रहता बल्कि वह बच्चों में अधिगम के प्रति रूचि बढ़ाने के लिए उपयुक्त युक्तियों/विधियों जैसे प्रष्न–उत्तर, चर्चा–परिचर्चा, सामूहिक सहयोग पर आधारित समूह कार्य, अभिन्य, विजुअल मीडिया, षिक्षार्थियों के अनुभव, क्षेत्र भ्रमण और ऐसी ही अनेक युक्तियों के संभावित रूप का प्रयोग करता है। कक्षागत षिक्षक जो इन शोधों को अपनाते हैं उन्हें "चिंतनषील वृत्तिक" कहते हैं जो अनुदेषनात्मक सुधार के लिए आदर्ष सहयोग प्रस्तुत करते हैं (सूटर, 2006)।

यद्यपि, जहाँ नवाचार में शोध अनिवार्य होता है, वहां सभी शोध नवाचार की ओर नहीं ले जाते हैं।

क्रियाकलाप

1) ऐसे प्रकरणों/क्षेत्रों की सूची बनाइए जिनमें आपको नवाचार की आवष्यकता अनुभव होती है। उन क्षेत्रों के लिए कुछ नवाचारों का सुझाव दीजिए और अपने सहकर्मियों के साथ उस पर चर्चा कीजिए। आप द्वारा सुझाए गए नवाचारों की सम्भाव्यता पर चर्चा का प्रतिवेदन तैयार कीजिए।

2) लड़कियों के साथ न केवल घर बल्कि विद्यालय में भी भेदभाव किया जाता है। एक षिक्षक होने के नाते अपनी कक्षा से लड़कियों के साथ होने वाले भेदभाव को समाप्त करने के लिए एक क्रिया–योजना विकसित कीजिए।

3) आपके सहकर्मी द्वारा अपनाई गई नवाचार की प्रक्रिया के एक उदाहरण का पता लगाइए। इससे षिक्षार्थियों की उपलब्धि में क्या अंतर आया?

बोध प्रश्न

टिप्पणी: क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें तथा अपने उत्तरों को नीचे दिए गए स्थान में लिखें।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की तुलना करें।

2) माध्यमिक षिक्षा में नवाचार की आवष्यकता और महत्व पर प्रकाष डालिए।

....

....

....

....

....

....

....

14.4 एक क्रियात्मक शोधकर्त्ता के रूप में शिक्षक*

षिक्षक प्रायः शोध को एक अतिरिक्त कार्य के रूप में देखते हैं जो उनके दिन–प्रतिदिन के षिक्षण कार्य में बाधा उत्पन्न करता है। एक षिक्षक के रूप में हम प्रायः बाह्य शोधकर्त्ताओं, जो विद्यालयी षिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए विद्यालयों से जुड़े विभिन्न मुद्दों और उनके परिणामों पर शोध करते हैं, के साथ ही सुविधा अनुभव करते हैं। क्या कभी हम स्वयं से यह पूछते हैं कि क्या ये मुद्दे हमसे सम्बन्धित हैं? अंत में जिन परिणामों/उपलब्धियों (findings) को विद्यालय के साथ बाँटा जाता है, क्या वे हमारे विद्यालय के लिए उपयुक्त हैं? क्या इन परिणामों का सम्बन्ध हमारे विद्यालय और कक्षाओं से आसानी से जोड़ा जा सकता है? हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि जब विद्यालय आधारित शोध का अवलोकन षिक्षण से पृथक होकर किया जाता है, तो षिक्षक स्वयं को शोधकर्त्ता नहीं समझ सकता। षिक्षकों को अपने विद्यालयों की समस्याओं को पहचानने और उनका समाधान ढूँढ़ने और अपने स्वयं के शोध द्वारा विद्यालयों में सुधार के योग्य होकर अपने विद्यालयों का नायक बनना चाहिए। एक षिक्षक के रूप में हम कैसे अपने अनुभवों की चर्चा कर सकते हैं, कैसे हम विविध विषयों और प्रासंगिक प्रकृति वाले प्रष्न जिनके अन्वेषण की आवष्यकता है, पहचान सकते हैं। शैक्षिक समस्याओं और मुद्दों की सबसे अच्छी पहचान और अन्वेषण वहीं किया जा सकता है जहाँ पर उनसे सम्बन्धित क्रियाएँ की जाती हैं, जोकि कक्षा और विद्यालय में की जाती हैं। समस्याओं की पहचान के पष्चात् अपने विद्यालय और कक्षा

***क्रियात्मक शोध सम्बंधी विषयवस्तु को मूलरूप से डी.ई.पी.एस.एस.ए. के लिखी गई क्रियात्मक शोध हस्तपुस्तिका से अपनाया गया है।**

सम्बन्धी चुनौतियों को हल करने में अपने स्वयं के शोध करके वे अच्छे शोधकर्त्ता हो जाएँगे। कक्षाओं और विद्यालयों को अधिक जोषीले अधिगम केन्द्र बनाने के लिए इस प्रकार के शोध, शैक्षिक वृत्तियों द्वारा किए जाते हैं। ऐसा इसलिए किया है क्योंकि यह "मेरा विद्यालय", "मेरी कक्षा", "मेरी चुनौतियाँ" और इन पर किया गया शोध "मेरा शोध" और शोध में खोजा गया समाधान "मेरा समाधान" है। यही क्रियात्मक शोध है और हमारे लिए एक षिक्षक के रूप में यह "मेरा शोध" है।

14.4.1 क्रियात्मक शोध क्या है?

क्रियात्मक शोध वह प्रक्रिया है जिसे षिक्षक व्यवस्थित अन्वेषण के माध्यम से खोजते और सीखते हैं। एक षिक्षक होने के नाते यह समझना चाहिए कि क्रियात्मक शोध करना षिक्षण का ही एक अंग है। यह आगे चलकर इस समझ को विकसित करने में सहायक होता है कि षिक्षण व्यक्तिगत ज्ञान, प्रयास और त्रुटि द्वारा प्रभावित और अपने सह–षिक्षकों, षिक्षार्थियों और विद्यालय व्यवस्था के अन्य सहभागियों के साथ अभ्यास और बातचीत अथवा संवाद द्वारा प्रदर्षित होता है।

षिक्षकों के वृत्तिक विकास के लिए क्रियात्मक शोध एक आदर्ष अभ्यास होगा जोकि निम्नलिखित तीन मूल शैक्षिक गतिविधियों को प्रोत्साहन देता हैः

1) **"सहयोगपूर्ण अन्वेषण"** का अर्थ है विद्यालयी षिक्षकों और प्रषासकों का एक साथ मिलकर सहयोगपूर्ण ढंग से विद्यालयी षिक्षा से सम्बन्धित मुद्दों को खोजना/अन्वेषण करना।

2) **"चिंतन"** जिसका अर्थ है षिक्षकों द्वारा लगातार की जाने वाली विचार प्रक्रिया जोकि विविध गतिविधियों को समझने, उनके कक्षा में क्रियान्वयन और कक्षागत कार्य प्रणाली में उनके परावर्तित होने से सम्बन्धित है।

3) **"संवाद"**, जहाँ षिक्षक अपने सह–षिक्षकों और विद्यालय व्यवस्था में प्रषासकों से विद्यालय से सम्बन्धित मुद्दों पर चर्चा करते हैं तो विद्यालय आधारित मुद्दों पर संवाद उत्पन्न होता है।

इस प्रकार, क्रियात्मक शोध वह प्रक्रिया है जो सहयोगपूर्ण क्रियाएँ, विद्यालय में की जाने वाली गतिविधियों में उनका चिन्तन और ऐसे विशेष सम्बन्धित मुद्दे, जिनको संबोधित किया जाना आवष्यक है, पर संवाद उत्पन्न करती है। यह हमें अपनी कक्षा की कार्य प्रणाली का स्वयं मूल्यांकन करने को प्रेरित करती है।

हमें यह बात अवष्य समझ लेनी चाहिए कि कैसे ये गतिविधियाँ षिक्षार्थी में उपस्थित कौषलों को प्रभावित करती हैं। इस प्रकार के विद्यालय और कक्षाकक्ष आधारित सतत् शोध के माध्यम से हम षिक्षार्थियों के अधिगम का सतत् निरीक्षण कर सकते हैं।

इस प्रकार के साधारण शोध और उनके परिणाम को विद्यालय/कक्षागत समस्याओं का निष्चित समाधान पाने में प्रयोग किया जा सकता है। एक समस्या का समाधान विद्यालय व्यवस्था से जुड़ी सभी समस्याओं का अंत नहीं हो सकता। प्रक्रिया में अन्य समस्याएँ भी सामने आ सकती हैं जिनका समाधान ढूँढ़ना आवष्यक होता है।

इस प्रकार क्रियात्मक शोध एक सतत् और चिन्तनशील प्रक्रिया है जहाँ हम षिक्षक विद्यालय और कक्षा के हित में अनेक निर्णयों पर पहुँचते हैं। विभिन्न विद्यालयों/कक्षाओं से सम्बन्धित आँकड़ों पर आधारित परिणामों का विश्लेषण विभिन्न निर्णयों पर पहुँचने में सहायक होता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी: क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें तथा अपने उत्तरों को नीचे दिए गए स्थान में लिखें।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की तुलना करें।

3) क्रियात्मक शोध "मेरा शोध" है। टिप्पणी कीजिए।

....

....

....

....

....

14.4.2 क्रियात्मक शोध के उपागम

क्रियात्मक शोध को प्रक्रिया में, एक षिक्षक के रूप में हम अपने अध्ययन का क्षेत्र एक षिक्षार्थी, षिक्षार्थियों का एक छोटा समूह, एक कक्षा, अनेक कक्षाएँ अथवा पूरे विद्यालय को चुन सकते हैं। विद्यालय के सह–षिक्षकों में ध्यान और सहभागिता का स्तर, षिक्षकों और विद्यालय के सहयोग, आवष्यकताओं और रूचियों के स्तर पर निर्भर करता है।

क्रियात्मक शोध के विभिन्न उपागम कौन–से हैं, हमें इसका ज्ञान अवष्य होना चाहिए। एमिली कालहॉन (1993) ने क्रियात्मक शोध के तीन उपागमों का वर्णन किया है: **व्यक्तिगत षिक्षक क्रियात्मक शोध, सहयोगपूर्ण क्रियात्मक शोध** और **विद्यालय–व्यापी क्रियात्मक** शोध। क्रियात्मक शोध के तीनों उपागमों में वातावरण का अन्तर होते हुए भी प्रक्रिया में समानता पाई जाती है। इस प्रक्रिया में कक्षा और विद्यालय से सम्बन्धित आँकड़ों को समस्या का पता लगाने, कार्य–योजना का विकास करने, आँकड़ों का संकलन और विश्लेषण, परिणामों का प्रयोग और योगदान और अनुदेषनात्मक निष्कर्षों, आदि को षिक्षार्थियों के अधिगम में सतत् संषोधन के लिए प्रयोग किए जाना सम्मिलित है।

व्यक्तिगत षिक्षक क्रियात्मक शोध समस्या अथवा मुद्दे के अध्ययन के लिए केवल एक कक्षा पर ही ध्यान केन्द्रित करता है। शोध के इस उपागम में हम एक षिक्षक के रूप में व्यक्तिगत शोध में संलग्न रहते हैं इसके लिए हमें अपने सह–षिक्षकों और प्रषासन का सहयोग भी मिल सकता है और नहीं भी। वे क्रियात्मक शोध के किसी विषय पर चर्चा के लिए मानसिक चिन्तन (ब्रेनस्टोर्मिंग) सत्रों के लिए सहर्ष तैयार भी हो सकते हैं और नहीं भी हो सकते हैं। यद्यपि, क्रियात्मक शोध में सीधे तौर पर केवल एक षिक्षक ही संलग्न हो सकता है लेकिन शोध की सफलता के लिए विद्यालय अथवा जिला स्तर के सुषिक्षित प्रषिक्षकों का सहयोग महत्वपूर्ण होता है। जैसे कि किसी विशिष्ट विद्यालय अथवा कक्षा के षिक्षार्थियों की पढ़ने सम्बन्धी अयोग्यता, गणित के कुछ निष्चित प्रकरणों को समझने में अक्षमता, पढ़े हुए ज्ञान को आत्मसात न कर पाने की समस्या और इसी प्रकार की कुछ अन्य समस्याएँ, आदि।

सहयोगपूर्ण क्रियात्मक शोध किसी समस्या अथवा मुद्दे के अध्ययन के लिए एक अथवा अधिक कक्षाओं पर ध्यान केन्द्रित करता है। इस उपागम में षिक्षकों और प्रषासकों से किसी समस्या विशेष के अलग–अलग ढंग से अध्ययन के लिए सहयोगपूर्ण ढंग से कार्य करने के लिए कहा जाता है। जैसे कि सह–षिक्षकों द्वारा एक कक्षा के षिक्षार्थियों के विशिष्ट समूह (जैसे कि लिंग पर आधारित) का अध्ययन, षिक्षकों के एक दल द्वारा वर्ग स्तर के मुद्दे

(transition rates) का अध्ययन, एक षिक्षक और जिला षिक्षा अधिकारी द्वारा विशिष्ट अनुदेषनात्मक कार्य प्रणाली का अध्ययन, उसी विद्यालय में षिक्षकों के एक समूह द्वारा सम्बन्धित अनुदेषन का अध्ययन, आदि।

क्रियात्मक शोध का यह उपागम किसी विशिष्ट अध्ययन क्षेत्र में एक से अधिक षिक्षकों के संयुक्त प्रयासों को प्रोत्साहित करता है। विषयों से सम्बन्धित शोध में विचारों का आदान–प्रदान और संवाद सामान्य बातें हैं।

विद्यालय–व्यापी क्रियात्मक शोध विद्यालय में सुधार की पहल करता है। विद्यालय से सम्बन्धित आँकड़ों से विशिष्ट मुद्दों को पहचानकार विद्यालय के सभी संकायों के सदस्य अध्ययन में संलग्न रहते हैं। इस उपागम में षिक्षकों और प्रषासकों के पूर्ण सहयोग की आवष्यकता होती है और इसके परिणाम विद्यालय व्यापी परिवर्तन के रूप में सामने आते हैं। सफल विद्यालय व्यापी क्रियात्मक शोध स्पष्ट रूप से विद्यालय सुधार योजना के निहित अवसरों से जुडा होता है। विद्यालय सुधार से सम्बन्धित आसपास के विभिन्न मुद्दे के संदर्भ में यह और भी अधिक व्यापक प्रकृति का हो सकता है। इसमें उन विषयों को भी सम्मिलित किया जा सकता है जो विद्यालय से स्पष्ट रूप से सम्बन्धित नहीं हैं लेकिन जिनका विद्यालय सुधार के निदेषकों पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

नीचे दिए गए चार्ट में उपर्युक्त वर्णित उपागमों में शोधात्मक प्रष्नों के संदर्भ में कुछ उदाहरण दिए गए हैं, उन्हें देखें।

उपागम	केन्द्र बिन्दु	सहयोग का स्तर	शोधात्मक प्रष्नों के उदाहरण
व्यक्तिगत	केवल एक कक्षाकक्ष	एक षिक्षक	1) अपनी कक्षा के षिक्षार्थियों को विषिष्ट अंकगणितीय प्रकरणों को समझाने के लिए जब मैं अंकगणित षिक्षण हेतु अन्वेषी अभ्यासों को शमिल करता हूँ तो क्या होता है? 2) अपनी कक्षा के समय का और अधिक प्रभावषाली ढंग से प्रयोग करके मैं समय प्रबंधन कौषल का कैसे सुधार सकता हूँ? 3) जब मैं अपनी कक्षा की शुरुआत दिमाग को षिथिल करने वाली एक सूक्ष्म गतिविधि से करती हूँ तो षिक्षार्थियों का कक्षा में क्या व्यवहार होता है? 4) प्रत्येक षिक्षार्थी की सहभागिता बढ़ाने के लिए मैं सहकारी समूह अधिगम के संगठन में कैसे सुधार कर सकती हूँ? 5) षिक्षकों की रुचि को बढ़ाने के लिए मैं अपने लिखित अनुदेषों में कैसे सुधार कर सकती हूँ?
सहभागिता–पूर्ण	एक अथवा अधिक कक्षाएँ	मुख्याध्यापक, सह–षिक्षक, विद्यालय प्रषासन/ एक जिले के सभी षिक्षक आदि	1) प्राथमिक और प्रारंभिक स्तर पर विद्यालय निष्पत्ति दर को कैसे बढ़ाया जा सकता है? 2) एक बृहद कक्षा में प्रत्येक षिक्षार्थी तक पहुँच बनाने के लिए (peer tutoring) को लागू करना कैसे एक प्रभावषाली विधि हो सकती है?

			3) बच्चों के अधिगम में सुधार के लिए षिक्षार्थियों के पृष्ठपोषण का हम कैसे निर्माण और प्रयोग कर सकते हैं? 4) षिक्षार्थियों की आवष्यकताओं और अधिगम अयोग्यताओं से सम्बन्धित निर्देषों के अनुकूलन की अपनी योग्यता में हम कैसे सुधार कर सकते हैं? 5) अधिक सकारात्मक व्यवहार प्रबंधन योजना को हम प्रभावषाली ढंग से कैसे लागू कर सकते हैं?
विद्यालय–व्यापी	विद्यालय –सुधार	समस्त संकाय	1) अपने षिक्षार्थियों को जो कुछ वे पढ़ते हैं उसे संगठित, विष्लेषित और व्याख्यायित करना हम कैसे सीख सकते हैं? 2) षिक्षार्थियों जो कुछ पढ़ते हैं उसे संगठित, विष्लेषित, समझ और व्याख्या करने की योग्यताओं को तेज आदर्ष वाचन द्वारा कैसे सुधारा जा सकता है? 3) विद्यालयी–व्यापी सकारात्मक व्यवहार खेलकूद व्यवहार के क्रियान्वयन द्वारा षिक्षार्थियों की सुरक्षा और विद्यालय में वांछित व्यवहार में कैसे सुधार किया जा सकता है? 4) विद्यालय की सभा में षिक्षकों की सहभागिता कैसे सुनिष्चित की जा सकती है? क्या इसका प्रभाव विद्यालय में सहभागिता पर भी पड़ेगा? 5) भूमिका–अभिनय के अभ्यासों के माध्यम से विद्यालयों में षिक्षार्थियों के मध्य लैंगिक रूढ़िवादिता को कैसे मिटाया जा सकता है?

क्रियाकलाप

क्रियात्मक शोध के वैयक्तिक, सहभागितापूर्ण और विद्यालय–व्यापी उपागमों के विद्यालय से सम्बन्धित विशिष्ट मुद्दों का पता लगाइए।

14.5 क्रियात्मक शोध के लिए पूर्व दषाएँ

कोई भी शोध करते समय वस्तुनिष्ठता का और इस बात का ध्यान रखा जाता है कि अध्ययन की इकाई (हमारे सम्बन्ध में विद्यालय) में की जाने वाली गतिविधियाँ आपस में उलझ न जाएँ। इस बात का ध्यान रखने की आवष्यकता है कि इसकी कार्य पद्धति में षिथिलता न आ जाएँ। हमें यह भी सुनिष्चित करने की आवष्यकता है कि विद्यमान समस्या का समाधान ढूँढ़ने के प्रयासों में हम विद्यमान समस्या की और न बढ़ा दें। इसलिए जब हम क्रियात्मक शोध की इन परियोजनाओं को लेते हैं तो हमें निष्चित नीतियों का दृढ़ता से पालन करना चाहिए। नीचे दिए गए भागों में क्रियात्मक शोध को अपनाने के लिए निष्चित पूर्व दषाओं के बारे में चर्चा की जाएगी जिनका हमें पूरी निष्ठा के साथ पालन करना चाहिए।

क्रियात्मक शोध अपनाने के लिए आवष्यक गुण

क्रियात्मक शोध को अपनाने के लिए एक षिक्षक के रूप में हमें अपने अंदर कुछ निष्चित गुणों को उत्पन्न करने की आवष्यकता है।

हालाँकि, इसे सूक्ष्म शोध माना जाता है, इसमें विद्यालय और कक्षा में विद्यमान समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने की योग्यता होती है। हमें क्षेत्रीय संसाधनों को पहचानने, और परिचित समस्याओं का समाधान ढूँढ़ने के लिए उन संसाधनों के प्रयोग की कला आनी चाहिए। यह विकास का मार्ग विकसित करने और विद्यमान षिक्षक–षिक्षार्थी गतिविधियों और अनुदेषात्मक कार्य पद्धति में परिवर्तन का निरीक्षण करने में सहायक होगी। जैसा कि ऊपर बताया गया है कि क्रियात्मक शोध करने वाले में कुछ निष्चित गुण विद्यमान होने चाहिए। इनमें निम्नलिखित गुण हैं:

1) षिक्षा प्रणाली की गहरी समझ।
2) विद्यालय और कक्षागत क्रियाकलापों और कार्य पद्धतियों का पूर्ण अवलोकन और ज्ञान।
3) विद्यमान परिस्थितियों से सम्बन्धित समाधान खोजने के द्वारा नवीन ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा।
4) विद्यालय और कक्षा में अपने कार्य–निष्पादन में संषोधन की इच्छा।
5) आत्म–चिन्तन क्रियाकलाप, जिसमें आत्म–आलोचना और आत्म–विश्लेषण सम्मिलित हैं; और
6) ऐसे मुद्दों को जिनको बढ़ावा दिए जाने की आवष्यकता है स्थायी रूप से पहचान कर परिवर्तन के प्रभाव को जानने की इच्छा।

इन मौलिक गुणों के साथ–साथ क्रियात्मक शोधकर्त्ता में यह क्षमता भी होनी चाहिए कि वह अपने साथियों को हमारे विद्यालयों में क्या–क्या होता है, इसकी भी अच्छी जानकारी दे सकें। क्रियात्मक शोधकर्त्ता के ये गुण निर्णायक समूह बनाने में सहायता करते हैं जो विद्यालयी परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए विभिन्न स्तरों पर विद्यालय की योजना के लिए अभ्यास तैयार करने में भी सहायक होते हैं। यह उपागम अर्थपूर्ण और प्रभावषाली विद्यालय सुधार योजना बनाने में सहायक है, जो विद्यालय के सुधारात्मक प्रयासों को गति प्रदान करती है।

क्रियात्मक शोध हेतु संसाधनों का सहयोग : एक शोध की परियोजना को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए क्रियात्मक शोध के क्षेत्रीय संसाधनों को पहचानना अति महत्वपूर्ण है। मूल रूप से यह विद्यालय प्रषासक का उत्तरदायित्व है कि वह क्रियात्मक शोध की आवष्यकता उत्पन्न करें और विद्यालय और कक्षा आधारित क्रियात्मक शोध करने के लिए वांछित वातावरण स्थापित करें। प्रषासक बड़ी सहजता से विद्यालय व्यवस्था में से इस प्रक्रिया के लिए कामगर नायकों को पहचान सकता है। वे विद्यालय निरीक्षक, प्रधानाध्यापक, वरिष्ठ षिक्षक अथवा नए षिक्षक के रूप में जो विद्यालयी व्यवस्था में सकारात्मक परिवर्तन करने की सूझ–बूझ रखता है, हो सकते हैं। विद्यालय निरीक्षक और प्रषासक इन नायकों को ढूँढ़ने में मुख्य भूमिका निभाते हैं, ये विद्यमान व्यवस्था में नया दृष्टिकोण और परिवर्तन लाने का मार्ग प्रषस्त कर सकते हैं। अनुभवी विद्यालय स्टाफ की भूमिका भी अति महत्वपूर्ण है क्योंकि उनमें प्रत्येक नई पहल के लिए अर्थपूर्ण सहयोग को बढ़ाने की योग्यता होती है। ये षिक्षक और अधिकारीगण यदि स्वतंत्र रूप से शोध करने की अवस्था में न हों तो अपने पुराने अनुभवों का लाभ प्रदान कर सकते हैं। एक षिक्षक,

अथवा सहायक अथवा यहाँ तक कि सामान्य स्टॉफ के रूप में भी अपने अनुभव के दौरान किसी समय पर उन्होंने कुछ सुधार अवष्य किए होंगे। इस प्रकार की पहल उन्होंने अभ्यास और त्रुटि के माध्यम से अपनाई, उनके प्रयासों और परिणामों का कोई दस्तावेज नहीं देखा जा सकता लेकिन उनमें से कुछ के लाभ अभी भी देखे जा सकते हैं। ये सभी सूचनाएँ एकत्र करके विद्यालय में सुधार के लिए न केवल एक अच्छा आधार बन सकती हैं बल्कि नई रणनीति तैयार करने के लिए मार्गदर्षन भी प्रदान कर सकती हैं। अतः इन सभी अनुभवों को एक साथ एकत्र करके प्रयोग किया जाना चाहिए। नई युक्तियों का प्रारूप तैयार करने में छोटी–छोटी जानकारियाँ भी कुछ न कुछ सहायता अवष्य कर सकती हैं। इस प्रक्रिया में प्रत्येक यह अनुभव करता है कि परिवर्तन को लाने में उनका अपना सहयोग भी है। नई कार्य पद्धति के निरंतर और विस्तृत प्रवर्धन के लिए ऐसी स्वामित्व की भावना अति महत्वपूर्ण है।

क्रियात्मक शोध के लिए षिक्षक की तत्परता : एक षिक्षक के रूप में हमें यह अवष्य समझना चाहिए कि विद्यालयों में हमारा प्राथमिक कार्य षिक्षण–अधिगम में गुणवत्ता लाना है और इसमें हमें कोई समझौता नहीं करना चाहिए। इसलिए हमें यह अवष्य सुनिष्चित करना चाहिए कि क्रियात्मक शोध को प्रक्रिया को सम्पादित करने में हम षिक्षण–अधिगम के लिए नियत समय को खर्च न करें। इस कार्य के लिए षिक्षकों को स्वयं को तैयार करने की आवष्यकता है। क्रियात्मक शोध को अपनाने से पहले आइए कुछ ऐसी स्थितियों पर दृष्टि डालते हैं, जिन्हें ध्यान में रखना आवष्यक है। ये स्थितियाँ निम्नलिखित हो सकती हैं:

- षिक्षक का मुख्य कार्य षिक्षण करना है और क्रियात्मक शोध को अपनाने में किए गए अतिरिक्त प्रयासों को इसमें हस्तक्षेप अथवा बाधा नहीं डालनी चाहिए।
- आँकड़ों का एकत्रीकरण षिक्षक की एक नियमित गतिविधि होनी चाहिए जिससे कि क्रियात्मक शोध कक्षा में षिक्षक की भूमिका का समानार्थी बन जाएँ।
- षिक्षकों को अध्ययन द्वारा शोध की समस्या को पहचानने के लिए समर्पित रहना चाहिए।
- चुनी गई कार्य प्रणाली साधारण और विष्वसनीय होनी चाहिए जो हमारी परिकल्पना निर्माण (किसी समस्या अथवा विषय से सम्बन्धित विशिष्ट प्रष्न) में और इन परिकल्पनाओं के उत्तर दने में भी निस्संदेह रूप से हमारी सहायता कर सकें।
- किसी भी प्रकार का शोध करते समय हमें निष्चित नैतिक कार्य प्रणाली का ध्यान अवष्य रखना चाहिए और विद्यालय अथवा समूह में स्रोत व्यक्तियों से आवष्यक सहायता ले लेनी चाहिए, हमें अपने पुराने विचारों की वर्तमान शोध प्रक्रिया पर हावी अथवा उनको प्रभावित नहीं करने देना चाहिए।
- जब विद्यालय समुदाय के सभी सदस्य एक समान दृष्टिकोण रखते हें तो इससे हमारे शोध से प्राप्त परिणामों को निरंतरता मिलनी चाहिए। अतः विद्यालय और कक्षा से सम्बन्धित मुद्दे जिन पर हम शोध करने का प्रयास कर रहे हैं, इन पर सर्वसम्मति बनाने के प्रयास करने की आवष्यकता है।

किसी भी प्रकार के शोध के लिए पूर्व निष्चित नीतियों को ध्यान में रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

ऊपर बताई गई पूर्व–दषाएँ अति महत्वपूर्ण है और षिक्षकों, प्रषासकों और अन्य विद्यालय अधिकारी जो क्रियात्मक शोध करने में रुचि रखते हैं, को इन दषाओं को ध्यान रखना

चाहिए। यह एक व्यवस्थित और वस्तुनिष्ठ अन्वेषण जो कि पूर्व निर्धारित विचारों या अनुभवों से प्रभावित न हो को सुनिष्चित करने में सहायक होगा।

उपर्युक्त परिचर्चा में आप यह जान चुके हैं कि इस प्रकार की पहल को पूरा करने के लिए क्रियात्मक शोधकर्त्ता में किन वांछित गुणों का होना आवष्यक है।

बोध प्रश्न

टिप्पणीः क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें तथा अपने उत्तरों को नीचे दिए गए स्थान में लिखें।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की तुलना करें।

4) क्रियात्मक शोधकर्त्ता की मौलिक विशेषताएँ क्या हैं?

....

....

....

....

....

14.6 क्रियात्मक शोध में गुणवत्ता सम्बन्धी मुद्दे

सदैव यह सलाह दी जाती है कि क्रियात्मक शोध शुरु करने से पहले पूरे विद्यालय की स्थिति को समझ लेना महत्वपूर्ण होता है। किसी स्थिति विश्लेषण के लिए निम्नलिखित प्रष्न षिक्षक के लिए सहायक हो सकते हैं।

विद्यालय आधारित मुद्दे : षिक्षार्थियों के अधिगम और अधिक सफलता पाने वालों में क्या अंतर है? जिसको दूर किए जाने की आवष्यकता है। इसका पता लगाने के लिए विद्यालय स्टॉफ और कक्षागत आँकड़ों को लेना।

उदाहरणार्थ – क्या विद्यालय का विद्यमान भौतिक और मानव संसाधन का बुनियादी ढाँचा गुणवत्तापरक बुनियादी ढाँचे के मानकों को पूरा करता है? दोनों में क्या अंतर है? इसे कैसे दूर किया जा सकता है? इस समस्या के समाधान के लिए आप किससे संपर्क करोंगे? यह सुनिष्चित करने के लिए आप जिस प्रक्रिया को अपनाओगे? क्या आप उसका दस्तावेज बना सकते हो?

क्या आप स्वयं को विद्यालय की कार्य प्रणाली की कमियों को पहचानने के योग्य समझते हो? क्या आप इन मुद्दों को पहचानकर अपने लिए शोध प्रस्ताव तैयार कर सकते हैं? दी गई परिस्थितियों में आपके विचार से क्रियात्मक शोध करने के लिए किस प्रकार का सहयोग, अभिप्रेरणा और प्रोत्साहन द्वारा षिक्षकों को बढ़ावा दिया जा सकता है?

शिक्षार्थी की उपलब्धि सम्बन्धी मुद्दे : हमारे शिक्षार्थी अपने अधिगम लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें, यह सुनिष्चित करने के लिए वह क्या है हमें जिसे जानने की आवष्यकता है? बच्चों में अधिगम की विशिष्ट समस्याएँ क्या हैं? हम यह कैसे पता लगा सकते हैं कि शिक्षार्थी अपने शैक्षिक और व्यवहारात्मक लक्ष्यों को प्राप्त कर पा रहे हैं? जैसे कि – बच्चे कक्षाओं में क्यों नहीं सीख पा रहे हैं? कौन–सी अनुदेषात्मक कार्य पद्धति का अधिगम पर सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ रहा है? क्या वर्तमान कार्य पद्धति में परिवर्तन का कोई मार्ग है?

षिक्षार्थी से सम्बन्धित व्यक्तिगत कक्षा के आँकड़े अधिगम के विषय में क्या प्रदर्षित करते हैं? क्या षिक्षकों की अनुदेषन पद्धति वांछित परिणाम दे पा रही है? क्या कक्षा में षिक्षार्थियों का संगठन खराब उपलब्धि की ओर जा रहा है? क्या कुछ ऐसे घरेलू मुद्दे हैं, जिनके बारे में षिक्षकों को जानने की आवष्यकता है? बच्चे का पोषण स्तर निम्न उपलब्धि स्तर में कैसे सहयोग करता है।

कक्षा के वातावरण सम्बन्धी मुद्दे : बच्चे के अधिगम को कक्षा का वातावरण कैसे प्रभावित करता है? क्या कक्षा का आकार, और कक्षा में षिक्षार्थियों की संख्या अधिगम में सहायक हैं? क्या कक्षा में षिक्षकों की संख्या का कक्षा के वातावरण पर प्रभाव पड़ता है? उदाहरणार्थ – क्या कक्षा की दषाएँ संतोषजनक हैं? क्या षिक्षार्थियों के बैठने और अपना कक्षा कार्य करने के लिए कक्षा में पर्याप्त स्थान है? क्या षिक्षार्थी इन कक्षों में स्वयं को सहज और सुरक्षित महसूस करते हैं? कक्षा की दी गई वर्तमान दषाओं में षिक्षक षिक्षण–अधिगम को अधिक प्रभावषाली बनाने के लिए क्या कर सकता है? क्या कक्षाओं में श्यामपट की उचित व्यवस्था हैं जिन्हें षिक्षार्थी उचित प्रकार से देख सकें और षिक्षक उचित प्रकार से निर्देष लिखने के लिए जिनका प्रयोग कर सकें? आपका अपने षिक्षार्थियों के साथ कैसा सम्बन्ध है? क्या आप कह सकते हैं कि आपकी कक्षा का वातावरण मित्रतापूर्ण है?

षिक्षक प्रषिक्षण सम्बन्धी मुद्दे : क्या आपको अनुदेषात्मक कार्य पद्धति षिक्षक–प्रषिक्षण (सेवापूर्व अथवा सेवाकालीन) के दौरान सिखाई गई कार्य पद्धति के अनुरूप है? क्या इन कार्य पद्धतियों का अधिगम पर कोई सकारात्मक प्रभाव पड़ता है? आप इस प्रकार के प्रष्न पूछ सकते हो, क्या एक षिक्षक के रूप में आपने कभी वृत्तिक विकास का प्रषिक्षण लिया है? क्या आपकी षिक्षण–प्रषिक्षण कार्यषालाओं में आपकी कक्षागत परिस्थितियों पर आधारित पर्याप्त क्रियाकलाप सत्र हुए हैं? क्या आप प्रषिक्षण कार्यक्रमों से कक्षागत कार्य सम्पादन में सुधार के योग्य बन गए हों? क्या आप षिक्षक प्रषिक्षण कार्यक्रमों के दौरान अपनी षिक्षण–अधिगम सम्बन्धी समस्याओं को स्पष्ट कर पाते थे? क्या आप सोचते हो कि षिक्षक–प्रषिक्षण में कुछ और बातें भी सम्मिलित होनी चाहिए? आदि।

कक्षागत कार्य सम्पादन सम्बन्धी मुद्दे : हमें कौनसी अनुदेषात्मक कार्य पद्धति अथवा तकनीकी का अन्वेषण और शोध करना चाहिए? हम इन अनुदेषात्मक कार्य पद्धतियों को कैसे सीख सकते हैं और षिक्षार्थियों के अधिगम पर इनके प्रभाव को सुनिष्चित कर सकते हैं? उदाहरणार्थ – आपकी कक्षा में कितने षिक्षार्थी उपस्थित रहते हैं? क्या आप सोचते हो कि आपकी पहुँच उन सभी के पास तक है? क्या आपका कक्षा में कार्य सम्पादन की विधि आपको सेवाकालीन प्रषिक्षण के दौरान सिखाई गई विधि के अनुरूप है? कक्षागत निर्देषों के दौरान आप क्या मूल्यांकन करोगे जिससे आपका वृत्तिक ज्ञान बढ़ सके? क्या आपको इस प्रकार के विकास के लिए संसाधनों का सहयोग प्राप्त है? षिक्षण–अधिगम सामग्री का प्रयोग आप बहुधा कितनी बार करते हो? क्या आप कुछ निष्चित विशिष्ट क्रियाकलापों को करवाने के लिए कक्षा में समूहों को बनाते हो? क्या षिक्षार्थी अपने साथियों के साथ क्रियाकलाप करने के माध्यम से अधिक अच्छी प्रकार से सीख सकते हैं? क्या ये सभी आपकी कक्षा की कार्य पद्धति में सम्मिलित हो सकती हैं? क्या आप शैक्षिक कलैण्डर का अनुसरण करते हैं? क्या माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक षिक्षा की पाठ्यचर्या विद्यालयों में उपलब्ध है और वह षिक्षकों को दी गई है?, आदि।

समुदाय आधारित मुद्दे : विद्यालय विकास की योजना बनाने में विद्यालयों द्वारा समुदाय के सदस्यों को प्रायः कितनी बार सम्मिलित किया जाता है? विद्यालयों में सुधार के लिए समुदाय के सदस्य स्वयं को कितना संलग्न करते हैं? उदाहरणार्थ – क्या एक भागीदार के रूप में समुदाय के सदस्य विद्यालय के विकास के लिए वित्तीय सहायता कर सकते हैं?

क्या समुदाय के सदस्यों को षिक्षकों को सहयोग देने अथवा स्वेच्छा से विद्यालयों में कार्य करने के लिए अभिप्रेरित किया जा सकता है? विद्यालय विकास योजनाओं में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों को क्या अभिप्रेरित करेगा? विद्यालयों में बच्चों की नियमित उपस्थिति को सुनिष्चित करने में विद्यालय प्रबंधन समिति कितनी सक्रिय है? क्या विद्यालय में बच्चे के लिए मित्रतापूर्ण वातावरण सुनिष्चित करने में सहायता हिस्सा लेता है? अभिभावक षिक्षक संघ/ एम.टी.ए. षिक्षार्थी की उपलब्धि को कैसे बढ़ाते हैं? क्या इसे दृढ़ता मिल सकती है? आदि।

गुणवत्ता सम्बन्धी मुद्दे : विद्यालय सुधार के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण निर्णय लेने के लिए एकत्रित जानकारी का प्रयोग आप किस प्रकार करेंगे? अपने निष्कर्षों–परिणामों की चर्चा आप किसके साथ करेंगे? विद्यालय और कक्षा के सम्बन्ध में एकत्रित आँकड़ों का आप किस प्रकार का मूल्यांकन करोगे? मूल्यांकन के साधन विकसित करने में आप किसके साथ मिलकर कार्य करेंगे? विभिन्न निदेषकों से प्राप्त आँकड़ों को प्रयोग करते हुए आप किस प्रकार का निष्कर्ष निकालेंगे? आदि।

उपर्युक्त प्रष्न षिक्षकों और षिक्षा प्रषासकों को यह समझा देंगे कि किस पर ध्यान केन्द्रित करना है अथवा विद्यालय से सम्बन्धित कौन से मुद्दे विद्यमान परिस्थिति से निपटने के लिए प्रासंगिक हो सकते हैं।

उपर्युक्त परिचर्चा हमें यह जानकारी देती है कि क्रियात्मक शोध अपनाते समय प्रारंभिक षिक्षा से जुड़े गुणवत्ता के मुद्दों पर कैसे ध्यान केन्द्रित करता है? आपने यह भी जाना कि अपने विद्यालय और कक्षा से सम्बन्धित मुद्दों की पहचान कैसे की जाती है।

क्रियाकलाप

आपके विद्यालय की "परिस्थिति विश्लेषण" करने के लिए विद्यालय आधारित निदेषकों/संकेतकों की सूची बनाइए।

14.7 क्रियात्मक शोध के पद

आपके पास विद्यालय आधारित परिस्थिति विश्लेषण, आपके पूर्व षोध अभ्यास के रूप में उपलब्ध है। इस इकाई की सहायता से उन क्षेत्रों की पहचान करना और भी सुविधाजनक हो जाएगा जिनको बढ़ावा देने की विद्यालय में आवष्यकता है। एक बार जब पूर्व षोध की स्थिति समाप्त हो जाती है तो आप विद्यालय अथवा कक्षा से सम्बन्धित समस्याओं को वास्तविक रूप से पहचानकर उनके समाधान के लिए कार्य षुरु कर सकते हैं। इकाई के इस भाग में हम, क्रियात्मक षोध परियोजना को पूरा करने में संलग्न होने वाले विभिन्न चरणों की जानकारी एकत्र करेंगे।

प्रथम चरण – समस्या की पहचान

प्रथम चरण के रूप में सबसे पहले हमें समस्या को पहचानने और जिन प्रष्नों का हम समाधान ढूँढ़ रहे हैं, उन प्रष्नों को निर्मित करने की आवष्यकता होती है। क्रियात्मक शोध के प्रथम चरण के रूप में हमें एक ऐसी समस्या का चयन करना होगा जो एक षिक्षक के रूप में हमारे लिए महत्वपूर्ण हैः उदाहरणार्थ, हम अपनी षिक्षण विधियों अथवा षिक्षार्थियों के सीखने के तरीकों को ले सकते हैं। हम किसी साधारण और प्रबंधनीय परियोजना से जिनका संचालन किया जा सके, शुरुआत कर सकते हैं। हमें यह ध्यान रखने की आवष्यकता है कि सभी चीजों में एक साथ परिवर्तन संभव नहीं है। हमें केवल कहीं से

षुरुआत करने की आवष्यकता है जिससे दूसरे भी अपने से सम्बन्धित मुद्दों पर विचार करने और अपने विचारों को प्रकट करने की पहल की षुरुआत कर सकें। एक समय पर एक समस्या लेकर और उसका समाधान ढूँढ़कर, छोटे पैमाने पर सुधार की षुरुआत की जा सकती है।

आप एक प्रष्न के साथ भी आरंभ कर सकते हैं, जैसे "मेरी गणित की कक्षा के प्रति षिक्षार्थी प्रतिक्रिया क्यों नहीं करते हैं?" इस प्रकार की समस्या को हल करने के विषय में विचार करें।

आप अपने आपसे यह प्रष्न पूछ सकते हैं कि क्या सभी षिक्षार्थी प्रतिक्रिया नहीं कर रहे हैं अथवा कुछ षिक्षार्थी। उदाहरण के लिए, "जब मैं कोई विशेष प्रकरण पढ़ा रहा हूँ तो क्या होता है?" उस प्रकरण को पहचानो जिसके प्रति आपके षिक्षार्थी प्रतिक्रिया नहीं दे रहे हैं और जो आपको परेषान कर रहा है। प्रष्न जिस स्तर के षिक्षार्थियों के प्रकरण से सम्बन्धित हैं, क्या हम उसी स्तर के षिक्षार्थियों से पूछ रहे हैं? हमें यह पता लगाना पड़ेगा कि क्या पूरे विद्यालय के षिक्षार्थियों की प्रतिक्रिया नहीं कर पा रहे हैं अथवा उनमें से कुछ की? अतः हमें यह परिभाषित करने की आवष्यकता है कि समस्या कितनी बड़ी अथवा छोटी है अर्थात् समस्या की जटिलता को समझना।

द्वितीय चरण—संदर्भ कार्य

एक बार जब समस्या की पहचान कर ली जाती है तो उसके लिए संदर्भ कार्य की आवश्यकता होती है। यह क्रियात्मक षोध का दूसरा चरण है। हमें अपनी समस्या के बारे में और अधिक जानने की आवष्यकता है और यह भी जानने की आवष्यकता है कि अबसे पूर्व किस का पता लगाने की आवष्यकता है जिनके प्रति षिक्षक प्रतिक्रिया नहीं करते हैं। हमें यह पता लगाने की आवष्यकता है कि उन प्रकरणों के प्रति अन्य विद्यालयों और कक्षाओ के षिक्षार्थी कैसी प्रतिक्रिया करते हैं? हमें यह भी जानने की आवष्यकता है कि क्या ऐसे प्रकरण के सम्पादन में हमें कोई आंतरिक समस्या है। हमें अध्ययन करने, चर्चा करने, विचार करने और इस बात का पता लगाने की आवष्यकता है कि हमारे संदर्भ में क्या किया जाए?

इस परियोजना में अन्य विद्यालयों के षिक्षकों को शामिल करके, उनसे अपने परिप्रेक्ष्य में बात करके सम्बन्धित विषयों पर उनके विचार जानने की आवष्यकता है। हम उनके सुझावों को ले सकते हैं, संदर्भ पुस्तकों और जर्नल्स को देख सकते हैं, और अपने विषय से सम्बन्धित उपलब्ध अन्य अध्ययन सामग्री का भी पता लगा सकते हैं। हमें अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करनी चाहिए क्योंकि इससे हमारे प्रस्ताव को अधिक स्पष्टता मिलेगी। जब हम अपने इंगित कार्य को करना शुरु कर देते हैं तो हमें अपना ध्यान भंग नहीं होने देना चाहिए। हमें क्षेत्रीय संसाधन व्यक्तियों से भी संपर्क बनाना चाहिए जो हमें जानकारी प्राप्त करने में सहयोग प्रदान कर सकते हैं। हमें अपने प्रष्न पर पुनः विचार कर आवष्यक परिवर्तन कर लेना चाहिए जिससे हमारे विषय के संदर्भ में मुख्य मुद्दे को बरकरार रखा जा सके। यदि आवष्यकता हो तो हम अपनी दिषा परिवर्तित करके अधिक उपयुक्त और प्रबंधनीय विषयों पर कार्य कर सकते हैं। क्रियात्मक षोध हमें अत्यधिक लचीलापन और हम क्या करने वाले हैं, यह सुनिष्चित करने की अनुमति प्रदान करता है।

तृतीय चरण – क्रिया की पहल

सभी संदर्भित कार्य, चर्चा—परिचर्चा और विचारों के आदान—प्रदान के पष्चात यह संभव है कि हम नए विचारों के साथ आगे बढ़े। इन नए विचारों के आधार पर हम अपने विद्यालय

और कक्षा में उपयुक्त परिवर्तन का प्रयास करेंगे। ये विचार सामान्यतया उस जानकारी से प्रभावित होंगे जो हमने दूसरों के अनुभवों और अध्ययनों से एकत्र की है। हमें इन विचारों को कक्षा में अपनाने का प्रयास करना चाहिए। उदाहरण के तौर पर हम गणितीय प्रकरण के षिक्षण का भिन्न प्रकार की षिक्षण–अधिगम सामग्री के प्रयोग द्वारा प्रयास करें अथवा भिन्न–भिन्न विधियों द्वारा प्रयास करें। इसके पष्चात् यह पता लगाने की आवष्यकता है कि क्या बच्चा षिक्षण–अधिगम की नई विधि में रूचि ले रहे हैं? क्या हम षिक्षण के नए रूप के प्रति षिक्षार्थियों की प्रतिक्रिया पाने में सफल हुए हैं? क्या षिक्षार्थी प्रतिक्रिया कर रहे हैं?

चतुर्थ चरण–आँकड़ों का संकलन

इस बिन्दु पर हमें इस चुनौती का सामना करना पड़ेगा कि परिणामों का मापन कैसे किया जाए? यह तब होता है जब हम आँकड़ों के संकलन हेतु विविध विधियों का प्रयोग करें। षोध के प्रकार के आधार पर हमें आँकड़ों के संकलन की विधि की सावधानीपूर्वक पहचान करनी चाहिए। इसका प्रयोग साक्षात्कार के लिए प्रष्नावली अनुसूची का प्रारूप तैयार करने, निरीक्षण का प्रारूप बनाने, विभिन्न समूह चर्चाओं, अथवा साधारण चर्चाओं की रिकार्डिंग के लिए प्रारूप तैयार करने और अन्य मूल्यांकन विधियाँ जैसे व्यक्तिगत अध्ययन विकसित करने में किया जा सकता है। हमें यह सुनिष्चित करने की आवष्यकता है कि हमारा षोध व्यवस्थित और सही होना चाहिए, जिससे हमारे कार्य को विष्वसनीयता प्राप्त हो सके।

पाँचवाँ चरण–मूल्यांकन और विश्लेषण

जब एक बार कोई परियोजना षुरु कर दी जाती है तो कक्षा में नए विचारों को अपनाकर उनके प्रति मिलने वाली प्रतिक्रियाओं के द्वारा कदम–कदम पर उनका मूल्यांकन करते रहना पड़ता है। हमें किसी साधारण प्रारूप में आँकड़ों को एकत्र करके उनका विश्लेषण करना चाहिए। मूल्यांकन और नियमित प्राप्त होने वाली प्रतिक्रियाओं को संयुक्त रूप में प्रयोग करके हम यह पता लगा सकते हैं कि क्या हमारा हस्तक्षेप सुसंगत है और वांछित परिवर्तन ला पा रहा है अथवा नहीं? हम स्रोत व्यक्तियों जैसे खण्ड संसाधन केन्द्र और संकुल संसाधन केन्द्र के समन्वयक, विद्यालय के प्रधानाध्यापक जो हमारी समस्या की अच्छी समझ रखते हैं, को सम्मिलित कर सकते हैं जिनके विचारों से हमारे प्रयास लाभान्वित होंगे। इनका विचार एक भिन्न दृष्टिकोण को प्रमाणित कर सकते हैं जिसकी हम अनदेखी कर चुके हैं और जिस पर विचार करना हमारे लिए अति महत्वपूर्ण है।

जितने अधिक लोगों को हम अपने साथ ले सकते हैं, वह हमारे षोध के परिणामों में सामंजस्य बनाने में सहायक होगा और यदि यह स्थापित हो जाते हैं तो इनको प्रसाारित करना अधिक आसान होगा। अंतिम प्रतिवेदन तैयार करने में उनका सहयोग आगे के षोध में उन्हें एक साथ ला सकेगा।

छठा चरण–परिणाम प्राप्त करना

हम हमारे अपने परिणाम विद्यमान समस्या का समाधान सुधाने के लिए तैयार होते हैं तो इन्हें कक्षा की कार्य पद्धति में अपनाने की आवष्यकता होती है। हमें यह सुनिष्चित करने की आवष्यकता होती है कि दिया गया समाधान पूर्व कार्य पद्धति में सुधार अथवा संषोधन करने में सहायक है। अब हम कक्षा में चीजों को भिन्न तरीके से करने योग्य हो जाते हैं। हमें अपने आपसे यह प्रष्न करने की आवष्यकता है कि क्या हमने परियोजना से कुछ सीखा।

हमें यह बात ध्यान रखने की आवष्यकता है कि क्रियात्मक षोध हमें सषक्त बनाता है – यह हमें अपनी कक्षा के सम्पादन के तरीके बदलने की अनुमति प्रदान करता है। हम लगातार परिवर्तन कर सकते हैं और एक वृत्तिक के रूप में आगे बढ़ सकते हैं। हमें स्वयं

से यह पूछने की आवष्यकता है कि क्या हमें हमसे सम्बन्धित प्रष्नों के उत्तर मिल गए हैं। जैसे ही हमने एक परिप्रेक्ष्य की तरफ कार्य करना षुरु किया क्या हमारे सामने दूसरे ऐसे मुद्दे आए जिन पर ध्यान दिए जाने की आवष्यकता थी? क्या हमें वास्तव में जो प्राप्त हुआ हमने उसी की अपेक्षा की थी? हम अपने परिणामों को षिक्षा व्यवस्था से जुड़े दूसरे लोगों के साथ कैसे बाँट रहे हैं? हमें यह विचार करने की आवष्यकता है कि क्या ये परिणाम हमारे विद्यालय/समुदाय के अन्य लोगों के लिए भी लाभदायक हैं? हमें अपने परिणामों को दूसरों के समक्ष प्रस्तुत करने की आवष्यकता है – इसके लिए हम वार्ता कर सकते हैं, राज्य स्तर की सभाओं में प्रस्तुतीकरण कर सकते हैं और दूसरों को इस बात से अवगत करा सकते हैं कि किस प्रकार हमारी पहल से षिक्षार्थी और षिक्षक लाभान्वित हो रहे हैं।

हमें यह बताना होगा कि विद्यमान कार्य पद्धति का विकल्प खोजने के कारण ही परिवर्तन हुए हैं। हमें यह निरीक्षण करना चाहिए कि क्या हम उच्च स्तर के वृत्तिकों का विकास करने और विद्यालय और कक्षाओं में षिक्षक–षिक्षक के बीच में और षिक्षक–षिक्षार्थी के मध्य भी एक भिन्न प्रकार का सम्बन्ध विकसित करने के योग्य हो गए हैं।

सातवाँ चरण – परिणामों का अभिलेखन

क्रियात्मक शोध एक चक्रीय प्रक्रिया है और जहाँ पर यह समाप्त होती है वहीं से पुनः आरंभ हो जाती है। इसलिए हम अपने निष्कर्ष प्राप्त करने के साथ इसे बंद नहीं कर सकते। आपको अपने सहकर्मियों को यह अवष्य बताना चाहिए कि आपके शोध से आपको क्या उपलब्धि हुई। अतः हमें सुनिष्चित रूप से अपने शोध को प्रत्येक चरण का अभिलेख अवष्य तैयार करना चाहिए। हम अपने अध्ययन का एक विस्तृत प्रतिवेदन तैयार कर जिला और राज्य स्तर के हितधारकों को उनका पृष्ठपोषण प्राप्त करने के लिए भेज सकते हैं। इस प्रतिवेदन को प्रसाारित और बढ़ावा देने के लिए जहाँ तक संभव हों संचारित किया जा सकता है। प्रतिवेदन की विशिष्ट आवष्यकताओं में भिन्नता आपके द्वारा किए गए कार्य पर निर्भर करेगी, हालाँकि प्रतिवेदनों में कुछ बातें सामान्य हैं। क्रियात्मक शोध का प्रतिवेदन तैयार करने के लिए इसके प्रारूप की चर्चा अगले भाग में की गई है।

बोध प्रश्न

टिप्पणीः क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें तथा अपने उत्तरों को नीचे दिए गए स्थान में लिखें।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की तुलना करें।

5) क्रियात्मक शोध की समस्या को पहचानने की क्या प्रक्रिया है?

....

....

....

....

6) आप अपने क्रियात्मक शोध के परिणामों को किस प्रकार अभिलेखित और प्रसारित करेंगे?

....

....

....

14.8 क्रियात्मक शोध के प्रतिवेदन (रिपोर्ट) का प्रारूप

क्रियात्मक शोध पूर्ण करने के पष्चात्, समस्त परिणामों का अभिलेख तैयार करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। यह अपेक्षा की जाती है कि इसका प्रयोग विभिन्न आधारों पर किया जाएगा। इसलिए इसका व्यवस्थित और स्पष्ट अभिलेख अवष्य तैयार किया जाना चाहिए। नीचे दिए गए प्रारूप के अनुसार हम पूरे क्रियात्मक शोध का प्रतिवेदन तैयार कर सकते हैं।

प्रस्तावनाः प्रतिवेदन के इस भाग में निम्नलिखित बातें सम्मिलित हैंः

- शोध परियोजना का संक्षिप्त विवरण जिसमें शोध का विषय, शोध के कारण, शोध के क्षेत्र की पृष्ठभूमि और आपकी कक्षा और विद्यालय की स्थिति में यह कैसे सुधार करेगी।
- आप अपने शोध प्रष्न की पहचान कैसे करेंगे और इस प्रष्न को निर्मित करने में दूसरे विद्यालय के प्रषासकों, षिक्षकों और अन्य अधिकारियों को कैसे सम्मिलित करेंगे।

उद्देष्यः अपने षोध के उद्देष्यों के बारे में बताएँ।

शोध की योजनाः शोध की योजना का अभिलेख बनाते समय निम्नलिखित बातों को सम्मिलित किया जाएगाः

- यहाँ हम विद्यालय के संदर्भ में परिस्थिति विश्लेषण के कुछ निष्चित निर्णयों की व्याख्या कर सकते हैं, जोकि हमारे तात्कालिक क्षेत्र के अन्वेषण की पहचान में सहायक होंगे।
- हम क्या करना चाहते हैं और हमने इसको ही क्यों चुना, इसका विवरण यह हमारे विद्यालय के संदर्भ में कितना प्रासंगिक था और विद्यालय की गुणवत्ता बढ़ाने में यह कैसे अंतर उत्पन्न करेगा।
- शोध उपागम में प्रतिदर्ष जो कि क्रियात्मक शोध की प्रक्रिया में प्रयोग किए गए हैं। यह उपागम और प्रतिदर्ष हमारे शोध को किस प्रकार सुगम बनाएँगे?

न्यादर्ष और कार्य प्रणालीः शोध न्यादर्ष (यदि हो) के विषय में साधारण विवरण दीजिएः

- यह न्यादर्ष ही आपसे क्यों सम्बन्धित है, इस पर ध्यान केन्द्रित करना आपके विद्यालय की गुणवत्ता को सुधारने में कैसे सहायक होगा?
- आवष्यक सूचनाओं को एकत्र करने में प्रयोग की गई आँकड़े संकलन की तकनीकों के प्रकारों का वर्णन।
- विश्लेषण की प्रक्रिया और विश्लेषण के समय इसमें सम्मिलित व्यक्तियों का विवरण।

परिणामः

- आपके मुख्य परिणाम
- शोध प्रष्न के परिप्रेक्ष्य में परिणामों की चर्चा।

निष्कर्ष

- परिणामों से निष्कर्ष को प्राप्त करना
- हमारे परिणाम शैक्षिक कार्य पद्धति में हमारे, हमारे सहकर्मियों और हमारे विद्यालय के लिए परिवर्तन लाने में कैसे सहायक होंगे, का प्रदर्षन।
- आपके परिणाम क्रियात्मक शोध के अगले चक्र को कैसे प्रभावित करेंगे, इस पर विचार करना।

इस भाग में हमने यह जाना कि हमारी क्रियात्मक शोध परियोजना के प्रत्येक चरण का व्यवस्थित और सुस्पष्ट प्रतिवेदन तैयार करना क्यों इतना महत्वपूर्ण है। हमने उन विभिन्न बिंदुओं के बारे में भी जाना जिनके अंतर्गत पूरी क्रियात्मक शोध परियोजना का प्रतिवेदन बना सकते हैं।

क्रियाकलाप

क) क्रियात्मक षोध के लिए पाँच उपयुक्त विषयों को छाँटिए।

ख) क्रियात्मक षोध के प्रस्ताव हेतु एक विषय चुनकर उसके प्रत्येक चरण पर किए गए कार्यों का विस्तृत विवरण दीजिए।

14.9 सारांष

हमने देखा कि नवाचार और क्रियात्मक शोध दोनों क्रियाकलाप कार्य पद्धति और कार्य पद्धति की स्थिति में सुधार के उद्देष्य से षिक्षक द्वारा किए जाते हैं। दोनों का परिणाम परिवर्तन के रूप में दृष्टिगोचर होता है। कई बार नवाचार क्रियात्मक शोध की प्रक्रिया द्वारा आता है। हमारी चर्चा से यह स्पष्ट है कि कभी–कभी नवाचार विषयात्मक होता है और क्रियात्मक शोध वस्तुनिष्ठ प्रक्रिया है। अतः नवाचार को वैध, स्थायी (लम्बे समय के लिए) और लक्ष्य साध्य बनाने के लिए यह आवष्यक है कि नवाचार को शोध विशेषकर क्रियात्मक शोध का सहयोग मिलना चाहिए। इस इकाई के अध्ययन के पष्चात् यह स्पष्ट हो गया है कि नवाचार और क्रियात्मक शोध दोनों का उद्देष्य एक ही है। एक षिक्षक अपनी कार्य पद्धति में नियमित रूप से सुधार की आवष्यकता महसूस करता है इसलिए यह संदेह से परे है कि वे अपनी वृत्तिक आवष्यकताओं के कारण स्थायी क्रियात्मक शोध और नवाचारी है।

यह इकाई आपको अपनी क्रियात्मक शोध परियोजना की योजना बनाने में सहायक होगी। हमने विद्यालय और कक्षाओं की गुणवत्ता सुधार के विभिन्न मुद्दों को भी पहचानने का प्रयास किया है, और उन मुद्दों पर क्रियात्मक शोध की सुसाध्यता को जानने की कोषिष की है। क्रियात्मक शोध के परिणामों को विभिन्न आधारों पर जहाँ कहीं परिवर्तन की आवष्यकता हो उस सुसाध्यता के साथ अपनाया जा सकता है।

14.10 इकाई के अंत में अभ्यास

1) नवाचार क्या है? षिक्षक एक नवाचारी कैसे होता है?

2) नवाचार को परिभाषित कीजिए और इसकी विशेषताएँ बताइए। षिक्षा में नवाचारी कार्य–पद्धति में आप क्या देखते हों?

3) षिक्षक को क्रियात्मक शोधकर्त्ता क्यों होना चाहिए? क्रियात्मक शोध की विशेषताएँ बताइए।

4) क्रियात्मक शोध क्या है? इसके विभिन्न प्रकारों की व्याख्या कीजिए। क्रियात्मक शोध की प्रक्रिया का विस्तृत विवरण दीजिए।

14.11 बोध प्रष्नों के उत्तर

1) उत्पाद, प्रक्रिया और आदर्ष (अपने अनुभवों पर आधारित उदाहरणों का सुझाव दीजिए)।

2) नवाचार के भाग के अध्ययन के पष्चात् आपकी समझ पर आधारित उत्तर दीजिए।

3) क्रियात्मक शोध एक सतत् और चिंतनषील प्रक्रिया है जिसमें एक षिक्षक अपने विद्यालय और कक्षा के विषय में विभिन्न निष्कर्षों पर पहुँचता है। एक क्रियात्मक शोध मूलतः एक षिक्षक है जो अपनी दिन–प्रतिदिन की षिक्षण–अधिगम समस्याओं का समाधान करता है।

4) आवष्यक विशेषताएँ/गुण निम्नलिखित हैं:

   i) षिक्षा व्यवस्था का गहरा ज्ञान;

   ii) विद्यालय और कक्षा–आधारित क्रियाकलापों और कार्य पद्धति का गहरा ज्ञान और परख;

   iii) विद्यमान समस्याओं के समाधान द्वारा नए ज्ञान को खोजने की इच्छा;

   iv) विद्यालय और कक्षा में अपने प्रदर्षन में सुधार की इच्छा;

   v) आत्म प्रदर्षन क्रियाकलाप, जिसमें आत्मालोचना और आत्म–विश्लेषण सम्मिलित हैं।

   vi) ऐसे मुद्दे जिन्हें आगे बढ़ाने की आवष्यकता है, उनको स्थायी रूप से पहचानने के माध्यम से परिवर्तनों का प्रभाव जानने की इच्छा।

5) भाग 14.7 के अध्ययन के आधार पर स्वयं उत्तर दीजिए।

6) भाग 14.7 के अध्ययन के आधार पर स्वयं उत्तर दीजिए।

14.12 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पठन सामग्री

- कलॉम, ए.पी.जे. (2010). इनडॉमिटेबल स्प्रिंट. राजपाल एंड सन्सः नई दिल्ली
- कॉलहान. ई. (2002). एक्सन रिसर्च फॉर स्कूल इम्प्रूवमेंट, एजुकेशनल
- डी.ई.पी.–एस.एस.ए.(2013). एन्स्योरिंग क्वालिटी थ्रू एक्शन रिसर्च, ब्लाक 3, इनहासिंग स्कूल क्वालिटी थ्रू रिसर्च एंड इननोवेशन, नई दिल्ली, इग्नू
- क्रिकलैंड. के. एंड सुच.डी. (2009). ओवरकमिंग द बैरियर्स टू एजुकेशनल इननोवेशन्सः एक लिटरेचर रिव्यू, www.futurelab.org.bk से लिया गया।
- कॉस्टोफ आर.एन. (2003). स्टीमुलेटेड इननोवेशन, एल.वी. सावीनीनिया (संपादक) द इन्टरनेशनल हैडबुक ऑन इननोवेशन, नरगेमॉनः लन्दन, पृष्ठ–388–80
- मिल्स. जी. (2003). एक्शन रिसर्चः ए गाइड फॉर द रीवर रिसर्चर (दूसरा संस्करण) अपर सेडल रिवर, एन.जे.: मेरिल/प्रिटिंस हॉल
- मानवसंसाधन विकास मंत्रालय (1886). नई शिक्षा नीति, नई दिल्ली, भारत सरकार
- मानवसंसाधन विकास मंत्रालय (1992). कार्य योजना, नई दिल्ली, भारत सरकार
- मिशेल जे.एम. (2003). इमर्जिग फ्यूचर्सः इननोवेशन इन टीचिंग एंड लर्निंग वी.ई.टी.ए. एन. टी.ए. मेलबार्न
- एन.सी.ई.आर.टी. (2005) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, नई दिल्ली
- सब्बरवॉल. एन एवं पाण्डेय एस. (1998). इननोवेशनः कान्सेप्ट एंड नीड, शिक्षक प्रशिक्षक हेतु स्वआधिगम सामग्री, खंड 2, जी.एल. अरोड़ा एवं आर.के. चोपड़ा (संपादक), नई दिल्ली
- सुतर, डब्ल्यू.एन. (2006) इन्ट्रोडक्शन टू एजुकेशनल रिसर्चः ए क्रिटिकल थिंकिंग अप्रोच, थाउसेंड ओकः सी.ए. सेज

इकाई 15 मुक्त चिंतक के रूप में षिक्षक

संरचना

15.1 प्रस्तावना

15.2 उद्देष्य

15.3 चिंतनषीलता की अवधारणा

15.4 चिंतनषीलता पर विभिन्न परिप्रेक्ष्य

15.4.1 चिंतनषीलता पर डिवी के विचार

15.4.2 चिंतनषीलताः त्रिस्तरीय प्रगति के रूप में

15.4.3 चिंतनषील सोच का त्रिस्तरीय प्रतिमान

15.5 चिंतनषीलता के उपागम

15.5.1 ज्ञानात्मक उपागम

15.5.2 आलोचनात्मक षिक्षण उपागम

15.5.3 कथात्मक उपागम

15.6 चिन्तनशीलता के प्रोत्साहन की प्रविधियां

15.6.1 षिक्षक आख्यान

15.6.2 चिंतनषील जर्नल्स

15.6.3 चर्चा

15.6.4 सहयोगी अधिगम

15.6.5 भूमिका–अभिनय (रोल प्ले)

15.7 सारांष

15.8 इकाई के अंत में अभ्यास

15.9 बोध प्रष्नों के उत्तर

15.10 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पठन सामग्री

15.1 प्रस्तावना

एक षिक्षक बनने के एक महत्वपूर्ण पक्ष में, एक षिक्षक की भाँति एक चिंतक बनना और अपनी कार्य पद्धति के बारे में जागरूक रहना शामिल है ताकि षिक्षण और अधिगम के माध्यम से विकसित ज्ञान भविष्य की कार्य–पद्धति को सुधारने में उपयोग में लाया जा सके। चिंतनषीलता षिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण पक्ष है जो षिक्षकों को अपनी कार्य पद्धतियों को विश्लेषण करने और उनमें सुधार लाने में सहायक है। वास्तविक रूप में षिक्षण के विभिन्न पक्षों पर चिंतनषील होना अधिकांष षिक्षकों के लिए पूर्णतया स्वाभाविक है। हम सब अपने षिक्षण को मूल्यांकित करने का प्रयास करते हैं, विशेषकर जब एक खास सत्र में दुविधा का सामना करते हैं, और दूसरे सत्र में इसके लिए आवष्यक परिवर्तनों पर कार्य करते हैं। पूरे विष्व में चिंतनषीलता षिक्षक–षिक्षा कार्यक्रम की बुनियादी आवष्यकता बन रही है (हैंटन और स्मिथ, 1995)। सन् 1975 में षिक्षकों के दृष्टिकोण में निर्णयकर्ताओं से चिंतनषील वृत्तिकों की ओर बदलाव को स्पष्ट रूप से देखा गया जो सार्थक रचना करते हैं (क्लार्क 1986, स्होल, 1983)। कई वर्षों तक इसका अनुसरण किया गया। चिंतनषीलता को अच्छे षिक्षा का व्यापक अंग माना जाता था। अतः चिंतनषीलता क्या है और षिक्षार्थी–षिक्षकों में इसे बढ़ावा देने की क्या विधियाँ हैं? इस इकाई में हम चिंतनषीलता की अवधारणा, उपागम, विधियाँ और चिंतनषीलता तकनीकों पर चर्चा करेंगे।

15.2 उद्देष्य

इस इकाई के अध्ययन के पष्चात् आप :

- चिंतनषीलता की अवधारणा को समझ सकेंगे;
- चिंतनषील सोच के विभिन्न प्रतिमानों का विश्लेषण कर सकेंगे;
- चिंतनषील सोच के उपयुक्त उपागम की पहचान कर सकेंगे; और
- चिंतनषीलता को बढ़ावा देने के लिए विविध तकनीकों का उपयोग के बारे में जान सकेंगे।

15.3 चिंतनषीलता की अवधारणा

चिंतनषीलता हमारे दैनिक जीवन का अंग है। वैज्ञानिक शब्द अथवा पद के अनुसार जब प्रकाष किसी सतह के टकराने के फलस्वरूप अपनी दिषा बदल देता है तो परावर्तन होता है। इसी परावर्तन के कारण हम दर्पण में अपना प्रतिबिम्ब देखते हैं। जब इस सिद्धान्त को विचार–प्रक्रिया पर लागू किया जाता है, तो हम प्रतिदिन समस्याओं और स्थितियों की श्रृंखला पर चिंतन करते हैं। इसके लिए हम किसी विशेष सूत्र का अनुसरण नहीं करते। जैसे–जैसे किसी वस्तु के प्रति अनुभव, विचार और भावनाएँ उत्पन्न होती हैं यह स्वाभाविक रूप से संपन्न होता है। किसी समस्या या स्थिति के विभिन्न आयामों के विश्लेषण के परिणामस्वरूप हम अपने कार्यों की कार्य–प्रणाली निर्धारित करते हैं। इस प्रकार **"चिंतनषीलता एक प्रक्रिया है, जिसमें एक विस्तृत उद्देष्य से सम्बन्धित एक अनुभव का पुनःस्मरण किया जाता है, उसे समझा जाता है और उसका मूल्यांकन किया जाता है।"** यह विगत अनुभवों का प्रत्युत्तर है और नए अर्थ तथा व्याख्या की खोज में मूल्यांकन और निर्णय लेने के लिए विगत अनुभवों के परीक्षण को सम्मिलित करता है। तथापि चिंतनषीलता और चिंतनषील सोच शब्दों में अवधारणाओं और रणनीतियों की विस्तृत श्रृंखला सम्मिलित है। प्लेटो, अरस्तू, कन्फ्यूसियस, सोलोमन और बुद्ध ने चिंतनषील प्रथाओं का अनुगमन किया। परंतु डिवी को बीसवीं शताब्दी में इस शब्द का प्रणेता कहा जा सकता है, यद्यपि, बाद में शोधकर्त्ताओं तथा विचारकों द्वारा इस शब्द के रहस्य को प्रकाषित करने के कारण इस शब्द ने एक कठिन रूप ले लिया। चिंतनषीलता पर सर्वप्रथम डिवी (1916) द्वारा किए गए कार्य ने कई आधुनिक सिद्धान्तों को आधार प्रदान किया।

वाउड, क्योग और वाल्कर (1985) के द्वारा चिंतनषीलता को इस प्रकार परिभाषित किया गया है – **"वे बौद्धिक और उत्तेजक गतिविधियाँ जिनमें व्यक्ति नई समझ और अभिमूल्यन को प्राप्त करने के लिए अपने अनुभवों की छानबीन करने में संलग्न होते हैं"** (पृ. सं. 19)। रीड (1993) ने इसे एक सक्रिय प्रक्रिया माना है – **"कार्य–पद्धति का वर्णन, विश्लेषण, मूल्यांकन और इस प्रकार कार्य–पद्धति की सीख से अवगत होने के लिए कार्य–पद्धति का पुनरावलोकन करना"** (पृ. सं. 3)।

सारांष में हम कह सकते हैं कि **"चिंतनषीलता एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा षिक्षार्थी कुछ सूचित निर्णयों तक पहुँचने के लिए अपने स्वयं के अनुभवों का पुनःस्मरण और विश्लेषण करता है।"** यह चिंतन की एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी वस्तु के बारे में अपनी समझ को स्पष्ट करने के लिए हम जानबूझ कर उसके बारे में सोचते हैं। इसमें वस्तुओं के बीच सम्बन्ध को ध्यान में रखना, और उनका विश्लेषण और संश्लेषण करना सम्मिलित है। अन्य भाव में चिंतनषीलता स्वयं के और दूसरों के बारे में बेहतरर समझ का विकास करना है। चिंतनषीलता में चिंतनषील सोच की प्रक्रिया तक पहुँचा जाता है, जिसे तर्कपूर्ण और समालोचनात्मक ढंग से सोचने के कार्य के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी: क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें तथा अपने उत्तरों को नीचे दिए गए स्थान में लिखें।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की तुलना करें।

1) चिंतनषीलता शब्द से आप क्या समझते हैं?

....

....

....

....

....

15.4 चिंतनषीलता पर विभिन्न परिप्रेक्ष्य

आइए, अब हम कुछ चर्चा इस पर करते हैं कि विभिन्न विचारकों द्वारा चिंतनषीलता को कैसे समझा गया और परिभाषित किया गया।

15.4.1 चिंतनषीलता पर डिवी के विचार

डिवी (1933) ने चिंतनषीलता को विशिष्ट प्रकार के चिंतन के रूप में परिभाषित किया जिसका उद्‌गम किसी समस्या के समाधान की आवष्यकता से होता है और इसमें शामिल हैं: **"किसी विष्वास का सक्रिय, सतत् और सतर्क विचार या ज्ञान का मान्य रूप जिसके समर्थन के आधार हों।"** उन्होंने समस्या–समाधान के लिए पाँच–चरणीय माडल को प्रस्तावित किया, जिसमें सम्मिलित हैं: प्रष्न प्रस्तुत करना, परिकल्पना करना, विचार करना, परीक्षण करना और समाधान सुझाना। उसके अनुसार *"चिंतनषीलता एक समालोचक जाँच की प्रक्रिया है जो क्रमबद्ध, दृढ़ और अनुषासित ढंग से सोचने का तरीका है।''* डिवी के अनुसार षिक्षकों के लिए चिंतनषीलता की प्रक्रिया का आरंभ तब होता है, जब वे किसी समस्या या कठिनाई का अनुभव करते हैं जिसका तुरंत समाधान नहीं हो सकता। यह षिक्षकों को अपने अनुभवों का विश्लेषण करने और समाधान खोजने के लिए प्रेरित करता है। डिवी के लिए *"चिंतनषील सोच स्पष्ट रूप से बौद्धिक है और चिंतन का बेहतर तरीका है, क्योंकि यह हमें मात्र आवेगषील और सामान्य गतिविधियों का अनुसरण करने से मुक्त करता है।"* चिंतनषील सोच हमारी गतिविधियों को दिषा देने में दूरदृष्टि प्रदान करती है जिनका उद्देष्य हमें मालूम हैं। डिवी के लिए चिंतनषीलता अकेले हमें यह जानने के योग्य बनाती है कि **"हम क्या कार्य करने के लिए हैं"** (पृ. सं. 14)। डिवी ने समालोचनात्मक चिंतनषीलता पर बल दिया। उनके अनुसार एक व्यक्ति चिंतनषील तरीके से तभी सोच सकता है जब वह दुविधा को सहन करने के लिए इच्छुक हो और खोजने का कष्ट उठा सकता हो, समालोचनात्मक चिंतनषील विचारक बनने के लिए एक व्यक्ति को संदेह की स्थिति को बनाए रखने और उसे संरक्षित रखने का इच्छुक और योग्य होना आवष्यक है जो विस्तृत जाँच के लिए उद्दीपन है ताकि एक विचार को स्वीकार करना या किसी विष्वास पर सकारात्मक अभिकथन करना तब तक संभव नहीं होता जब तक कि उनको उचित सिद्ध करने के कारणों का पता न लग जाए (पृ. सं. 19)।

डिवी के अनुसार, "एक सही चिंतनषील व्यक्ति के लिए उसके स्वयं का गुण या दृष्टिकोण आवष्यक विशेषता है" (पृ. सं. 20)। षिक्षक–प्रषिक्षणार्थियों और षिक्षकों में चिंतनषील सोच

को बढ़ावा देने के लिए जिन पूर्वाकांक्षित दृष्टिकोणों को विकसित करने की आवष्यकता है, वे हैं : **उदार मानसिकता**, **दत्तचित्तता** और **उत्तरदायित्व।** उदार मानसिकता शब्द बताता है कि व्यक्ति सभी वैकल्पिक विचारों पर ध्यान देने का इच्छुक हो और विवेकषील बने। **उत्तरदायित्व** का अर्थ है सक्रियता से सत्य की खोज के लिए इच्छा और प्राप्त सूचना को समस्यात्मक स्थितियों में लागू करना। दत्तचित्तता से तात्पर्य है जिस पर व्यक्ति विष्वास करता/करती हैं उस पर सत्यता और दृढ़ विष्वास रखना। यह स्वयं को, बच्चों को विद्यालयों और समाज को अनिष्चितता और भय से मुक्त करना और आलोचनात्मक ढंग से मूल्यांकित करना, सुनिष्चित करता है। डिवी सामान्य कार्यों और चिंतनषील कार्यों के बीच महत्वपूर्ण अंतर करते हैं। चिंतनषीलता से तात्पर्य है कि किसी वस्तु पर विष्वास करने या न करने का कारण कुछ प्रमाण, साक्ष्य या कुछ आधार हैं।

यह सक्रिय और विचारषील ज्ञानात्मक प्रक्रिया है जिसमें आपस में सम्बन्धित विचारों की शृंखलाएँ सम्मिलित हैं। जो चल रहे विष्वासों और ज्ञान के आधार पर बनते हैं। संवेदनषील सोच व्यावहारिक समस्याओं को संबोधित करती है, संभव समाधानों तक पहुँचने से पूर्व संदेहों, आरक्षणओं और दुविधाओं के लिए पर्याप्त स्थान रखती है।

समस्या–समाधान प्रयासों से अधिक बातें सम्मिलित हैं। इसमें सहज–बोध, भावना और जुनून, आदि सम्मिलित हैं। यह क्रियात्मक है क्योंकि चिंतनषीलता का कार्य व्यवसाय में कुछ सुधार ला सकता है (बिग्स, 1999)। यह अपेक्षित है कि इसे कुछ कार्य और परिवर्तन होता है जो चिंतनषीलता की प्रकल्पित विशेषता है। चिंतनषील प्रथा में घटनाओं के प्रतिस्पर्धा संस्करणों का वस्तुनिष्ठ विश्लेषण सम्मिलित है। रोजर्स (2002, पृ. 845) ने डिवी के चिंतनषीलता के चारों मानदंडों को निम्नलिखित रूप से संक्षेप में प्रस्तुत कियाः

- चिंतनषीलता एक सार्थक बनाने की प्रक्रिया है जो षिक्षार्थी को एक अनुभव से दूसरे अनुभव तक इनका अन्य अनुभवों और विचारों के साथ सम्बन्धों और संपर्कों की गहन समझ के साथ ले जाता है।
- यह चिंतन का व्यवस्थित, दृढ़ और अनुषासित तरीका है जिसके मूल में वैज्ञानिक जाँच है।
- समुदाय में, अन्य लोगों के साथ अन्तर्क्रिया करने में इसकी आवष्यकता है।
- इसमें ऐसे दृष्टिकोण की आवष्यकता है जो स्वयं की और दूसरों की बौद्धिक वृद्धि का सम्मान करता है।

15.4.2 चिंतनषीलता : त्रिस्तरीय प्रगति के रूप में

वॉल मेनन (1977) ने चिंतनषीलता की अवधारणा को ''एक प्रगति जिसमें तीन विभिन्न स्तर सम्मिलित हैंः "तकनीकी, व्यावहारिक और आलोचनात्मक" के रूप में परिभाषित किया। तकनीकी स्तर उद्देष्यों की प्राप्ति हेतु उपयोग किए गए माध्यमों की दक्षता और प्रभाविकता से सम्बन्धित हैं जो आलोचना और संषोधन के लिए मुक्त नहीं होते। षिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में यह कक्षाकक्ष में कौषलों और तकनीकी ज्ञान का प्रभावी उपयोग करने से सम्बन्धित है। अतः चिंतनषीलता उपयोग की गई रणनीतियों के प्रभाव का विश्लेषण करने तक सीमित है।

व्यावहारिक चिंतनषीलता शैक्षिक लक्ष्यों के आकलन और षिक्षार्थियों द्वारा उन्हें कैसे प्राप्त किया जाता है से संबद्ध है। यह लक्ष्यों के मुक्त परीक्षण, साधन और मान्यताओं, जिन पर ये आधारित हैं, को अनुमति देता है। अतः यह अवस्था विशिष्ट कक्षाकक्ष प्रथाओं की आधारभूत मान्यताओं और षिक्षार्थी–अधिगम पर इन प्रथाओं के परिणामों के बारे में चिंतनषीलता है।

आलोचनात्मक चिंतनषीलता शैक्षिक लक्ष्यों के मूल्यों से सम्बन्धित है। यह इसके आकलन से भी सम्बन्धित है कि ये लक्ष्य कितनी अच्छी प्रकार से प्राप्त हो रहे हैं और इन लक्ष्यों के सफलतापूर्वक पूर्ण होने से कौन लाभान्वित होगा। यह अवस्था लिए गए निर्णयों के सदाचार–पूर्ण और नैतिक आयामों पर प्रष्न उठाती है। चिंतनषीलता के इस स्तर पर षिक्षक जिन समस्याओं का सामना करते हैं और उन्हें प्रभावित करने वाले विस्तृत सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक बलों/कारकों के बीच सम्बन्ध बनाते हैं।

चिंतनषीलता की प्रक्रिया और प्रविधि के स्पष्टीकरण और आलोचनात्मक चिंतनषील व्यक्तियों के लिए आवष्यक दृष्टिकोणों के सम्बन्ध में जहाँ डिवी का विचार अत्यंत महत्वपूर्ण है, वहीं मैक्स वेन मैनन के चिंतनषीलता के स्तर, आलोचनात्मक चिंतनषीलता की अवधारणा को स्पष्ट करने के तरीके के रूप में चिंतनषीलता की वस्तुओं पर केन्द्रित करने के लिए निर्णायक हैं।

डोनल्ड शॉन ने 1987 में "चिंतनषील प्रथा" का परिचय चिंतनषील सोच को परिभाषित करने के लिए दिया, शॉन के अनुसार चिंतनषील प्रथा में सम्मिलित है – किसी षिक्षा के विषय में वृत्तिकों द्वारा षिक्षण के दौरान ज्ञान को व्यवहार में लागू करने में अपने स्वयं के अनुभवों को विचारपूर्वक समझना। शॉन (1987) के चिंतनषीलता के विचार में चिंतनषीलता के तीन भिन्न प्रकार शामिल हैंः **कार्यों पर चिंतनषीलता, कार्यों में चिंतनषीलता,** और **कार्यों के लिए चिंतनषीलता।** शॉन (1983, 1987) के अनुसार चिंतनषील वृत्तिक कार्यों पर और कार्यों में चिंतन करते हैं।

कार्यों में चिन्तनशीलता

शॉन (1983) के अनुसार कार्यों में चिंतनषीलता में वृत्तिक के अनुभवों को अवलोकन करना, उनके अनुभवों के साथ जुड़ना और उपयोग में आ रहे प्रासंगिक सिद्धान्तों को अपनाना शामिल है। यह षिक्षकों द्वारा, जब वे सक्रियता से षिक्षण में संलग्न हों, निर्णय लेने की प्रक्रिया को संदर्भित करता है। दूसरे शब्दों में, षिक्षक अपने कक्षाकक्ष में अपने षिक्षार्थियों की आवष्यकताओं को संबोधित करने के लिए विकल्प खोजने के लिए अपने संचित अनुभवों और ज्ञान का उपयोग करता/करती है। बिना सोचे–समझे किसी उपागम का उपयोग करने के बजाय, शॉन ने कार्यों में चिंतनषीलता की तीन मुख्य विशेषताओं का वर्णन किया है। पहला कार्यों में चिंतनषीलता एक सचेतन प्रयास है। षिक्षक जब अधिगम की जिन स्थितियों को अनिष्चित और अद्वितीय पाती/पाता है, उन्हें अनुभव करने का सचेतन प्रयास करती/करता है। तब वह प्रयोगों को संचालित करता है, जिसका प्रतिफल घटना की नई समझ बनाने और षिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में परिवर्तन का सहजीकरण होता है (शॉन, 1983, पृ. 68)। दूसरा कार्य में चिंतनषीलता का एक गंभीर कार्य है – कार्यों में ज्ञान संरचना पर प्रष्न करना। यह संदर्भ की गहन समझ को बढ़ावा देता है और षिक्षकों के लिए आलोचनात्मक चिंतन के अवसर प्रदान करता है। कार्यों में चिंतनषीलता तत्काल अनुभव की गई समस्याओं की पहचान और शीघ्र समाधान पर बल देती है।

इस संदर्भ में शॉन ने कई शब्दों का उपयोग किया है जैसे – निहित ज्ञान, कार्यों/क्रिया में ज्ञान और कार्यों/क्रिया में चिंतनषीलता। शॉन के अनुसार **निहित ज्ञान** वह ज्ञान है जो हमारे पास जब हम कुछ कार्य कर रहे होते हैं तो स्वचालित और सहज होता है। इसमें विशेषताओं के व्यवस्थित विश्लेषण के बारे में चिंतन की आवष्यकता नहीं होती। उदाहरण के लिए, जब एक व्यक्ति वाहन चलाने के कौषल अर्जित कर लेता है और सड़क पर वाहन चलाने के नियम सीख लेता है, तो वाहन चलना स्वचालित और सहज–ज्ञान युक्त हो जाता है। वह बिना इसके बारे में सोचे हुए वाहन चलाती/चलाता है। अतः यह ज्ञान अनकहा या सहज ज्ञान है।

कार्यों में ज्ञान निहित ज्ञान के विचार से उत्पन्न हुआ है। यह ज्ञान के उस प्रकार को संदर्भित करता है, जिसे हम किस प्रकार से कार्य संचालित करते हैं और समस्याओं को संबोधित करते हैं, मात्र तभी व्यक्त करते हैं। यह निहित ज्ञान शोध और व्यवसायी के स्वयं के अनुभवों एवं चिंतनषीलता तथा अनुभवों से प्राप्त होता है।

क्रियात्मक चिंतनषीलता (कार्यों में चिंतनषीलता) हमारी मान्यताओं को चुनौती देने से सम्बन्धित है (क्योंकि क्रियात्मक ज्ञान हमारी मान्यताओं का आधार बनाता है)। यह तात्कालिक समस्याओं की पहचान और शीघ्र समाधान पर बल देता है। यह हमारे द्वारा सामना की गई समस्याओं के बारे में पुनः नए तरीके से चिंतन करने से संबोधित है। इस भाव में क्रियात्मक चिंतनषीलता का एक गंभीर कार्य है क्योंकि यह क्रियात्मक ज्ञान की संरचना पर प्रष्नचिह्न लगाता है, जो संदर्भ की गहरी समझ और आलोचनात्मक चिन्तन को बढ़ावा देता है।

क्रियाओं पर चिंतनषीलता प्रथाओं के बाहर संचालित होती है, जो चिंतनषीलता का विषय है। यह कार्य का आलोचनात्मक विश्लेषण और मूल्यांकन है और इस पर चिंतन करना है कि क्या हो सकता था यदि भिन्न कार्य प्रणाली को लागू किया गया होता। शॉन ने क्रियाओं पर चिंतनषीलता की अवधारणा का परिचय इस प्रकार दिया – एक पूर्व–प्रभावी प्रक्रिया जहाँ षिक्षार्थी या षिक्षक किसी घटना पर पुनः नजर डालते हैं और विश्लेषित करते हैं कि वे इससे क्या सीख सकते हैं। इस प्रक्रिया द्वारा षिक्षार्थी/षिक्षक किसी क्रिया में संषोधन निष्चित कर सकते हैं या पूर्व निर्धारित कार्यों के साथ आगे बढ़ सकते हैं। अतः यह एक बार पूर्ण किए गए प्रकार के चिंतन को संदर्भित करता है। षिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में निर्देषात्मक प्रक्रिया के दौरान षिक्षक अपने कार्यों का सतर्कतापूर्ण पुनरावलोकन कर सकते हैं। यह विवेचना की अधिक व्यवस्थित प्रक्रिया है जो आगे की षिक्षण–अधिगम के नियोजन हेतु विश्लेषण पुनर्रचना और पुनःरूपांतरित को सक्षम करती है। क्रियात्मक चिंतनषीलता से भिन्न यह आवष्यक नहीं है कि यह अन्य वृत्तिकों से अलगाव की स्थिति में संचालित नहीं किया जा सकता।

क्रिया के लिए चिंतनषीलता में संदर्भ कार्य प्रमाण आधारित प्रथाओं द्वारा प्रभावित होते हैं और व्यक्तिगत विकासात्मक योजना के उपयोग द्वारा संरचित होते हैं। क्रिया पर चिंतनषीलता किसी व्यक्ति के एक कार्य के पूर्ण हो जाने पर उसके कार्यों और विचारों पर चिंतन करना है। जबकि क्रियात्मक चिंतनषीलता कार्यों के बीच में स्वाभाविक चिंतन है। इसके विपरीत क्रिया के लिए चिंतनषीलता पहले दो प्रकार की चिंतनषीलता का वांछित प्रतिफल है। यह षिक्षक द्वारा लिए गए निर्णयों के लिए उत्तरदायित्व और जवाबदेही सुनिष्चित करती है।

यद्यपि शॉन ने चिंतनषील सोच की व्याख्या क्रियात्मक चिंतनषीलता, क्रिया पर चिंतनषीलता और क्रिया के लिए चिंतनषीलता की सहायता से करने का प्रयास किया तथापि ये अन्तर्संबंधित हैं और अलग अवधारणाएँ नहीं हैं। शॉन का योगदान महत्वपूर्ण हैं क्योंकि व्यावसायिक प्रथाओं के विकास में चिंतनषीलता की समझ के लिए उन्होंने योगदान किया। उन्होंने तर्क दिया कि वृत्तिक अपने दैनिक जीवन के कार्य में अद्वितीय और जटिल समस्याओं का सामना करते हैं जिनका समाधान मात्र तकनीकी–तार्किक प्रतिमान द्वारा नहीं किया जा सकता। क्रियात्मक चिंतनषीलता और क्रिया पर चिंतनषीलता की प्रक्रिया द्वारा इन जटिल समस्याओं/स्थितियों के समाधान प्राप्त किए जा सकते हैं।

15.4.3 चिंतनषील सोच का त्रिस्तरीय प्रतिमान

चिंतनषीलता की अवधारणा के वर्णन से स्पष्ट है कि "यह चिंतन की एक प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति सूचित विकल्प बनाता है।" चिंतनषील सोच के श्रेणीबद्ध प्रकृति के बारे में विभिन्न

विद्वानों के बीच मतभेद है। परंतु चिंतनषील सोच के कुछ प्रतिमान व्यापक रूप से स्वीकार किए जाते हैं। वॉन मैनन, टेगर्ट और विल्सन (1998) ने चिंतनषीलता के तीन स्तरों वाले पिरामिड प्रतिमान का विकास किया। इसमें तीन स्तर सम्मिलित हैंः तकनीकी, संदर्भित और द्वंद्वात्मक।

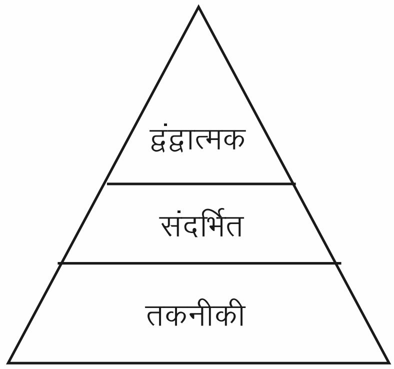

चित्र 15.1ः चिंतनषील सोच का पिरामिड प्रतिमान

तकनीकी चिंतनषीलता

वान मेनन (1977) द्वारा इसे चिंतनषील सोच का प्रथम स्तर माना। इस स्तर पर शैक्षिक ज्ञान और बुनियादी पाठ्यक्रम सिद्धान्तों तक "कैसे" प्रष्नों द्वारा पहुँचा जाता है। इस चिंतनषीलता में निम्नलिखित सम्मिलित हैंः

– अवलोकनों का सरल वर्णन

– विगत अनुभवों से प्राप्त व्यवहार, विषयवस्तु और कौषलों या पढ़ने/पाठ्यक्रम काम से निकाले गए सिद्धान्तों पर बल।

– उद्देष्यों के एक समुच्चय (सैट) की प्राप्ति के लिए षिक्षण क्षमताओं का कार्यान्मुखी दृष्टिकोण।

– उपयुक्त शैक्षिक षब्दावली का उपयोग।

चिंतन के इस माध्यम द्वारा षिक्षक पाठ्यक्रम निर्देषन और साथ ही निदानात्मक और नियंत्रण सम्बन्धी मुद्दों को संबोधित कर सकते हैं।

संदर्भगत चिंतनषीलता

इस स्तर में कक्षाकक्ष की प्रथाओं की आधारभूत मान्यताएँ और पूर्ववृत्ति से सम्बन्धित चिंतनषीलता सम्मिलित है। यह शैक्षणिक मुद्दों और तकनीकी – चिंतनषीलता के स्तर से समझौता करता है। इस स्तर की समस्याएँ षिक्षकों को संदर्भगत स्थितियों पर चिंतन करने के लिए प्रेरित करती हैं जिससे कक्षाकक्ष की प्रथा के लिए अवधारणाएँ, संदर्भ और सैद्धांतिक आधार की समझ विकसित हो सकती है। इस अवस्था में शामिल हैंः

- अधिगम को प्रभावित करने वाली प्रथाओं पर चिंतन;
- समस्या के संदर्भ पर चिंतन;
- सिद्धान्त को व्यवहार से सम्बन्धित करने पर चिंतन; और
- विभिन्न विकल्पों पर चिंतन।

संदर्भगत चिंतनषीलता शैक्षणिक मुद्दों और सिद्धान्त एवं व्यवहार के बीच सम्बन्ध से सरोकार रखती है। इस स्तर पर वृत्तिक चिंतन का प्रतिफल कक्षाकक्ष प्रथाओं का संदर्भ, सैद्धांतिक

आधार के साथ समझना और उसके बाद उन प्रथाओं को लागू करना और उन प्रथाओं की प्रासंगिकता षिक्षार्थी की प्रगति के लिए स्पष्ट करना, होता है।

द्वंद्वात्मक चिंतनषीलता

इस प्रकार की चिंतनषीलता षिक्षण प्रथा से परोक्ष या अपरोक्ष रूप से सम्बन्धित नैतिक और सदाचारपूर्ण मुद्दों के प्रष्नों से सरोकार रखती हैं। इस अवस्था में वृत्तिक ज्ञान के मूल्य और षिक्षार्थियों के लिए उपयोगी बिना पक्षपातपूर्ण सामाजिक परिस्थितियों पर चिंतन करता है। यह चिंतन का सर्वोच्च स्तर है जो वृत्तिक को सूचित विकल्पों का निर्माण करने और घटनाओं को उदार विचारों के साथ देखने में सहायता पहुँचाता है। वृत्तिक ज्ञानतंत्र और संदर्भ सिद्धान्तों एवं उनका एक–दूसरे से सम्बन्ध का विश्लेषण करता है, आधारभूत मान्यताओं, मानकों एवं नियमों का आलोचनात्मक परीक्षण करता है, आत्म–निरीक्षण, उदार मानसिकता और बौद्धिक उत्तरदायित्व का निर्वाह करता है (डिवी, 1933) और षिक्षण, निर्देषनात्मक नियोजन एवं क्रियान्वयन के नैतिक और सदाचारपूर्ण मुद्दों पर प्रष्न करता है। ये सब उच्च स्तर के चिंतन के अंग हैं और द्वंद्वात्मक स्तर पर पाए जाते हैं।

अतः द्वंद्वात्मक चिंतनषीलता में सम्मिलित हैं:

- प्रथाओं पर व्यवस्थित रूप से प्रष्न करना;
- विकल्पों और प्रतिस्पर्धापूर्ण सिद्धान्तों को सुझाना;
- कार्य करने के दौरान निर्णयों और परिणामों पर चिंतन करना; और
- सदाचारपूर्ण, नैतिक और सामाजिक–राजनीतिक मुद्दों को चर्चा हेतु प्रस्तुत करना।

इस प्रकार की चिंतनषीलता को रूढ़िबद्ध और पक्षपातपूर्ण मान्यताओं का कथानक और कहानी सुनाना, देखभाल और चिंताओं के प्रभावित करने वाले तत्वों पर कार्य करना और विद्यालय वातावरण एवं षिक्षा में समाज की भूमिका के विश्लेषण द्वारा सहजीकृत किया जा सकता है।

15.5 चिंतनषीलता के उपागम

चिंतनषील सोच पर साहित्य, षिक्षकों के चिंतनषील सोच के संदर्भ में सामान्यतः तीन उपागमों का वर्णन करता हैः ज्ञानात्मक, आलोचनात्मक और कथानक उपागम। ज्ञानात्मक उपागम का सम्बन्ध षिक्षक के सूचना संसाधन और निर्णय लेने से है, जबकि आलोचनात्मक उपागम का आधार सदाचार और नैतिक विचार हैं। कथात्मक उपागम, षिक्षकों द्वारा समस्या प्रस्तुतीकरण, व्यष्टि (केस) अध्ययन और प्राकृतिक खोज–बीन आदि के माध्यम से अपनी स्वयं की कहानी कहना (कथानक) को संदर्भित करता है।

15.5.1 ज्ञानात्मक उपागम

ज्ञानात्मक उपागम षिक्षक के ज्ञान और निर्णय लेने की प्रक्रिया पर केन्द्रित है। शुलमान (1987) ने ज्ञान के छः वर्गों की पहचान की हैं – विषयवस्तु, शैक्षणिक प्रक्रिया, पाठ्यक्रम, षिक्षार्थियों की विशेषताएँ, संदर्भ और शैक्षिक उद्देष्य, प्रयोजन एवं लक्ष्य। बाद में शुलमान ने षिक्षक ज्ञान में सातवाँ वर्ग को जोड़ा; शैक्षणिक विषयवस्तु का ज्ञान, जिसमें पहले तीन वर्ग समाहित हैं। यह प्रदर्षित करता है कि षिक्षक अपनी विषयवस्तु पर महत्वपूर्ण विचारों को किस प्रकार प्रस्तुत करते हैं। ज्ञानात्मक उपागम इस बात पर बल देता है कि ज्ञान के आधार को किस प्रकार तथ्यों, अवधारणाओं, सामान्य नियमों और अनुभवों सम्बन्धी तंत्र में संगठित किया जाता है। ये संगठित संरचनाएँ 'स्कीमेटा' कहलाती है, जो संसार के बारे में

व्यक्ति की समझ बनाती है। शोध की प्राप्तियाँ इंगित करती हैं कि स्कीमेटा का विकास षिक्षकों के अनुभवों से सम्बन्धित होता है। परिणामस्वरूप अनुभवी षिक्षकों के पास सामान्य षिक्षकों से अधिक विकसित स्कीमा होते हैं। अतः ये स्कीमा षिक्षकों के अनुभवों द्वारा संयोग और समायोजन की प्रक्रिया की सहायता से निर्मित होते हैं।

15.5.2 आलोचनात्मक षिक्षण उपागम

यह उपागम ज्ञान को सामाजिक रूप से निर्मित समझता है। यह ज्ञान स्थानीय संस्कृति, संदर्भ और रीति–रिवाजों द्वारा निर्धारित और प्रभावित होता है (एन.सी.एफ.–2005)। ज्ञानात्मक उपागम इस बात पर केन्द्रित है कि षिक्षक किस प्रकार निर्णय लेते हैं, जबकि आलोचनात्मक उपागम इस बात पर बल देता है कि उन निर्णयों में क्या है। यह कार्य षिक्षकों के सामाजिक–राजनीतिक उपयोगिता के संदर्भ में उनके अनुभवों, मूल्यों और लक्ष्यों के परीक्षण द्वारा किया जाता है। आलोचनात्मक उपागम अधिकांषतः आलोचनात्मक षिक्षण प्रक्रिया के रूप में समझा जाता है। मेक लारेन (1989) ने कहा, "आलोचनात्मक षिक्षण षिक्षकों और शोधकर्ताओं को विद्यालयों द्वारा जाति, वर्ग और लिंग के आधार पर विभाजित समाज में वास्तव में क्या भूमिका का निर्वाह किया जाता है" की बेहतर समझ के साधन प्रदान करता है (पृ.सं. 163)। एन.सी.एफ., 2005 ने इसकी व्याख्या इस प्रकार की है – वह षिक्षण प्रक्रिया जो लिंग, जाति, वर्ग और वैष्विक असमानताओं के प्रति संवेदनषील है, आय विभिन्न व्यक्ति और सामूहिक अनुभवों की अभिपुष्टि ही नहीं करती बल्कि शक्ति की विस्तृत संरचना में उन्हें स्थापित करती है और प्रष्न उठाती है। जैसे : किसको किसके लिए बात करने की अनुमति है? किसके लिए ज्ञान सबसे अधिक मूल्यवान हैं? इसके लिए विभिन्न षिक्षकों हेतु भिन्न रणनीतियों की आवष्यकता होती है। उदाहरण के लिए कक्षा में 'बोलना' को प्रोत्साहित करना कुछ बच्चों के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है। जबकि अन्य के लिए दूसरों को सुनना (पृ.सं. 24)। अतः षिक्षकों के लिए षिक्षण को एक जाँच प्रक्रिया के रूप में समझने करने की आवष्यकता है और षिक्षार्थियों के मूल्यों और दृष्टिकोणों पर षिक्षण हेतु अपनाई गई रणनीतियों के दीर्घकालीन प्रभाव के बारे में चिंतन करने की भी आवष्यकता है।

15.5.3 कथात्मक उपागम

कोकहरन–स्मिथ और लाइटल (1990) के अनुसार, "षिक्षण के ज्ञान–आधार में जो रिक्ति है ..... वह षिक्षकों की स्वयं की आवाज है, जो प्रष्न षिक्षक पूछते हैं, जिस तरीके से षिक्षक लिखने का उपयोग करते हैं, अपने कार्य क्षेत्र में जानबूझ कर बात करते हैं और षिक्षक अपनी कक्षाकक्ष प्रथाओं को समझने एवं सुधारने के लिए जिन व्याख्यात्मक सोच का उपयोग करते हैं" (पृ.सं. 2)। यह उपागम षिक्षकों की व्यक्तिगत परिस्थितियों (जिनमें वे निर्णय लेते हैं) के स्वयं द्वारा विवरण पर बल देता है। षिक्षक, कक्षाकक्ष घटनाओं के बारे में जिस रूप में वर्णन, विश्लेषण और निष्कर्ष निकालते हैं, वैसे ही वे स्वयं के शैक्षणिक सिद्धान्तों की रचना करते हैं। इस अनुभव द्वारा प्राप्त सूचना प्रायः सहज होती है और विश्लेषण करने में कठिन होती है।

बोध प्रश्न

टिप्पणीः क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें तथा अपने उत्तरों को नीचे दिए गए स्थान में लिखें।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की तुलना करें।

2) क्रियात्मक चिंतनषीलता और क्रिया पर चिंतनषीलता में क्या अंतर है?

....

....

....

....

....

3) त्रि–स्तरीय चिंतनषीलता प्रतिमान का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

15.6 चिन्तनशीलता के प्रोत्साहन की प्रविधियां

भावी षिक्षकों में चिंतनषीलता विकसित करने के लिए बदलाव करने की आवष्यकता है, जहाँ वे स्वयं के अंदर परिवर्तन लाने के लिए अभिप्रेरित हों। पोलार्ड एवं अन्य (2005) ने कहा है कि "चिंतनषील षिक्षण से तात्पर्य हैः लक्ष्यों और परिणामों, साथ ही साधन और तकनीकी सक्षमता के साथ सक्रिय संबद्धता" (पृ. 15)। चिंतनषील षिक्षक षिक्षा का मुख्य उद्देष्य षिक्षार्थी–षिक्षकों में यह समझ विकसित करना है कि एक विशेष षिक्षण विधि को क्यों लागू करना चाहिए, और षिक्षार्थियों पर सकारात्मक प्रभाव के लिए वे अपने षिक्षण में किस प्रकार सुधार ला सकते हैं? परिवर्तन की इस प्रक्रिया को षिक्षक–षिक्षकों द्वारा विभिन्न माध्यमों के उपयोग से प्रोत्साहित और सहजीकृत किया जा सकता है। चिंतनषीलता को बढ़ावा देने के लिए षिक्षक प्रषिक्षक कोः

1) षिक्षार्थी–षिक्षकों को उनकी स्वयं की अधिगम आवष्यकताओं के प्रति जागरूक बनने में सहायता करनी चाहिए।
2) षिक्षार्थी–षिक्षकों को विचारधीन मुद्दों के बहु–परिप्रेक्ष्य प्रदान करने चाहिए।
3) षिक्षार्थी–षिक्षकों का उपयोगी अनुभव प्राप्त करने में सहजीकरण करना चाहिए।
4) षिक्षार्थी–षिक्षकों को इन अनुभवों पर विस्तार से चिंतन करने में सहायता करनी चाहिए।

अपने पूर्व–अनुभवों पर चिंतन द्वारा षिक्षक–प्रषिक्षार्थी अपनी अधिगम–आवष्यकताओं के प्रति जागरूक हो सकते हैं। इन अनुभवों की सहायता से वे आवष्यक अधिगम स्थितियों को जानने में समर्थ हो जाते हैं। हमारे विद्यालय अनुभव कार्यक्रमों में हम पर्यवेक्षक की प्रतिपुष्टि और षिक्षण के बाद चर्चा का प्रावधान रखते हैं, जो साधारणयता दैनिक कार्य के रूप में उपयोग में लाया जाता है और यह षिक्षक–प्रषिक्षणर्थी को चिंतन और आगे सुधार के लिए थोड़ा अवसर प्रदान करता है या इसे बिल्कुल भी उपयोग में नहीं लाया जाता। षिक्षण–अभ्यास के बाद षिक्षक–प्रषिक्षणार्थियों को उनके स्वयं के अनुभवों पर चिंतन के लिए सक्षम बनाने में मेंटर या पर्यवेक्षक के साथ चर्चा करना महत्वपूर्ण साधन हो सकता है। यहाँ तकनीकी का उपयोग एक मुख्य भूमिका निभा सकता है और षिक्षक–प्रषिक्षणार्थियों के कुछ पाठों की श्रृव्य या दृश्य रिकार्डिंग उनके लिए चिंतन के दर्पण की भाँति कार्य कर

सकता है। इस प्रकार की रिकार्डिंग कक्षाकक्ष व्यवस्था की कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं का उत्तर देने का अवसर प्रदान करती है और षिक्षक–प्रषिक्षणार्थी को अपनी कक्षाकक्ष की प्रथाओं की समस्याओं और उपलब्धियों का विश्लेषण करने में सहजीकृत करती हैं।

अब प्रष्न उठता है कि एक षिक्षक–षिक्षक षिक्षक–प्रषिक्षणार्थियों के बड़े समूह के साथ कार्य करते हुए चिंतनषीलता को किस प्रकार बढ़ावा दे सकता है? षिक्षकों में चिंतनषीलता की सोच को कई प्रकार से बढ़ावा दिया जा सकता है। जैसे – षिक्षक–कथात्मकताएँ, चिंतनषील जर्नल्स का रखरखाव, ऊँचे स्वर में याद करना, अधिगम–आवष्यकताओं की रचना द्वारा चर्चाएँ, सहभागी समूह कार्य, क्रियात्मक शोध, भूमिका अभिनय (रोल प्ले), विचार–मंथन, और प्रष्न–पूछना, आदि। इन तकनीकों में से प्रष्न पूछना शायद सबसे प्राचीन तकनीकों में से एक है, जो षिक्षार्थियों और षिक्षकों के अंतर्गत ऐसे मुद्दों के विभिन्न पक्षों पर सार्थक रूप से चिंतन हेतु सहजीकृत करते हैं जो अन्यथा उपेक्षित रहते हैं। यह षिक्षार्थियों को मुद्दों की पहचान में सहायक है, मूल्यों के स्पष्टीकरण में मददगार है और समस्याओं आदि की गहन अर्न्तदृष्टि के विकास में सहजीकृत करता है।

15.6.1 षिक्षक आख्यान

आख्यानात्मक चिंतनषीलता मानव–क्रिया को समझने का निर्देष है और प्रत्येक क्रिया के विशेष और विशिष्ट गुणों पर बल देती है। आख्यान (कथनात्मक) को सोचने का तरीका माना जाता है (ब्रूनर, 1996), और मानव अनुभवों की समृद्धि को प्रस्तुत करने के लिए विशेष रूप से उपयोगी है। आख्यानों द्वारा मानव अपने ज्ञान की रचना में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। षिक्षकों के कक्षाकक्ष में स्वयं के अनुभवों पर उनके आख्यान (आत्मकथाएँ) चिंतनषीलता विकसित करने में महत्वपूर्ण हैं। एरष्लर (2001) स्वीकार करते हैं कि "अधिगम के महत्वपूर्ण प्रतिमानों में से एक है – स्वयं के अनुभवों पर चिंतन करना"। अपने स्वयं के अनुभवों पर आँकड़े एकत्रित करने का एक तरीका हैः कक्षाकक्ष के दैनिक अनुभवों को लिखना। तथापि, यह चिंतन अव्यवस्थित तरीके से नहीं होता। एरष्लर ने कथात्मक चिंतनषील की विधि का वर्णन किया है। प्रारंभ के लिए षिक्षक–प्रषिक्षणार्थी को अपने षिक्षण–अभ्यास की विभिन्न घटनाओं या उदाहरणों का वर्णन करने के लिए कहा जा सकता है।

दूसरे चरण में, इन अनुभवों की समूह के सदस्यों के साथ विस्तारपूर्वक चर्चा की जाती है। साधारणतया षिक्षक विशिष्ट घटनाओं पर बल देते हैं जो सुनाए जाते हैं। इसके बाद बृहद संदर्भ में इनके बीच सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया जाता है और अलग छूटी हुई घटना का अवलोकन किया जाता है। षिक्षक–प्रषिक्षणार्थी अन्यों के अनुभवों को सुनकर कुछ अनुभवों को ग्रहण कर लेते हैं जबकि सुनाने वाले अपने स्वयं के अनुभवों से बाहर आ सकते हैं और स्वयं का तथा अन्य षिक्षक के रूप में विशेष षिक्षण–अधिगम स्थिति में विश्लेषण करने का अवसर प्राप्त करते हैं। यह उन्हें अपनी सबलता और दुर्बलता को स्पष्ट और विशिष्ट से देखने में और उसी के अनुसार सुधार करने में सहायक होता है। आख्यान स्वाभाविक रूप से सामाजिक और तार्किक होते हैं और सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ से अलग नहीं किए जा सकते हैं जिनमें वे उत्पन्न होते हैं। श्रीजला और एस्टोला (1999) के अनुसार "आख्यान सेवा–पूर्व षिक्षकों को उनके भूतकाल, वर्तमान और भविष्य काल को उनकी षिक्षण–प्रथाओं को सुदृढ़ करने और पोषित करने की आषा के साथ जोड़ते हैं (पृ.सं. 8)।

15.6.2 चिंतनषील जर्नल्स

चिंतनषील जर्नल्स लिखने की अवधारणा ने चिंतनषील षिक्षण के संदर्भ में प्रमुख स्थान प्राप्त किया है। अतः चिंतनषील जर्नल्स क्या है? यह स्वयं के साथ, सामग्री, षिक्षकों और साथियों के साथ संप्रेषण एवं वार्ता का माध्यम है। यह आलोचनात्मक चिंतन के विकास में

सहायक है, स्वयं के विचारों एवं ज्ञान के संश्लेषण का मंच है और प्रतिपुष्टि प्रदान करता है। चिंतनषील जर्नल्स, डायरी के समान कुछ समय के अंतर्गत अनुभवों और घटनाओं को रिकार्ड करता है। यह षिक्षक–प्रषिक्षणार्थियों को स्वयं के कक्षाकक्ष व्यवहार पर चिंतन करने और साथ ही अपने विद्यालय–अनुभव कार्यक्रम की अन्य छोटी–छोटी घटनाओं पर चिंतन करने का अवसर प्रदान करता है। चिंतनषील जर्नल्स, षिक्षक–प्रषिक्षणार्थियों को षिक्षण–अधिगम अनुभवों के सम्बन्ध में उनकी शैक्षणिक समझ को बेहतर तरीके से समझने में सहायता के लिए महत्वपूर्ण उपकरण हैं। जर्नल लिखने में उन्हें निम्नलिखित प्रकार से सहायता मिलती हैः

- विद्यालय अनुभव कार्यक्रमों के उद्देष्यों के प्रति चिंतनषील होना और अन्तर्दृष्टि विकसित करना।
- उन गहन मुद्दों पर प्रकाश डालना जो उनके द्वारा कक्षा लेते समय में नहीं समझे जा सकें।
- अपनी सबलता और निर्बलता पर चिंतन करना।

अतः चिंतनषील जर्नल्स, सरल रूप में पाठ्य–सामग्री का सारांश नहीं है, बल्कि यह षिक्षक–प्रषिक्षणार्थियों की उन्होंने क्या सीखा, देखा, अवलोकित और अनुभव किया, पर उनकी प्रतिक्रिया एवं आत्म निरीक्षण पर अधिक केन्द्रित है। जर्नल लिखने का कोई एक तरीका नहीं है, और इसे कई तरीकों से विकसित किया जा सकता है। चिंतनषील जर्नल की प्रविष्टियों में निम्नलिखित प्रविष्टियों सम्मिलित हो सकती हैंः

- वक्तव्य का सूक्ष्म सारांष, षिक्षण–अभ्यास, प्रयोगषाला गतिविधियाँ समूह चर्चा या पठन सामग्री आदि का सारांष।
- की गई गतिविधियों पर चिंतन करना, अपने स्वयं के अनुभव, विचार और प्रतिक्रियाओं को रिकार्ड करना और इन पर चिंतन करना।
- आपके मस्तिष्क में जो अवधारणाएँ, प्रष्न और संदेह आ रहे हों, उनको लिखना।
- विद्यालय–अनुभव/इंटर्नषिप की महत्वपूर्ण घटनाएँ।
- कक्षाकक्ष में उठाई गई समस्याओं के संभव समाधान खोजना।
- रचनात्मक और नवाचारी तरीके से नई अंतर्दृष्टियों और समस्या–समाधान की रणनीतियों को रिकार्ड करना।
- कुछ विचार जिनकी पूर्ण अवधारणा न समझी गई हो और उनके अधिक स्पष्टीकरण की आवष्यकता हो।

षिक्षक–प्रषिक्षणार्थियों को अपने अधिगम अनुभवों/घटनाओं पर चिंतन करने और अधिगम की विषयवस्तु एवं प्रक्रिया के बारे में उनके स्वयं के निर्णयों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। यह क्रियात्मक चिंतनषीलता का पुनर्बलन करता है क्योंकि इससे षिक्षक–प्रषिक्षणार्थी सिद्धान्त एवं व्यवहार के बीच एकीकरण की बेहतर समझ का विकास करते हैं। यह आत्म–जागरूकता या उच्चसंज्ञानात्मकता का विकास भी करता है, उदार मानसिकता की ओर उन्मुखीकरण, और स्वनिर्देषित अधिगम के प्रति उत्तरदायित्व स्वीकारने की इच्छा का विकास करता है। इसके अतिरिक्त अवलोकन की गहरी समझ, आलोचनात्मक चिंतन और तर्कपूर्ण विश्लेषण का विकास भी करता है। चिंतनषील लेखन के कुछ मुहावरे हैंः मैं सोचती/सोचता हूँ ..., मैंने अनुभव किया ..., मुझे जानकारी थी..., मैं अब सोचती/सोचता हूँ ... मुझे असुविधाजनक लगा ... और पीछे देखती/देखता हूँ .... आदि।

क्रियाकलाप 1

एक षिक्षक–प्रषिक्षणार्थी होने के नाते आप बी.एड. कार्यक्रम के प्रथम वर्ष में किसी माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय में इंटर्नषिप के लिए जाएँगे। इंटर्नषिप के दौरान आपको एक चिंतनषील जर्नल बनाना चाहिए और अपने कार्यक्रम अध्ययन केन्द्र पर कार्यषाला के दौरान उसे प्रेषित करें।

15.6.3 चर्चा

चर्चा प्रषिक्षक के लिए एक बुनियादी षिक्षण उपकरण है, जहाँ वह प्रशिक्षु–षिक्षकों को एक समान लक्ष्य की ओर कार्य करते हुए उन्हें सूचना का आदान–प्रदान, मतों या अनुभवों को साझा करने के अवसर उनकी समझ उत्पन्न करने के लिए प्रदान करता है। सहजकर्ता (षिक्षक–प्रषिक्षक) परोक्ष रूप से बिना सम्मिलित हुए समूह चर्चा का अवलोकन करता है और प्रोत्साहन प्रदान करता है। चर्चा के उपागमों में से एक उपागम विचार–मंथन है जो षिक्षार्थियों में चिंतनषील सोच के विकास में उपयोगी है। यह षिक्षक–प्रषिक्षणार्थियों को अपने विचार मुक्त रूप से साझा करने और षिक्षार्थियों की निःसंकोच प्रतिभागिता को प्रोत्साहित करने में सहायक है।

15.6.4 सहयोगी अधिगम

सहयोगी अधिगम षिक्षण युक्तिओं का एक समूह है, जिसे संरचित समूहों में विशिष्ट अधिगम और अंतर्वैयक्तिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए षिक्षार्थियों की सहायता के लिए उपयोग में लाया जाता है (कौचक एवं एगेन, 1998)। सहयोगी अधिगम को यदि उपयुक्त ढंग से लागू किया जाए तो यह व्यक्ति की उपलब्धियों को परम्परागत निर्देषन के उपागम की तुलना में अधिक सुधार सकता है, जो षिक्षार्थी की उच्च अभिप्रेरणा, सक्रिय–भागीदारी और विभिन्न कार्यों में अधिक समय देना को भी सुनिष्चित करता है। तथापि प्रभावषाली बनाने के लिए इसे षिक्षक द्वारा सुनियोजित और व्यवस्थित ढंग से संचालित करना होगा। हम शिक्षार्थियों को मात्र समूहों में विभाजित करने और उन्हें पूरा करने के लिए कुछ काम सौंपने से हम अधिगम को सुनिष्चित नहीं कर सकते। समूह–कार्य की सफलता को सुनिष्चित करने की बहुत विशिष्ट विधियाँ हैं। सहयोगी समूह में प्रत्येक षिक्षार्थी के पास एक विशिष्ट कार्य होता है और अधिगम में प्रत्येक सम्मिलित होता है। सहयोग के आवष्यक अंग हैंः सकारात्मक परस्पर निर्भरता, आमने–सामने की अंतर्क्रिया, व्यक्तिगत एवं सामूहिक जवाबदेही, अन्तर्वैयक्तिक और लघु समूह कौषल तथा समूह प्रसंस्करण (जॉनसन, जॉनसन और होल्यूबेक, 1993)। अतः यह आवष्यक है कि अधिगम को सुनिष्चित करने के लिए इन तत्वों को सहयोगी समूह कार्य में न्यायसंगत तरीके से संरचित किया जाए, प्रभावी सहयोगी अधिगम के लिए अधिगम में समूह–लक्ष्य, व्यक्तिगत जवाबदेही और सफलता के लिए समान अवसर आवष्यक रूप से सम्मिलित होने चाहिए।

सहयोगी अधिगम तकनीक के निम्नलिखित लाभ हैंः

– यह षिक्षार्थियों में अधिगम और शैक्षिक – उपलब्धि को बढ़ावा देता है।
– यह षिक्षार्थी प्रतिधारण में वृद्धि करता है।
– यह अधिगम अनुभवों के साथ षिक्षार्थी संतुष्टि को सुदृढ़ करता है।
– यह षिक्षार्थियों को मौखिक संप्रेषण के कौषल विकास में सहायक है।
– यह षिक्षार्थी के सामाजिक कौषलों का विकास करता है।

– यह षिक्षार्थी के आत्मसम्मान को बढ़ाता है।

– यह सकारात्मक सम्बन्धों को बढ़ावा देने में सहायक हैं।

15.6.5 भूमिका अभिनय (रोल प्ले)

शैक्षिक या प्रषिक्षण तकनीक के रूप में भूमिका अभिनय (रोल प्ले) चिंतनषील षिक्षण का एक अंग है, भूमिका अभिनय का सबसे सरलतम रूप है कि किसी व्यक्ति से कहा जाए कि वह या अन्य व्यक्ति किसी विशेष परिस्थिति में हैं, इसकी कल्पना करें। उससे तब ठीक उसी प्रकार व्यवहार करने के लिए कहा जाता है जैसे कि उसके विचार में वह व्यक्ति करता है। ऐसा करने के परिणामस्वरूप, वह और बाकी प्रतिभागी उस व्यक्ति या स्थिति के बारे में कुछ सीखते हैं। भूमिका अभिनय के लिए स्थितियाँ सरल या विस्तृत, परिचित और अपरिचित हो सकती हैं। उन्हें विस्तार से वर्णित किया जा सकता है या भूमिका निभाने वाले को कल्पना के लिए छोड़ दिया जाता है। भूमिका अभिनय में प्रतिभागियों को किसी विशेष कार्य स्थिति में पुनः निर्वाह करने के लिए कहा जाता है ताकि जिस भूमिका का निर्वाह करने के लिए उन्हें दिया गया है, वे उनकी वास्तविक अनुभूति प्राप्त कर सकें। ये अनुभव उनके ज्ञान में वृद्धि करते हैं और दूसरों के व्यवहारों एवं उनके स्वयं के विचारों और भावों को समझने में सहायक होते हैं। भूमिका अभिनय :

– षिक्षक–प्रषिक्षणार्थियों के लिए सहायक है क्योंकि यह प्रतिभागियों को वास्तविक जीवन स्थितियों में पहुँचने का अवसर प्रदान करता है।

– प्रतिभागियों में आत्मविष्वास विकसित करता है।

– उन्हें स्वतंत्र रूप से कार्य करने में सहायता करता है।

– उनमें संप्रेषण और मानव–अंतर्क्रिया के कौषलों को सुदृढ़ करता है।

भूमिका अभिनय के संगठन के लिए आपको सर्वप्रथम, एक प्रसंग चुनना है। इसके बाद प्रतिभागियों को उनके द्वारा निर्वाह की जाने वाली भूमिकाओं के बारे में संक्षिप्त रूप से बताया जाता है। साथ ही भूमिका को किस प्रकार निभाना है, यह भी बताया जाता है। अभिनय के बाद चर्चा की जाती है कि क्या हुआ? एक विशेष तरीके से यह क्यों हुआ? किस प्रकार के परिवर्तन बेहतर या खराब परिणाम ला सकते थे? आदि। इससे षिक्षक–प्रषिक्षणार्थियों में बेहतर दृष्टि विकसित करने में सहायता मिलती है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी: क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें तथा अपने उत्तरों को नीचे दिए गए स्थान में लिखें।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की तुलना करें।

4) षिक्षकों में चिंतनषीलता को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न तकनीक क्या हैं? किस गतिविधि को आप सबसे उपयुक्त मानते हैं और क्यों?

....

....

....

....

....

....

15.7 सारांष

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 की कल्पना के अनुसार षिक्षक–षिक्षा एक परिवर्तन के दौर से गुजर रही है जो एक आमूलचूल परिवर्तन का परिणाम है और राष्ट्रीय षिक्षक–षिक्षा रूपरेखा, 2009 में दी गई षिक्षक–षिक्षा सम्बन्धी दृष्टि के अनुकूल भी है। चिंतनषीलता जीवन का एक अंग है और हम दिन–प्रतिदिन की स्थितियों पर चिंतन करते हैं और विभिन्न विकल्पों की जाँच के बाद उनके समाधान ढूँढ़ते हैं, जो एक समाधान तक पहुँचता है। चिंतनषील सोच उदार मानसिकता, पूर्ण हार्दिकता और बौद्धिक उत्तरदायित्व के दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है। चिंतनषीलता सहज ज्ञान को सुव्यक्त बनाती है। षिक्षकों एवं षिक्षक–प्रषिक्षणार्थियों में मुक्त चिंतनषीलता को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि इसके द्वारा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 और राष्ट्रीय षिक्षक–षिक्षा रूपरेखा–2009 में कल्पित परिवर्तनों को वास्तविकता में लाया जा सकता है। इस इकाई में चिंतनषील सोच का अर्थ और अवधारणा, चिंतनषीलता की प्रक्रिया और इसे षिक्षक–प्रषिक्षणार्थियों में बढ़ावा देने की तकनीकों के बारे में विस्तार से चर्चा की गई है। षिक्षण के चिंतनषील उपागम में सम्मिलित हैंः षिक्षण के प्रति हमारे दृष्टिकोण में परिवर्तन और षिक्षण प्रक्रिया में हमारी भूमिका। चिंतनषील षिक्षण इंगित करता है कि अनुभव को चिंतनषीलता के साथ जोड़ना षिक्षक–विकास का शक्तिषाली उपकरण बन सकता है।

15.8 इकाई के अंत में अभ्यास

- षिक्षक–निर्माण कार्यक्रम के लिए चिंतनषील सोच क्यों महत्वपूर्ण है? चिंतनषील सोच में चिंतनषील जर्नल किस प्रकार योगदान कर सकता है? चर्चा कीजिए।

15.9 बोध प्रष्नों के उत्तर

1) चिंतनषीलता एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा षिक्षार्थी कुछ सूचित निर्णयों पर पहुँचने के लिए अपने स्वयं के अनुभवों का पुनःस्मरण और विश्लेषण करती/करता है।

2) क्रियात्मक, चिंतनषीलता षिक्षकों द्वारा सक्रियतापूर्ण संलग्नता के साथ षिक्षण के दौरान निर्णय लेने की प्रक्रिया को संदर्भित करती है। क्रिया पर चिंतनषीलता हैः क्रिया का आलोचनात्मक विश्लेषण और मूल्यांकन तथा यह चिंतन करना है कि यदि भिन्न कार्य–पद्धति अपनाई गई होती तो क्या होता?

3) त्रिस्तरीय चिंतनषीलता की प्रक्रिया के तीन चरण हैंः तकनीकी, संदर्भित और द्वंद्वात्मक।

4) शिक्षक आख्यान मितनशील जर्नल, चर्चा सहयोगी अधिगम, भूमिका अभिनय, आदि।

15.10 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पठन सामग्री

- बिग्स, जे. (1999), *टीचिंग फॉर क्वालिटी लर्निंग एट यूनिवर्सिटी,* बकिंधमः ओपन यूनिवर्सिटी प्रेस।

- बाउड डी. कौफ, आर. और बाल्कर डी. (1985), *रिफ्लेक्षनः टर्निंग एक्सपीरियन्स इन टू लर्निंग,* लंदनः कोगन पेज।

- बुलोउह, आर. (1989). "टीचर एजुकेषन एंड टीचर रिफलेक्टिविटी", *जर्नल ऑफ टीचर एजुकेषन,* 42(1), 43–51।

- ब्रूनर, जे. (1996). *दि नरेटिव कंट्रअल ऑफ रिएलिटी,* बोस्टनः हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- क्लॉर्क, सी.एम., (1986). "टेन इयर्स ऑफ कन्सेप्चुअल डेवलपमेंट ऑन टीचर थिंकिंग", इन एम. बे पेरेज़, आर. ब्रोमी एवं आर. होल्कस (संपा.) *एडवान्सेस ऑफ रिसर्च इन टीचर थिंकिंग,* लिस्सः स्वेट एंड जैटलिंगर।
- क्लेडर हैड, जे., एवं गेट्स, पी. (1993), *कन्सप्चेलाइजिंग रिफ्लेक्षन इन टीचर डेवलेपमेंट,* लंदनः फाल्मर प्रैस।
- ड्रिक्स, जे.एम. (1989). "सेल्फ रिफ्लैक्षन इन क्लीनिकल प्रेक्टिसः यूजिंग ग्रुप प्रौसेसस टू इंप्रूव प्रैक्टिसनर – क्लाइंट रिलेषनषिप्स" पेपर प्रेजेंटेड इन दि अमेरिकन एजुकेषनल रिसर्च एसोसिएषन, सेन फ्रांसस्सिको।
- डिवी. जे. (1916). *डेमोक्रेसी एंड एजुकेषन : एन इंट्रोक्षन टू फिलोसफी ऑफ एजुकेषन,* न्यूयॉर्कः मैकमिलन।
- डिवी, जे. (1933). *हाव वी थिंकः ए रिस्टेटमेंट ऑफ दि रिलेषन ऑफ रिफ्लैक्टिव थिकिंग टू एजुकेटिव प्रौसेस,* षिकागोः हैनरी रिजनेरी।
- एर्सलर, ए. आर. (2001): "दि नेरेटिव एज इन एक्सपीरियंस टेस्टः राइटिंग देमेसेल्वस बैक इन", इन लाइबरमैन ए., मिलर, एल. (संपा.), *टीचर्स कोट इन एक्षनः प्रौफेषनल डेवलेपमेंट दैट मैटर्स,* न्यूयार्कः टीचर कालेज प्रैस।
- हेट्टन, एन. एवं स्मिथ, डी. (1995). "रिफ्लैक्षन इन टीचर एजुकेषन – टूवर्ड्स डैफ्नीषन एंड इम्पलीमेंटेषन" *टीचिंग एंड टीचर एजुकेषन,* 11 (1), 33–39।
- हौपकिंस, सी.डी. एवं आट्स, आर. एल. (1990), *एजुकेषनल रिसर्चः ए स्ट्रक्चर फॉर इन्क्यावरी,* (तृतीय संस्करण), इटास्का, आई.एल. एफ. ई. पीकांक।
- जॉनसन, डी. डब्ल्यू., जॉनसन, आर.टी. एवं होल्यूबैक, ई. जे. (1993), *कोपोरेषन इन दि क्लासरूम,* (छठा संस्करण), एडीना, एम. एनः इंटरेक्षन बुक कम्पनी।
- कौचर, डोनाल्ड, पी. एवं थौल, डी.ई. (1998), *लर्निंग एंड टीचिंग,* एलायन एंड बेकनः बोस्टन।
- मिश्रा, एस. एवं पांडा एस. (2007), "डिजाइनिंग रिफ्लैक्टिव एक्टीविटीज़ फॉर डिस्टेस लर्निंग मैटीरियल्स" *इंडियन जर्नल ऑफ ओपन लर्निंग,* 16(1) 7–23।
- मैक लारेन, पी. (1989), *नाइफ इन स्कूल्स,* न्यूयार्कः लॉगमैन।
- एन.सी.ई.आर.टी. (2005). *नेषनल केरिकुलम फ्रेमवर्क (NCF) – 2005,* नई दिल्ली : एन.सी.ई.आर.टी.।
- एन.सी.टी.ई. (2009). *नेषनल केरिकुलम फ्रेमवर्क फॉर टीचर एजुकेषन* (NCFTE) – *2009,* नई दिल्ली : एन.सी.टी.ई.।
- पांडा, एस. एवं जुवाह, सी. (2006). "प्रोफेषनल डेवलेपमेंट ऑफ ऑनलाइन फैसीलिटेर्स इन एनहांसिंग इंटरेक्षन एंड इंगेजमेंटः ए फ्रेमवर्क" इन जुवाह, सी. (संपा.). *इंटरेक्षन इन ऑनलाइन एजुकेषनः इम्पलीकेषन्स फॉर थ्योरी एंड प्रैक्टिस,* लंदनः राउटलैज।
- पोलार्ड, ए., कोलिंस, जे. सिम्को, एन., स्वाफफील्ड, एस. एवं वॉरविक, पी. (2005), *रिफ्लैक्टिव टीचिंग,* (द्वितीय संस्करण), लंदनः कंटीनम।

- रोजर्स, सी. (2002), "डिफाइनिंग रिफ्लेक्षनः एनदर लुक एट जॉन डिवी एवं रिफ्लैक्टिव थिंकिंग", *टीचर्स कालेज रिकार्ड,* 104(4) 842–866।
- रीड, बी. (1993), "व्हॉट वी आर डूइंग इट आलरेडी "एक्सप्लोरिंग ए रिस्पोंस टू दि कोनसेप्ट ऑफ रिफ्लैक्टिव प्रैक्टिस इन आर्डर टू इम्प्रूव इट्स फेसीलिटषन", *नर्स एजुकेषन* टू डे, 13, 305–309।
- शान, डी. ए. (1993). दि रिफ्लैक्टिव प्रैक्टिसनरः हाऊ प्रोफेसनल्स थिंक इन एक्षन, न्यूयॉर्कः बेसिक बुक्स।
- शान, डी. (1987). एजुकेटिंग दि रिफ्लैक्टिव प्रैक्टिसनरः टूवर्ड्स ए न्यू डिजाइन फॉर टीचिंग एंड लर्निंग इन प्रोफेसनल्स, जोस्से –बासः सेन फ्रांसिसको।
- स्लाविन, आर. (1995), कोओपरेटिव लर्निंग (द्वितीय संस्करण), नीधाम हाइट्स, एम.ए. : एलायन एंड बेकन।
- स्मिथ, ए. एवं जैक, के. (2005): रिफ्लैक्टिव प्रैक्टिसः ए मीनिंगफुल टॉस्क फॉर स्टुडेंट्सः नरसिंग स्टैण्डर्ड्स, 19(26), 33–37।
- सिरजला, एल. एवं एस्टोला, ई. (1999), टेलिंग एंड रिटेलिंग स्टोरिज एज ए वे टू कंस्ट्रक्ट टीचर आइडेनंटीटिस एंड टू अंडरस्टेड टीचिंग, पेपर प्रेजेंटड एट दि यूरोपियन कांफ्रेंस ऑन एजुकेषनल रिसर्च, लाहरी, फिनलैंड, 22–25, सितम्बर 1999।
- शुलमन, एल. (1987). नॉलेज एंड टीचिंग, फाउंडेषन ऑफ न्यू रिफोर्म, *हार्वर्ड एजुकेषनल रिव्यू,* 57, 1–22।
- टागर्ट, जी. एल. एवं विल्सन, ए. पी. (1998). प्रोमोटिंग रिफ्लैक्टिव थिंकिंग इन टीचर्स, 44 एक्षन स्ट्रेटजीस, थाउजेंड ओक्स, सी.ए.:क्राउन प्रैस।
- वान, एम. (1977). लिकिंग वेज ऑफ नॉलेज विद वेज ऑफ बीइंग प्रैक्टिकल, करीकुलम इनक्वाइरी, 6, 205–208।
- षिदा, बी.डी. एवं षिदा, ए.के. (2008). *टीचिंग ऑफ सोषल साईन्स,* नई दिल्ली : आर्य बुक डिपो।
- यूनेस्को एवं इंटरनेषनल सोषल साईन्स काउंसिल (2010). फ्रांसः वर्ल्ड सोषल साईन्स रिपोर्ट।

इकाई 16 शिक्षकों का वृत्तिक विकास

इकाई की रुपरेखा

16.1 प्रस्तावना

16.2 उद्देश्य

16.3 शिक्षण एक व्यवसाय के रुप में

- 16.3.1 व्यवसाय से तात्पर्य
- 16.3.2 व्यवसाय की विशेषताएँ
- 16.3.3 शिक्षण व्यवसाय की विशेषताएँ

16.4 वृत्तिक विकास की आवश्यकता एवं महत्व

16.5 वृत्तिक विकास हेतु सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण

16.6 सतत वृत्तिक विकास

- 16.6.1 ज्ञान का नूतनीकरण
- 16.6.2 कक्षाकक्ष शिक्षण में सुधार
- 16.6.3 नवोदित चुनौतियों का सामना करना
- 16.6.4 वृत्तिक सम्बन्धों का निर्माण

16.7 सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी (आइ.सी.टी.) के माध्यम से सतत वृत्तिक विकास

- 16.7.1 संसाधनों तक पहुंच हेतु सूचना एवं संप्रेषक तकनीकी
- 16.7.2 अंतर्क्रिया एवं पारस्परिक सहयोग
- 16.7.3 सामाजिक सम्पर्कतंत्र (सोशल नेटवर्किंग)
- 16.7.4 इ–कॉन्फ्रेंस एवं वेबिनार

16.8 सारांश

16.9 अभ्यास कार्य

16.10 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें

16.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

16.1 प्रस्तावना

इस खंड की पिछली इकाइयों में हमने शिक्षक की विविध भूमिकाओं यथा, शिक्षक नवाचारकर्ता के रुप में, शिक्षक क्रियात्मक शोधकर्ता के रुप में तथा शिक्षक चिन्तन अभ्यासकर्ता के रुप में, आदि का विश्लेषण किया। ये सारी भूमिकाएँ, एक पेशेवर व्यक्ति के रुप में शिक्षक की भूमिका को व्यक्त करती हैं। शिक्षकों का सतत विकास एवं संवर्धन शिक्षण–अधिगम के निरंतर परिवर्तित हो रहे लक्ष्यों को प्राप्त करने की मुख्य शर्त है। आपके लिए वृत्तिक विकास क्यों आवश्यक है? वृत्तिक विकास में शिक्षक की क्या भूमिका है? शिक्षकों के विशेषतः, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के वृत्तिक विकास के क्या–क्या साधन हैं? आदि प्रश्नों की चर्चा इस इकाई में की गई है। इस इकाई में शिक्षकों के वृत्तिक विकास के वर्तमान प्रणाली का विश्लेषण किया गया है तथा उनके व्यावसायिक कौशल एवं दक्षता को विकसित एवं अद्यतन (नूतन) करने के लिए नए–नए उपाय सुझाए गए हैं ।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

16.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप :

- शिक्षण को एक व्यवसाय के रुप में समझ सकेंगे;
- शिक्षकों के वृत्तिक विकास के महत्व को समझ सकेंगे;
- शिक्षकों के वृत्तिक विकास के वर्तमान व्यवस्था की आलोचनात्मक व्याख्या कर सकेंगे;
- वृत्तिक विकास के विविध उपागमों एवं साधनों को पहचान पाएँगे;
- शिक्षकों के सतत वृत्तिक विकास में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की सक्षमता की जाँच कर सकेंगे; तथा
- शिक्षकों के सतत वृत्तिक विकास में सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी की विवेचना कर सकेंगे।

16.3 शिक्षण एक व्यवसाय के रुप में

शिक्षण को व्यवसाय के रुप में समझने से पहले यह समझें कि वास्तव में व्यवसाय है क्या?

16.3.1 व्यवसाय से तात्पर्य?

व्यवसाय को एक ऐसे पेशे के रुप में परिभाषित किया जा सकता है जिसके लिए विशिष्ट अध्ययन एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है और जिसका उद्देश्य निश्चित शुल्क या पारिश्रमिक के बदले सेवा या निर्देश प्रदान करना होता है। हाँलाकि कुछ व्यावसायी बिना भुगतान के भी सेवा प्रदान करते हैं।

व्यवसाय, जीवनवृत्ति है और इससे आशय ज्ञान के संचयन, कौशलों के संचयन तथा मानवता की सेवा के लिए उनके अनुप्रयोग से है। एक व्यवसायिक व्यक्ति द्वारा दी गई सेवा प्रत्यक्ष भी हो सकती है यथा, शिक्षक एवं चिकित्सक के द्वारा दी गई सेवा और अप्रत्यक्ष भी यथा, शिक्षक–प्रशिक्षकों के द्वारा दी गई सेवा। यह सेवा जनसंख्या की एक सीमित मात्रा को सीमित समय के लिए या जीवन की एक निश्चित/सीमित अवस्था के लिए दी जा सकती है। यह सेवा सभी विद्यार्थियों, स्नातकों, परास्नातकों को नहीं दी जाती है बल्कि यह उन्हें प्रदान की जाती है जिसमें इस व्यवसाय के लिए अभिक्षमता होती है। यह इस उद्देश्य से सीमित समय के लिए दिया जाता है कि व्यक्ति व्यवसाय में आने से पहले प्रशिक्षण लेगा तथा उसके बाद एक निश्चित समय अंतराल में अपने ज्ञान तथा कौशल को नूतन करता रहेगा।

इसे दूसरे तरीके से भी समझा जा सकता है। किसी व्यवसायिक व्यक्ति का ग्राहक(क्लाइंट) यदि किसी संस्था में कार्यरत है या किसी संस्थानिक संरचना का अंग है तो वह अपने ग्राहक को अपनी सेवाएँ सीमित अवधि के लिए प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, एक शिक्षक जो कि एक व्यवसायिक व्यक्ति है, शिक्षार्थियों को अपनी सेवाएँ एक सीमित अवधि जब तक कि वे विद्यालय, महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में होते हैं, तबतक ही प्रदान करता है। एक व्यवसाय का अभ्यास संस्थागत रुप से या स्वतंत्र रुप से या दोनों प्रकार से किया जा सकता है। इसका आशय यह है कि यदि शिक्षण को एक व्यवसाय माना जाता है तो शिक्षक विद्यार्थियों को स्वतंत्र रुप से भी पढ़ा सकता है और शिक्षकों के एक समूह के साथ विद्यालय के भीतर भी।

अब तक हमने यह सीखा कि एक व्यवसाय, विशिष्ट अध्ययन एवं प्रशिक्षण पर आधारित होता है। यह जनसंख्या के एक निश्चित भाग को एक निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति हेतु एक निश्चित अवधि के लिए दक्ष सेवा एवं निर्देशन प्रदान करता है। इसका अभ्यास स्वतंत्र रुप से भी किया जा सकता है और संस्था से जुड़कर भी किया जा सकता है।

16.3.2 व्यवसाय की विशेषताएँ

एक व्यवसाय की कुछ निश्चित विशेषताएँ होती हैं। ये निम्नलिखित हैं:

i) एक व्यवसाय विशिष्ट ज्ञान युक्त एवं विस्तृत व्यावहारिक प्रशिक्षण की माँग करता है;

ii) व्यवसाय आवश्यक रुप से सामाजिक सेवा प्रदान करता है;

iii) व्यवसाय में शामिल व्यक्तियों के लिए सतत सेवारत प्रशिक्षण आवश्यक है;

iv) व्यवसाय की सदस्यता एक निश्चित समूह में व्यवसाय के हित को सुरक्षित रखने के लिए होती है;

v) व्यवसाय की अपनी अचार संहिता होती है; तथा

vi) व्यवसाय अपने सदस्यों के व्यावसायिक जीवन को सुनिश्चित करता है।

उपरोक्त विशेषताओं के आधार पर यह स्पष्ट है कि एक व्यवसाय की विशेषताओं का स्वरुप जटिल होता है। आइए उन्हें और अधिक स्पष्ट रुप में समझने का प्रयास करें।

व्यावसायिक संगठनों का निर्माण, आचार संहिता विकसित करना, व्यवसाय के सदस्यों को जीवन वृत्ति प्रदान करना तथा कार्यों का बँटवारा करना सबकुछ व्यापार संघों या निर्देशकों द्वारा साझा किया जाता है। फिर अंतर क्या है? व्यवसाय को व्यवसाय दो मानकों के आधार पर कहा जाता है। व्यवसाय दो कार्यों को करने का दावा करता है। पहला सेवा करना तथा दूसरा सचेतनता, समझदारी एवं दक्षता के साथ सेवा करना। जहाँ अन्य पेशे सिर्फ सेवा करते हैं व्यवसाय सिर्फ सेवा ही नहीं करता है बल्कि सेवा करने को अपना मुख्य उद्देश्य भी मानता है। ग्राहक एवं समाज के हितों में द्वन्द की स्थिति में समाज के हित को प्राथमिकता दी जाती है। व्यवसाय एवं पेशे में मुख्य अंतर यह है कि व्यवसाय ज्ञान की समृद्धि एवं विशेषज्ञता के आधार पर सुस्थापित होता है। इसके सदस्यों में परोपकारिता एवं प्रामाणिक ज्ञान की प्राप्ति की ललक जैसे अच्छे गुण होते हैं जो इसे पेशे से अलग करते हैं।

16.3.3 शिक्षण व्यवसाय की विशेषताएँ

शिक्षण को एक व्यवसाय के रुप में क्यों देखा जाता है, इसे समझने के लिए हम शिक्षण की विशेषताओं पर प्रकाश डालेंगे। एक व्यवसाय के रुप में शिक्षण की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:

i) **यह आवश्यक रुप से एक बौद्धिक कार्य है**

ऐसा कहा जाता है कि शिक्षण सिर्फ बातचीत करना नहीं है। ऐसा इसलिए कहा जाता है क्योंकि शिक्षण में अधिगम की क्रियाओं को निरंतर संगठित करना पड़ता है तथा उचित एवं सहयोगी अधिगम वातावरण का निर्माण करना पड़ता है। अधिगम अनुभवों को प्रदान करते समय शिक्षक को कक्षागत वातावरण का निरंतर विश्लेषण एवं मूल्यांकन करना होता है तथा शिक्षार्थियों के एक ऐसे समूह, जो रुचि एवं सीखने की गति के आधार पर एक–दूसरे से भिन्न होते हैं, के व्यवहार में पूर्व निर्धारित परिवर्तनों को प्राप्त करने हेतु एक उपयुक्त कार्य योजना विकसित करनी पड़ती है। वैसी सभी क्रियाएँ जो एक शिक्षक द्वारा संचालित की जाती है, बौद्धिक क्रियाएँ होती हैं।

ii) यह अपनी सामग्री विज्ञान से लेता है

शिक्षण सिर्फ कला ही नहीं बल्कि विज्ञान भी है। इस मान्यता के आधार पर शिक्षक को प्रशिक्षित किया जा सकता है। शिक्षण को विज्ञान मानते ही, इसके साथ कुछ निश्चित सोपान जुड़ जाते हैं जिसका अनुगमन शिक्षक को प्रशिक्षित करते समय किया जाता है।

iii) यह उपलब्ध सामग्री को व्यावहारिक एवं निश्चित उद्देश्यों के अनुसार परिवर्तित करता है

शिक्षण व्यवसाय में शिक्षार्थी अपरिपक्व सामग्री को संगठित करते हैं। इन शिक्षार्थियों को निरंतर विकसित हो रहे समाज, जिसकी विविध आकाँक्षाएँ होती हैं, को पढ़ाने के लिए तैयार किया जाता है। शिक्षण एवं शिक्षण सभी अन्य क्रियाओं की जानकारी देते हुए शिक्षार्थियों को व्यावहारिक एवं निश्चित उद्देश्यों का प्रशिक्षण दिया जाता है।

iv) यह शैक्षिक रुप से संप्रेषणीय तकनीक से युक्त होता है

एक विज्ञान होने के कारण शिक्षण तकनीक व्यवस्थित होते हैं एवं इनके सोपान क्रमबद्ध होते हैं। इसका संप्रेषण सुगमतापूर्वक हो जाता है।

v) इसकी प्रवृत्ति स्व–संगठन की होती है

स्व–संगठित होने से आशय यह है कि शिक्षण की व्यवसाय में शामिल व्यक्ति वृद्धि एवं विकास के प्रति संवेदनशील होते हैं । वो शिक्षण व्यवसाय के मानकों को उन्नत करने एवं उसे स्थायित्व प्रदान करने के लिए एक निश्चित प्रणाली का विकास करते हैं।

vi) यह आवश्यक रुप से सामाजिक सेवा है

शिक्षण एक सामाजिक सेवा है। यह सर्व साधारण द्वारा स्वीकार किया जा चुका है कि शिक्षा राष्ट्र में परिवर्तन लाने का सशक्त माध्यम है। संयुक्त राज्य अमेरिका, रुस, आदि जैसे विकसित देश इस कथन के स्पष्ट उदाहरण है। ये और अन्य देश शिक्षा की उच्च दर के कारण निरंतर विकास कर रहे हैं। शिक्षण के द्वारा समाज का विकास होता है।

vii) यह उच्चस्तरीय स्वायत्तता से युक्त होता है

पूर्व में इस बात की चर्चा की जा चुकी है कि विज्ञान होने के कारण शिक्षण में निश्चित सोपानों का अनुसरण करना पड़ता है। हालाँकि पाठ्यक्रम निर्माण, एक वर्ष के लिए गतिविधियों की योजना बनाना, अनुदेशनात्मक उद्देश्यों का निर्माण करने, शिक्षण विधियों का निर्धारण करने, शिक्षण सामग्री का निर्धारण करने, मूल्यांकन के मानकों को निश्चित करने, नामांकन एवं प्रोन्नति के विनिश्चयन हेतु मूल्यांकन के समुचित विधियों को निश्चित करने तथा पाठ्य सहगामी क्रियाओं के नियोजन एवं क्रियान्वयन,आदि समस्त शिक्षण कार्यों में उच्च स्तरीय स्वायत्तता होती है । इन सारे कार्यों का नियोजन शैक्षिक उद्देश्यों को, जिन्हें कि एक निश्चित अवधि में पूरा करना होता है, को ध्यान में रखकर किया जाता है।

viii) अध्ययन एवं प्रशिक्षण की अवधि लंबी होती है

शिक्षण कार्य एक वर्ष या दो वर्ष में नहीं सीखा जा सकता है। इस व्यवसाय में प्रवेश के लिए इच्छुक व्यक्ति को कई वर्षों तक अध्ययन करना पड़ता है और विषयवस्तु पर स्वामित्व हासिल करना पड़ता है। इसके बाद उसे शिक्षण का प्रशिक्षण लेना पड़ता है।

ix) **यह क्रमबद्ध ज्ञान पर निर्भर करता है**

शिक्षण व्यवसाय क्रमबद्ध ज्ञान पर निर्भर करता है जिसे जीवन के सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक, रजनीतिक, तथा आर्थिक पक्षों से व्युत्पन्न किया जाता है। यह समाज के धार्मिक एवं आध्यात्मिक विश्वासों से भी प्रभावित होता है।

x) **इसकी अपनी एकसामान्य आचार–संहिता होती है**

पूरे विश्व में शिक्षण व्यवसाय के लिए लगभग एक समान आचार–संहिता है।

xi) **यह सेवाकालीन विकास को जन्म देता है**

शिक्षण व्यवसाय में शिक्षक शिक्षण के प्रत्येक स्तर पर सीखता है। यह शिक्षक के सेवाकालीन विकास को प्रोत्साहित करता है।

इन सब के अतिरिक्त शिक्षा एक गत्यात्मक अनुशासन है। शिक्षण विधियों एवं अन्य आधारभूत पाठ्यक्रमों से संबंधित नवीन ज्ञान का निरंतर विकास हो रहा है। एक सेवारत प्रशिक्षित शिक्षक के लिए नवीन ज्ञान का अर्जन एवं पहले से अर्जित ज्ञान एवं शिक्षण कौशलों का नूतनीकरण आवश्यक है। यह सेवाकालीन प्रशिक्षण, एक शिक्षक द्वारा निष्पादित किए जानेवाले कार्यों के प्रभावी निष्पादन को प्रोत्साहित करता है।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह स्पष्ट है कि शिक्षण व्यवसाय की कुछ विशेषताएँ होती हैं जिनके आधार पर इसे व्यवसाय की संज्ञा दी जाती है। यह एक जटील व्यवसाय है क्योंकि इसमें निरंतर परिवर्तित हो रहे समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखना पड़ता है। यह राष्ट्र के राजनैतिक आदर्श एवं आर्थिक स्थिति दोनों से प्रभावित होता है। यह सिर्फ एक राष्ट्र के इतिहास से ही नहीं बल्कि अन्य राष्ट्र के इतिहास से भी प्रभावित होता है। विद्यार्थी, जो कि ग्राहक होते हैं, वो रुचि, योग्यता, सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर एक–दूसरे से भिन्न होते हैं। इन सब एवं कई अन्य जटिलताओं के बावजूद भी शिक्षण एक आदर्श व्यवसाय है जिसका मुख्य उद्देश्य समाज की सेवा करना है।

बोध प्रश्न

टिप्पणीः क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें तथा अपने उत्तरों को नीचे दिए गए स्थान में लिखें।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की तुलना करें।

1) व्यवसाय को पेशा/व्यापार से अलग करने वाली विशेषताओं की सूची बनाएँ।

....

....

....

....

2) "शिक्षण एक जटिल क्रिया है" विवेचना करें।

....

....

....

....

16.4 वृत्तिक विकास की आवश्यकता एवं महत्व

शिक्षकों के वृत्तिक विकास से संबंधित दस्तावेजों में सामान्य रुप से लिखा हुआ है कि "शिक्षकों का वृत्तिक विकास कोई घटना नहीं है बल्कि यह एक सतत प्रक्रिया है"। इसमें कोई संदेह नहीं कि शिक्षण एक व्यवसाय है और इसके कुछ व्यावसायिक दायित्व होते हैं। कभी–कभी ये दायित्व आचार–संहिता के रुप में लिखे होते हैं लेकिन अधिकांशतः करार के रुप में होते हैं। शिक्षण व्यवसाय में बहुत अधिक परिवर्तन आया है। भारत में ''राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा NCF 2005'' ने शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में आमूल–चूल परिवर्तन किया है। इसने शिक्षकों की भूमिका को भी प्रभावित किया है। ऐसे कई नीतिगत परिवर्तनों ने शिक्षकों की भूमिका को परिवर्तित किया है। क्या आप 21वीं सदी के प्रथम पंद्रह वर्षों में हुए ऐसे कुछ परिवर्तनों को पहचान सकते हैं, जिसके द्वारा प्राथमिक या माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की भूमिका पर प्रभाव पड़ा है।

क्रिया–कलाप 1

2000–2015 के दौरान हुए मुख्य नीतिगत परिवर्तनों / दस्तावेजों / योजनाओं जिनका प्रभाव शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया पर पड़ा हो, का विश्लेषण करें। प्राथमिक या माध्यमिक विद्यालयों की भूमिका पर इनका क्या प्रभाव पड़ा है?

शिक्षकों के व्यावसायिक विकास की आवश्यकता एवं महत्व को समझने में उपरोक्त गतिविधि आपकी सहायता करेगी। आपने अवश्य ध्यान दिया होगा कि प्रत्येक नीति / दस्तावेज या योजना, शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में कुछ नई चीजों की माँग करती है। कई बार लंबे समय से कार्यरत शिक्षक कई कारणों से इन परिवर्तनों का सामना करने के लिए तैयार नहीं होते हैं।

इन कारणों को अत्यधिक वास्तविक रुप में समझने के लिए आइए निम्नलिखित घटना को पढ़ें तथा इसका समाधान ढूँढने का प्रयास करें।

एक सरकारी विद्यालय में 14 शिक्षक थे। इनमें से 6 शिक्षकों की नियुक्ति 80 के दशक के अंतिम वर्षों में हुई थी जबकि 4 शिक्षकों की नियुक्ति 1995 में हुई थी। शेष शिक्षकों की नियुक्ति 2005 में हुई थी। ''राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005'' के प्रकाशन के बाद राज्य सरकार ने अपने सारे विद्यालयों में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित पुस्तकों को अपनाने की घोषणा की। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन को भी राज्य सरकार द्वारा 2009 में अपनाया गया। ''शिक्षा का अधिकार–2009'' के क्रियान्वयन के बाद विद्यालय 'शिक्षा का अधिकार अधिनियम' की सिफारिशों को अपनाने लिए बाध्य हो गए। विद्यालय के प्रधानाध्यापक ने समय–समय पर इस संदर्भ में नियम जारी किए तथा शिक्षकों को उन नियमों के अनुसार, स्वयं को तैयार करने के लिए कहा। शिक्षकों ने इस पर चर्चा की तथा समस्त परिवर्तनों को अपनाने के लिए बेहतर प्रयास किया। 2014 में एक स्वतंत्र शोधकर्ता द्वारा किए गए सर्वेक्षण में यह पाया गया कि अधिकांश शिक्षक मूल्यांकन की विविध तकनीकों का प्रयोग नहीं कर रहे थे। उनमें से बहुत से शिक्षक मूल्यांकन के संकेतकों तथा मूल्यांकन में उनके प्रयोग से परिचित नहीं थे। उस सर्वेक्षण में बहुत सारे शिक्षकों ने यह भी कहा कि एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित पुस्तकें बहुत उपयोगी नहीं है क्योंकि इनमें विषयवस्तु बहुत कम है और क्रिया–कलाप बहुत अधिक। इसलिए उन्हें अन्य संदर्भ पुस्तकों को पढ़ना पढ़ता है और शिक्षार्थियों को नोट्स देना पड़ता है। उनलोगों ने यह भी कहा कि 'शिक्षार्थियों को ''अनुत्तीर्ण न करने नीति' के क्रियान्वयन के कारण

शिक्षार्थियों की उपस्थिति घट रही है और वे विविध इकाई परीक्षणों(युनिट टेस्ट्स) तथा सत्रांत परीक्षणों को गंभीरता से नहीं ले रहे है। सर्वेक्षण में यह भी कहा गया कि उस विद्यालय में छठीं कक्षा से लेकर दसवीं कक्षा तक करीब 1200 विद्यार्थियों का नामांकन है। शिक्षकों का यह मानना है कि काम के बढ़ते हुए दबाव तथा निरंतर बदलती हुई नीतियों के कारण उनका निष्पादन स्तर गिर रहा है और वो स्वयं के कार्यों से संतुष्ट नहीं है।

यदि आप इस घटना का विश्लेषण कर कारणों को ढूँढने की कोशिश करते हैं तो आप पाएँगे कि उनमें से कुछ कारण निम्नलिखित हैः

- नीतियों का क्रियान्वयन;
- शिक्षकों में जागरुकता का अभाव; तथा
- मान्यताओं एवं वास्तविकताओं में अंतर

लेकिन आपको भी यह सोचना चाहिए कि इन परिवर्तनों के क्रियान्वयन से पहले यदि शिक्षकों को इन सभी परिवर्तनों एवं शिक्षण—अधिगम में इनके महत्व से भली—भाँति अवगत करा दिया जाय तो ऐसी समस्याएँ जन्म नहीं लेंगी। शिक्षकों के सतत प्रशिक्षण या उन्मुखीकरण की आवश्यकता पर पुनः विचार करने की आवश्यकता है जो विविध नीतियों एवं परिवर्तनों को शिक्षण—अधिगम में क्रियान्वित करने में शिक्षकों की सहायता कर सके। इस समस्या का समाधान शिक्षकों का सतत वृत्तिक विकास है। शिक्षकों के वृत्तिक विकास में सिर्फ उन्हें नए सम्प्रत्ययों को सीखने का अवसर देना या शिक्षण—अधिगम की नई विधियों को अपनाने का अवसर देना ही नहीं शामिल है बल्कि इसमें शिक्षण—अधिगम प्रक्रिया की बदलती परिस्थितियों का सामना करने के लिए शिक्षकों में दक्षता का विकास करना तथा शिक्षार्थियों के लाभ हेतु श्रेष्ठ चीजों को अपनाना भी शामिल है। वृत्तिक विकास, शिक्षक के कार्य—प्रणाली/उपागाम, अभिवृत्ति, अधिगम के स्तर की समझ तथा उसमें वृद्धि के लिए किए जानेवाले अभ्यास में परिवर्तन लाना है। शिक्षकों के वृत्तिक विकास की कुछ परिभाषाएँ निम्नलिखित हैंः

"वो प्रक्रिया जिसके द्वारा शिक्षक परिवर्तन के कारकों के प्रति अपने वादों का पुनरीक्षण, नवीनीकरण एवं विस्तार करते हैं तथा जिसके द्वारा वे ज्ञान, कौशल, नियोजन एवं अभ्यास को प्रेरित करते हैं तथा अपने शिक्षण जीवन की प्रत्येक अवस्था द्वारा उसका विकास करते हैं" (डे, 1994, पृ. 4)।

"शिक्षकों का व्यावसायिक विकास विद्यालय की परिधि के भीतर शिक्षकों को उनके कार्य के लिए तैयार करने के लिए, जिसमें कि प्रारंभिक प्रशिक्षण, प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, सेवाकालीन प्रशिक्षण तथा सतत वृत्तिक विकास शामिल हैं, का एक व्यवस्थित निकाय है" (ओ.ई.सी.डी., 2010)।

शिक्षकों के वृत्तिक विकास की आवश्यकता को निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता हैः

- विषय ज्ञान के विस्तार हेतु;
- बदली हुई शिक्षण विधियों के कारण;
- मीडिया की बढ़ती हुई सहभागिता के कारण;
- सूचनाएं एवं संप्रेषण तकनीकी (आइ.सी.टी.) के उपयोग पर विशेष ध्यान के कारण;

- नीतियों एवं योजनाओं के क्रियान्वयन के कारण; तथा
- समाज एवं राष्ट्र की आवश्यकताओं की संतुष्टि हेतु।

आप अपने अनुभवों के आधार पर इस सूची में कुछ संशोधन कर सकते हैं या अन्य कारणों को इसमें शामिल कर सकते हैं। भारत में वृत्तिक विकास के अवसरों के पीछे दो मुख्य कारण हैं: पहला इसे या तो योजना या नीति की तरह क्रियान्वित किया जाता है या दूसरा, शिक्षक इसे अपने पदोन्नति या अन्य आर्थिक लाभ से संबंधित होने के कारण करते हैं।

बोध प्रश्न

टिप्पणीः क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें तथा अपने उत्तरों को नीचे दिए गए स्थान में लिखें।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की तुलना करें।

3) वृत्तिक विकास को अपने शब्दों में परिभाषित करें।

....

....

....

....

....

4) शिक्षक शिक्षा में वृत्तिक विकास की शुरुआत के प्रमुख कारण क्या हैं?

....

....

....

....

....

कई बार सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम को वृत्तिक विकास के कार्यक्रम के रुप में समझा जाता है लेकिन भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह सही नहीं है । अगले भाग में हम लोग सेवाकालीन शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों के विभिन्न प्रतिमानों एवं शिक्षकों के वृत्तिक विकास में उनकी भूमिका का परीक्षण करेंगे।

16.5 वृत्तिक विकास हेतु सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण

भारत में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम को सामान्यतः दो श्रेणियों ''सेवापूर्व एवं सेवाकालीन'' शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभाजित किया जाता है। व्यापक अर्थ में सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम को शिक्षकों को वृत्तिक विकास के कार्यक्रम के रुप में देखा जाता है। कई सारे नीतिगत दस्तावेजों में सेवाकालीन शिक्षक शिक्षा के इस आयाम को दर्शाया गया है। डॉ0 ए0 लक्ष्मण स्वामी मुदालियर की अध्यक्षता में गठित **माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53)** में सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण की भूमिका को निम्न शब्दों में वर्णित किया गया है:

"हालाँकि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम एक बेहतर कार्यक्रम हो सकता है, लेकिन यह बेहतर शिक्षक का निर्माण नहीं करता है। यह सिर्फ ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्ति को जन्म देता है जो कि शिक्षक को आत्मविश्वास की उचित मात्रा एवं अनुभवों की अल्पमात्रा के साथ अपने कार्य को प्रारंभ करने के योग्य बनाता है। बढ़ती हुई दक्षता आलोचनात्मक रुप से विश्लेषित किए गए अनुभवों तथा विकास के लिए किए गए व्यक्तिगत एवं सामूहिक प्रयासों के द्वारा आती है। शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों को सेवाकालीन शिक्षक–प्रशिक्षण के अपने दायित्व को स्वीकार करना चाहिए। जिन क्रिया–कलापों को शिक्षण महाविद्यालयों को प्रदान करना चाहिए वे निम्नलिखित हैं: (1) पुनश्चर्या कार्यक्रम; (2) विशिष्ट विषयों में अल्पकालीन एवं गहन पाठ्यक्रम; (3) कार्यशालाओं में व्यावहारिक प्रशिक्षण; एवं (4) संगोष्ठी एवं व्यावसायिक सम्मेलन। शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों को अपने शिक्षकों को, जहाँ संभव हो वहाँ कुछ विकासात्मक कार्यों का संचालन कर रहे किसी विद्यालय या विद्यालय के समूहों के लिए परामर्शदाता का कार्य करने की अनुमति देनी चाहिए" (पृ0 139)।

शिक्षा आयोग (1964–66) ने सिफारिश की है कि कई विद्यालयों का एक समूह बनाया जाना चाहिए जिसमें एक विद्यालय नोडल विद्यालय हो जो कि विद्यालयों में कार्यरत सभी शिक्षकों के सतत वृत्तिक विकास के उत्तरदायित्व को वहन करे। इस सिफारिश के आधार पर कई राज्यों में राजकीय शिक्षा संस्थान का जन्म हुआ।

राष्ट्रीय शिक्षक आयोग-I (1983–85) के प्रतिवेदन, **"शिक्षक एवं समाज"** के अनुसार, प्रत्येक शिक्षक को प्रत्येक पाँच वर्ष के अंतराल पर 3 सप्ताह का सेवाकालीन प्रशिक्षण अवश्य लेना चाहिए और यह उनके व्यावसायिक प्रोन्नति से जुड़ा होना चाहिए।

नई शिक्षा नीति (1986) में यह कहा गया है कि **"शिक्षक शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है और इसके सेवापूर्व एवं सेवाकालीन घटक पृथक नहीं किए जा सकते हैं"।**

1987 में **प्रोग्राम ऑफ मास ओरिएण्टेशन ऑफ स्कूल टीचर्स** (पी.एम.ओ.एस.टी.) नामक एक वृहत कार्यक्रम का प्रारंभ किया गया जिसमें प्रत्येक वर्ष पाँच लाख शिक्षकों का उन्मुखीकरण करना था। कालांतर में इस कार्यक्रम को **'प्राथमिक शिक्षकों का विशेष उन्मुखीकरण कार्यक्रम** (स्पेशल ओरिएण्टशन प्रोग्राम फॉर स्कूल टीचर्स)' कार्यक्रम से प्रतिस्थापित कर दिया गया। ये दोनों कार्यक्रम अल्पकालीन थे और शिक्षकों में सिर्फ जागरुकता उत्पन्न करने में सक्षम रहे।

वृत्तिक विकास की गतिविधि के रुप में सेवाकालीन शिक्षक शिक्षा की भूमिका को स्पष्ट करते हुए **आचार्य राममूर्ति समिति (1990)** ने विशेष रुप से यह कहा है कि सेवाकालीन एवं पुनश्चर्या पाठ्यक्रम शिक्षकों की विशिष्ट आवश्यकताओं से संबंधित होना चाहिए। सेवाकालीन शिक्षा को शिक्षकों के भावी विकास की आवश्यकताओं का पोषण करना चाहिए तथा मूल्यांकन एवं अनुवर्ती कार्यक्रम इस योजना के अंग होने चाहिए।

कई पुनरीक्षण प्रतिवेदनों तथा शिक्षक शिक्षा संबंधी दस्तावेजों ने भारत में सेवाकालीन शिक्षक शिक्षा की भूमिका का आलोचनात्मक परीक्षण किया है। **राष्ट्रीय ज्ञान आयोग (2006–09)** ने भारत में सेवाकालीन शिक्षक शिक्षा पर टिप्पणी करते हुए लिखा है कि ''सेवाकालीन प्रशिक्षण, अनुचित संस्था, निम्नगुणवत्ता, पुरानी पाठ्यचर्या एवं खराब प्रबंधन की समस्याओं को दर्शाता है। देश में, विद्यालय स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की एक बड़ी संख्या ने

सेवाकालीन प्रशिक्षण नहीं प्राप्त किया है। अधिकांश डायट (जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान) में कर्मचरियों की कमी है और वो गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण देने में अक्षम है। ऐसा इसलिए है क्योंकि शिक्षक प्रशिक्षण के पदों पर ऐसे लोग है जो स्वयं विद्यालय शिक्षक नहीं थे'' (पृ0 53)

> *इसके समाधान हेतु आयोग ने यह सुझाव दिया था कि "शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों को एक निश्चित समयावधि के रुप में नहीं देखना चाहिए बल्कि उस प्रक्रिया के रुप में समझना चाहिए जिससे कक्षाकक्ष में संपादित हो रही शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में निरंतर उन्नति हो तथा आजीवन सीखने की अभिवृत्ति का संवर्द्धन करें। इसलिए पृष्ठपोषण एवं शिक्षक तथा प्रशिक्षण संस्थानों के मध्य विशेषतः शिक्षण विधियों, जो कि नई हैं तथा शिक्षकों द्वारा निरंतर नवाचार की माँग करती है, हेतु क्रमिक/नियमित अंतर्क्रिया की एक प्रणाली होनी चाहिए। राष्ट्रीय ज्ञान आयोग "अल्पकालिक सेवाकालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों (नियमित एवं दूरस्थ दोनों माध्यमों से) का सुझाव देता है जिसका चयन शिक्षक अपनी सुविधानुसार कर सके। इनमें डायट/एस.सी.ई.आर.टी. से बाहर विकसित पाठ्यक्रमों को उनकी गुणवत्ता के गहन परीक्षण के बाद शामिल किया जा सकता है। सेवाकालीन पाठ्यक्रमों को अधिक सुविधाजनक बनाने के साथ– साथ इन्हें व्यावसायिक प्रोन्नति से जोड़कर प्रोत्साहन प्रदान करने वाला बनाना चाहिए। इसके लिए उपस्थिति की अनिवार्यता तथा व्यावसायिक उन्नति हेतु इन पाठ्यक्रमों को पूर्ण करने की शर्त बना सकते हैं " (पृ0 54)।*

राष्ट्रीय ज्ञान आयोग ने यह भी कहा कि यदि एक वेब आधारित शिक्षक पोर्टल विकसित किया जाय तो यह शिक्षकों को परस्पर अंतर्क्रिया करने, अपने अनुभवों तथा विचारों को साझा करने के लिए एक अच्छा मंच होगा। यह सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण का एक अंग होना चाहिए।

"शिक्षक शिक्षा पर केंद्र सरकार द्वारा प्रायोजित योजना के व्यापक मूल्यांकन'' पर **एन.सी.ई.आर.टी. के प्रतिवेदन (अगस्त, 2009)** में कुछ त्वरित कार्य बताए गए हैं जो निम्नलिखित हैं:

- उपलब्ध संस्थानों की क्षमता में वृद्धि करना ताकि विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों पर प्रशिक्षित शिक्षकों की उचित संख्या में आपूर्ति सुनिश्चित की जा सके ।
- राजकीय संस्थानों, जिसमें कि सी.टी.ई. शामिल हैं, के अलावा शिक्षा के सभी स्तरों पर उपलब्ध शिक्षकों को सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए सभी प्रकार के संस्थाओं, जिनमें कि विश्वविद्यालयों के शिक्षा विभाग, निजी क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान भी शामिल हों, का उपयोग करना।
- शिक्षक शिक्षा को (विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों, नर्सरी से लेकर उच्चतर माध्यमिक तक के लिए) उच्च शिक्षा के एक क्षेत्र के रुप में जाना जाना चाहिए तथा स्थानीय महाविद्यालयों/विश्वविद्यालयों (यथा, विज्ञान, भाषा, सामाजिक विज्ञान) तथा शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के मध्य अंतःक्रिया को विकसित करने के उदेश्य से शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों तथा सामान्य शिक्षा के महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के मध्य सहयोग एवं आपसी सहायता को सुगम बनाना चाहिए।
- शिक्षक शिक्षा का एक व्यापक प्रतिमान विकसित करना, चटोपाध्याय आयोग के प्रतिवेदन का उपयोग करना तथा इसके विचारों को अद्यतन करना तथा यह निश्चित करना कि शिक्षकों की नियुक्ति संबंधी नितियों, परिनियोजन एवं सेवा की शर्त् जिसमें

कि पारिश्रमिक भी शामिल हैं, में आवश्यक संशोधन के साथ–साथ एक नए एवं विस्तृत प्रतिमान का विकास हो।

- ''राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, (NCF-2005)' के समान ही शिक्षक शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम नीति एवं संरचना का निर्माण करना तथा भिन्न–भिन्न वातावरण एवं आवश्यकताओं के अनुकूल शिक्षकों के सेवा पूर्व पाठ्यक्रमों के लिए पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तकों का निर्माण करना तथा सेवाकालीन प्रशिक्षण सामग्री बनाना।

- विभिन्न स्तरों पर कार्यरत संस्थाओं जैसे राष्ट्रीय स्तर पर एन.सी.ई.आर.टी. तथा एन. सी.टी.ई. राज्य स्तर पर एस.सी.ई.आर.टी. तथा राज्य शिक्षा बोर्डों तथा जिला स्तर पर डायट एवं स्नातक स्तरीय महाविद्यालय आदि के मध्य सहक्रिया/अंतर्क्रिया को प्रोत्साहित करना।

प्रतिवेदन के अनुसार, "जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के दौरान कुछ चुनिंदा जिलों में प्रखंड एवं संकुल संसाधन केंद्रों की स्थापना की गई। सर्व शिक्षा अभियान के तहत प्राथमिक शिक्षा की गुणवता के स्तर को उन्नत करने के लिए इन केंद्रों की स्थापना कालांतर में पूरे देश में की गई। इस प्रकार कर्मचारियों के दायित्व वर्तमान में सर्व शिक्षा अभियान के क्रियान्वयन की संरचना एवं उद्देश्यों पर आधारित है। सर्व शिक्षा अभियान के सफल क्रियान्वयन के परिणामस्वरुप माध्यमिक स्तर पर छात्रों के नामांकन संख्या में वृद्धि हुई है। इसके इतर, माध्यमिक शिक्षा का सार्वभौमीकरण भी सक्रिय भूमिका निभा रहा है। इसको ध्यान में रखते हुए प्रखंड संसाधन केन्द्रों की भूमिका एवं प्रक्रिया को तत्काल परिवर्तित करने की आवश्यकता है तथा इनको प्रखंड स्तरीय शिक्षक शिक्षा संस्थान (बी.आइ.टी.ई.) में बदले जाने की आवश्यकता है"।

शिक्षक शिक्षा का राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एन.सी.एफ.टी.ई.–2009) में सेवाकालीन शिक्षा को वृत्तिक विकास का एक सशक्त साधन बनाने हेतु कई सारे उपाय प्रस्तावित किए गए। एन.सी.एफ.टी.ई. के अध्याय 4 में सतत वृत्तिक विकास तथा सेवाकालीन शिक्षक शिक्षा हेतु सहयाता पर विस्तृत विमर्श किया गया है।

क्रिया–कलाप 2

शिक्षक शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एन.सी.एफ.टी.ई.–2009) द्वारा प्रस्तावित सिद्धांतों का अनुगमन सेवाकालीन शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम को विकसित करते समय करें। इन सिद्धांतों के आलोक में किसी एक सेवाकालीन शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम का विश्लेषण करें तथा प्रतिवेदन तैयार करें।

एन.सी.एफ.टी.ई. "http://ncte-india.org/ncte_new/pdf/NCTE_2010.pdf" पर उपलब्ध है।

शिक्षकों को सेवाकालीन वृत्तिक विकास प्रदान करने में विविध संस्थाएँ महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभा सकती हैं। शिक्षकों को अल्पकालीन छात्रवृत्ति एवं अनुदान डायट, सी.आइ.ई.टी., आइ. ए.एस.ई., विश्वविद्यालय के शिक्षा विभागों में जाने या उनके स्वयं के जिले में विद्यालयी बच्चों तथा शिक्षकों के लिए विशेष कर्यक्रम आयोजित करने के प्रस्तावों के आधार पर प्रदान किया जा सकता है।

- विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय को विज्ञान, मानविकी तथा सामजिक विज्ञान संकाय विद्यालय स्तर के शिक्षकों के लिए प्रसार सेवाओं को शामिल कर सकते हैं; अपने पुस्तकालयों एवं प्रयोगशालाओं को शिक्षकों के लिए खोल सकते हैं तथा अपने नए विचारों को उनसे साझा कर सकते हैं।

- सेवापूर्व शिक्षक शिक्षा के महाविद्यालयों में प्रसार शिक्षा संबंधी कार्यक्रमों को शामिल किया जा सकता है जिनसे ये महाविद्यालय भी सक्रिय शिक्षकों के सम्पर्क में रहेंगे। शिक्षक शिक्षा संस्थानों में अधिगम केंद्र का विकास किया जा सकता है जो सेवा पूर्व शिक्षक शिक्षा एवं सेवारत शिक्षकों के सतत वृत्तिक विकास दोनों के लिए केंद्र का कार्य करेगा। वे अपने पुरातन छात्रों को उनके वृत्तिक विकास को सही दिशा में बनाए रखने के लिए विशेष सुविधा भी प्रदान कर सकते हैं।

- इसा दिशा में रुचि प्रदर्शित करनेवाले प्राध्यापकों के नेतृत्व वाले तथा अतिरिक्त सहायक शिक्षकों को प्रदान करने वाले विद्यालय स्वयं अन्य पड़ोसी विद्यालयों के लिए संसाधन केंद्र की तरह कार्य कर सकते हैं। इनमें गैर सरकारी संगठनों तथा अन्य व्यक्तिगत संस्थानों द्वारा संचालित तथा किसी भी बोर्ड से संबंधित ऐसे सरकारी या गैर सरकारी विद्यालयों जो अपने आस–पास में स्थित सभी विद्यालयों के विकास के प्रति कटिबद्ध हो, को शामिल किया जा सकता है।

आइ ए.एस.ई., सी.टी.ई., डी.आइ.ई.टी., बी.आर.सी. तथा सी.आर.सी. भी विद्यालय के सर्वांगीण विकास या विशिष्ट विद्यालयों या जिले में उपलब्ध विशिष्ट बालकों के समूह को ध्यान में रखते हुए शोध कर सकते हैं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विकास कर सकते हैं । वे विद्यालय के प्रमुख के साथ कार्य करके शिक्षकों को विद्यालय आधारित समर्थन प्रदान करने पर भी ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

सर्व शिक्षा अभियान के संशोधित क्रियान्वयन प्रारुप(2011) में शिक्षकों को शैक्षिक सहायता प्रदान करने हेतु बी.आर.सी., शहरी संसाधन केंद्रों (यू.आर.सी.) तथा सी.आर.सी. को सशक्त करने की सिफारिश की गई है। बी.आर.सी. / यू.आर.सी. तथा सी.आर.सी. प्रशिक्षण प्रदान करने तथा विद्यालय एवं शिक्षकों को सहायता प्रदान करने के प्रमुख केन्द्र हैं। सर्व शिक्षा अभियान इन संस्थाओं को महत्व देते हुए बी.आर.सी. / यू.आर.सी. तथा सी.आर.सी. को संरचनात्मक एवं शिक्षक सहायता प्रदान करेगा। बी.आर.सी. / यू.आर.सी. तथा सी.आर.सी. के समन्वयकों की नियुक्ति में राज्य को उनके चयन हेतु बने मानकों को ध्यान में रखना चाहिए। चयन के मानकों को तय करते समय अनुभव, योग्यता एवं शोध एवं प्रशिक्षण संबंधी अभिवृत्ति को ध्यान में रखना चाहिए। बी.आर.सी. / यू.आर.सी. तथा सी.आर.सी. के समन्वयकों तथा शिक्षकों के सतत कौशल विकास के लिए राज्य को अवसर अवश्य प्रदान करने चाहिए। बी.आर.सी. / यू. आर.सी. तथा सी.आर.सी., डायट तथा जिला स्तरीय संसाधन समूहों के मध्य प्रकार्यात्मक सम्पर्क को स्थापित एवं सशक्त किया जाना चाहिए।

बी.आर.सी. / यू.आर.सी. तथा सी.आर.सी. को विनियमित करने के लिए सर्व शिक्षा अभियान के तहत बने मानकों को सर्व शिक्षा अभियान के संशोधित क्रियान्वयन प्रारुप(2011) में स्पष्ट रुप में निश्चित किया गया है। जून, 2012 में भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के शिक्षा एवं साक्षरता विभाग ने शिक्षक शिक्षा के लिए केंद्रीय प्रायोजित योजना के क्रियान्वयन, पुनर्संरचना एवं पुनर्संगठन के लिए निर्देश तैयार किए। इन दिशा निर्देशों में यह सुझाया गया है कि

"सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम को प्रमुख ज्ञान स्रोत व्यक्ति (विशेषतः प्रखंड स्तर पर प्रशिक्षण हेतु) के विकास हेतु कार्य करना चाहिए। साथ ही साथ पाठ्यक्रम के सभी अंगों के नियोजन एवं क्रियान्वयन के बेहतर समझ एवं गुणवत्ता में निरंतर वृद्धि करने के उद्देश्यों से शिक्षकों के साथ प्रत्यक्ष रुप से जुड़कर कार्य करना चाहिए। डायट से यह आशा की जाती है कि वो प्रधानाध्यापकों, प्रखंड स्तरीय विभागों के शिक्षा अधिकारियों, ग्राम शिक्षा समिति के सदस्यों, विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों, सामुदायिक नेताओं, पी.आर.आइ,

बी.आर.सी./सी.आर.सी. के समन्वयकों के लिए विशेष रुप से विकसित पाठ्यक्रमों का संचालन करें " (पृ0 32)।

इन निर्देशों में बदलाव को निम्नलिखित प्रकार से स्पष्ट किया गया है:

तालिका 16.1 : शिक्षक शिक्षा में आवश्यक परिवर्तन

विचार एवं अभ्यास में किए जानेवाले परिवर्तन	
कहाँ से	**कहाँ तक**
शिक्षक निर्देशित, निश्चित प्रारुप	विद्यार्थी केंद्रित, लचीली प्रक्रिया
विद्यार्थी की ग्राह्यता	विद्यार्थी माध्यम, अधिगम में भागीदारी
ज्ञान जैसा कि प्रदान किया गया है, निश्चित	ज्ञान निर्मित होता है, विकसित
सीखना एक व्यक्तिगत क्रिया है	सीखना एक सहयोगी समाजिक क्रिया है
अनुशासनात्मक	बहुअनुशासनात्मक, शैक्षिक
निर्णयात्मक मूल्यांकन, क्रम निर्धारण हेतु प्रतियोगी परीक्षा, चिंता एवं कष्ट को जन्म देनेवाला	अधिगम के लिए आंकलन, अभिप्रेरणा में वृद्धि के लिए स्व आंकलन, बिना डर उत्पन्न करनेवाली सतत प्रक्रिया के द्वारा समयावधि के भीतर प्रगति को अभिलेखित करने के लिए

स्रोत: शिक्षक शिक्षा पर आधारित केंद्रीय प्रायोजित योजना के पुनर्निर्माण एवं पुनर्गठन के क्रियान्वयन हेतु दिशा निर्देश (पृ0 32–33)

माननीय उच्चतम न्यायालय (2012) द्वारा शिक्षक शिक्षा के लिए गठित उच्च आयोग, जो सामान्यतः **न्यायमूर्ति वर्मा कमीशन** के रुप में जाना जाता है के प्रतिवेदन, जिसका शीर्षक **"भारत में शिक्षक शिक्षा का परिदृश्यः गुणवत्ता एवं नियामक दृष्टिकोण** (विजन ऑफ टीचर एजुकेशन इन इंडियाः क्वालिटी एंड रेगुलेटरी पर्सपेक्टिव)" है, ने एक आदर्श आइ.एन.एस. ई.टी. (INSET) नीति निर्धारित करने का सुझाव दिया है जो निम्नलिखित मुद्दों पर केंद्रित होनी चाहिए:

- सतत वृत्तिक विकास की एक नीति के रुप में सेवाकालीन शिक्षक शिक्षा, विद्यालयी व्यवस्था में शिक्षा से जुड़े सभी व्यक्तियों यथा सभी स्तरों के शिक्षक, विद्यालय प्रमुख, पर्यवेक्षक, पुस्तकालय के कर्मचारी, आदि सबके लिए होना चाहिए। निजी क्षेत्र के गैर अनुदानित विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक, वृत्तिक विकास के लिए केंद्र सरकार द्वारा प्रायोजित योजनाओं से वंचित रह जाते हैं। नई आइ.एन.एस.ई.टी. नीति में सेवाकालीन शिक्षा में निजी क्षेत्र के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को शामिल करने का भी प्रावधान भी होना चाहिए। अपने समय एवं सुविधानुसार सेवाकालीन शिक्षा में सहभाग करना प्रत्येक शिक्षक का दायित्व होना चाहिए।

- प्रशिक्षण में प्रशिक्षण इकाइयों की सफल प्राप्ति के मानक अभी भी परिभाषित होने हैं। ये मानक व्यवसाय में उन्नति या आर्थिक लाभ के रुप में प्रोत्साहन से जुड़े होने चाहिए।

- प्राथमिक स्तर (प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक), माध्यमिक स्तर तथा उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों, विद्यालय प्रमुखों, पर्यवेक्षकों तथा पुस्तकालय कर्मचारियों के लिए पृथक–पृथक प्रशिक्षण इकाइयों का विकास करना चाहिए।

- आइ.एन.एस.ई.टी. नीति को वांछित तरीके से क्रियान्वित करने के लिए राष्ट्रीय एवं राजकीय कार्य योजना के निर्माण की आवश्यकता है।
- सेवाकालीन शिक्षक शिक्षा प्रदान कर रहे संस्थानों को अधिगम संसाधनों, विश्वविद्यालयों तथा अन्य संस्थानों द्वारा शैक्षिक सहायाता योग्य ज्ञान स्रोत व्यक्ति, आदि अनेक दृष्टिकोण से सम्पन्न करना है।
- माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान करनेवाले संस्थाओं की कमी है। इसलिए मौजूद सी.टी.ई. को सशक्त करना चाहिए तथा नए प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना होनी चाहिए।
- प्रशिक्षण सह संसाधन केंद्रों की स्थापना मुक्त एवं दूरस्थ केंद्रों के रुप में होना चाहिए। सतत व्यावसायिक विकास केंद्रों के रुप में मुक्त एवं दूरस्थ संस्थानों के साथ शैक्षिक तकनीकी के संस्थानों को प्रशिक्षण संबंधी दृश्य–श्रव्य कार्यक्रमों के विकास एवं उत्पादन का उत्तरदायित्व का वहन करना चाहिए।
- सेवाकालीन शिक्षा की सफलता इसके चारों स्तम्भों : प्रशिक्षण की विषयवस्तु, प्रशिक्षण स्थान की सम्पूर्ण नीतियों, प्रशिक्षकों का चातुर्य एवं ज्ञानशीलता एवं प्रशिक्षकों की सहभागिता एवं सम्मान, पर निर्भर करता है।

एक शिक्षक के रुप में आप इनका अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि हमारी नीतियाँ सेवाकालीन शिक्षा को वृत्तिक विकास का उपकरण बनाने के लिए कटिबद्ध है। अनेक प्रयास किए जा चुके हैं लेकिन अभी भी माँग एवं आपूर्ति के मध्य बड़ा अंतर है। सरकार द्वारा किए गए अधिकांश प्रयास सरकारी विद्यालयों या सरकार द्वारा अनुदान प्राप्त संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों तक ही सीमित है जबकि निजी एवं गैर अनुदानित विद्यालयों में कार्यरत अधिकांश शिक्षक इनसे वंचित रह जाते हैं। उपरोक्त विवेचन में डायट, सी.टी.ई. तथा आइ.ए.एस.ई. की स्थापना एवं उनकी वर्तमान स्थिति के लिए किए गए प्रयासों को भी स्पष्ट किया गया है। इन संस्थानों में शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के लिए संस्थागत विधियों का निर्माण किया है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी: क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें तथा अपने उत्तरों को नीचे दिए गए स्थान में लिखें।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की तुलना करें।

5) सेवाकालीन शिक्षा कार्यक्रमों के लिए आवश्यक बदलाव क्या–क्या हैं ?

....

....

....

....

....

....

....

....

6) पी एम ओ एस टी तथा एस ओ ओ टी कार्यक्रम की मुख्य सीमाएँ क्या हैं?

....

....

....

....

....

....

16.6 सतत वृत्तिक विकास

सतत वृत्तिक विकास एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा शिक्षक और अधिक प्रभावी शिक्षक बनने के लिए कौशलों को प्राप्त करते हैं, विकसित करते हैं तथा उन्हें सशक्त करते हैं। यह निरंतर परिवर्तित होते रहने वाली व्यावसायिक वातावरण के प्रति अनुक्रिया है तथा अनवरत चलनेवाली प्रक्रिया है।

क्रिया–कलाप 3

"सतत वृत्तिक विकास प्रत्येक क्षेत्र विशेषतः शिक्षण क्षेत्र में लागू होना चाहिए"। क्या आप इस कथन से सहमत हैं? शिक्षण के क्षेत्र में व्यावसायिक विकास की आवश्यकता की चर्चा करें।

....

....

....

....

....

उपर्युक्त प्रश्न के प्रति अपनी अनुक्रिया का आप विश्लेषण करें। जाँच करें कि क्या आपके द्वारा बताई गई आवश्यकताएँ निम्नलिखित बिंदुओं के समान हैं:

- ज्ञान का नूतनीकरण
- कक्षाकक्ष अभ्यास को उन्नत करना
- नवोदित चुनौतियों का सामना करना
- व्यावसायिक सम्बन्ध बनाना

इस सूची में जोड़े जा सकनेवाले अन्य बिंदुओं को सोचे। अब हम उपर्युक्त बिंदुओं की संक्षिप्त चर्चा करेंगे।

16.6.1 ज्ञान का नूतनीकरण

सतत वृत्तिक विकास नए ज्ञान की प्राप्ति तथा उस ज्ञान का प्रयोग पूर्व ज्ञान के विकास हेतु करने में शिक्षकों की सहायता करता है। सिर्फ अपने विषय क्षेत्र में हीं नहीं बल्कि शिक्षण विधियों एवं तकनीकी के क्षेत्र में भी निरंतर नए ज्ञान का विकास हो रहा है। उदाहरण के

तौर पर, निकट अतीत में हुए शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में हुए आमूल चूल परिवर्तन व्यावहारवादी उपागम के स्थान पर संरचनात्मक उपागम का अपनाया जाना हम सबने अनुभव किया। नए आविष्कार एवं नवाचार विविध विषयों में ज्ञान के संग्रह को बढ़ावा दे रहे हैं । विज्ञान, कला एवं सामाजिक विज्ञान, आदि सभी विषयों के ज्ञान क्षेत्र में निरंतर वृद्धि हो रही है और एक शिक्षक को इन सब विकास की तकनीकी जानकारी रखनी पड़ती है। शिक्षक होने के नाते हम अपने विषय क्षेत्र में होने वाले ज्ञान के इस विकास से अनजान नहीं रह सकते हैं। जो शिक्षक अपनी जानकारी अद्यतन रखता है उसका आत्मविश्वास का स्तर ऊँचा होता है तथा वो अपने सहकर्मियों एवं शिथार्थियों में सम्मान पाता है । एक शिक्षक अपने शिक्षार्थियों के प्रश्नों का भली–भाँति उत्तर दे पाता है यदि वह अपने क्षेत्र में हो रहे विकास से अवगत रहता है।

16.6.2 कक्षाकक्ष शिक्षण में सुधार

एक अच्छा शिक्षक सिर्फ एक अच्छा संप्रेषक ही नहीं होता है बल्कि अधिगम को आसान बनाने वाला भी होता है। वह सिर्फ अध्यापन ही नहीं करता है बल्कि कक्षाकक्ष अनुभवों से सीखता भी है। वह नवाचारों, नवीन तकनीकों एवं प्रविधियों का शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में प्रयोग करने का प्रयास भी करता है। इस प्रकार वह अपने शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को उन्नत करता है । निम्नलिखित उदाहरण को पढ़ेः

> श्री मोहित विगत 15 वर्षों में प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में पढ़ा रहे हैं। वो बहुत पहले एक प्रशिक्षित शिक्षक के रुप में चुने गए थे लेकिन नए विचारों से अवगत नहीं है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (2005) की क्रियान्वयन एवं उसके परिणामस्वरुप पाठ्यपुस्तकों में आए परिवर्तनों के कारण उन्हें शिक्षण विधि में परिवर्तन करने की गंभीर आवश्यकता महसूस हुई। उन्होंने इंटरनेट पर नए सम्प्रत्ययों यथा, बहुअनुशासनात्मक उपागम, सक्रिय अधिगम, आदि के विषय में पढ़ा। इसके बाद उन्होंने विषयवस्तु का अध्यापन करने के लिए समेकित उपागम को अपनाया। उन्होंने उपयुक्त उदाहरणों का प्रयोग कर विविध विषयों की विषयवस्तु को आपस में तथा शिक्षार्थियों के दैनिक जीवन से संबंधित किया। उन्होंने शिक्षार्थियों को विविध क्रिया–कलापों के लिए भी प्रोत्साहित किया। उन्होंने शिक्षार्थियों को आपस में चर्चा करने, अपने शब्दों में व्याख्या करने तथा प्रश्न पूछने के लिए भी प्रोत्साहित किया ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्रिया–कलाप अधिगम को प्रोत्साहित कर रहे हैं।

मोहित ने बिना प्रशिक्षण कार्यक्रम के कैसे अपने व्यावसायिक विकास को संभव किया। व्यावसायिक विकास के लिए मोहित द्वारा किए गए प्रयासों का क्या प्रभाव था?

16.6.3 नवोदित चुनौतियों का सामना करना

आजकल के शिक्षक शिक्षण एवं अधिगम की नई विधियों को अपनाने के लिए बाध्य हैं। वे शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में तकनीकी के समावेशन के लिए भी बाध्य हैं। ये सारी प्रवृत्तियाँ शिक्षकों के सामने चुनौती उत्पन्न करती हैं। अनुशासन बनाए रखने के लिए शारीरिक दंड के प्रावधान के बिना कक्षाकक्ष का प्रबंधन करना, संरचनात्मक मूल्यांकन करना, समावेशी कक्षाकक्षों में अध्यापन करना, आदि भी चुनौतीपूर्ण कार्य हैं। कक्षाकक्ष में शिक्षार्थियों की विभिन्नताओं का समाधान करना, लिंग, जाति, धर्म, प्रजाति, आदि के आधार पर कक्षाकक्ष में समता स्थापित करना, कक्षाकक्ष को समावेशी बनाना, शारीरिक दंड के स्थान पर विधेयात्मक अनुशासन को अपनाना, मानवीय मूल्यों का संबर्धन तथा सामाजिक न्याय को

अपनाने जैसी चुनौतियों का सामना शिक्षक को वर्तमान समय की कक्षाओं में करना पड़ता है। बहुत सारे शिक्षक इन नवाचारों को अपनाने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। उदाहरण के तौर पर, कुछ शिक्षक जो पारंपरिक शैक्षिक प्रणाली में लंबे समय में कार्यरत हैं नए तकनीकों के प्रयोग में सहजता का अनुभव नहीं करते हैं तथा तकनीकी समर्थित शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को अपनाने के प्रति अनिच्छुक है। दूसरी ओर बच्चों द्वारा तकनीकी के बढ़ते हुए प्रयोग के कारण शिक्षकों को यह महसूस होने लगा है कि वो उनको पढ़ाने के लिए समुचित रुप से दक्ष नहीं है।

16.6.4 वृत्तिक संबन्धों का निर्माण

वर्तमान समय अतीत की भाँति प्रतियोगिता एवं व्यक्तिगत रुप से कार्य करने के बजाय आपसी सहयोग का है। मिलजुल कर कार्य करना, संसाधनों का साझा प्रयोग करना, एवं आपसी सम्बन्धों का निर्माण व्यक्ति के कार्य करने की क्षमता को बढ़ता है। सतत वृत्तिक विकास के द्वारा शिक्षक आपसी सहयोग एवं मिलजुल कर कार्य करने की योग्यता एवं अभिवृत्ति प्राप्त करते हैं। इसलिए सूचनाओं, विचारों तथा अनुभवों को साझा करने में तकनीकी समर्थित सम्पर्क, परियोजनाओं को पूरा करने में आपसी सहयोग, आदि आवश्यक है। वृत्तिक सम्पर्क की आवश्यकता सिर्फ शैक्षिक लाभ हेतु ही नहीं है बल्कि व्यावसायिक मुद्दों पर सामूहिक रुप से चर्चा और प्रतिक्रिया करने के लिए भी है। ऐसी वृत्तिक सम्पर्क प्रणाली में अधिक ज्ञानी एवं अनुभवी सहकर्मी प्रभावी निर्देशन एवं सुझाव प्रदान कर सकते हैं। सतत वृत्तिक विकास का अवसर हमें तकनीकी आधारित सम्पर्क के निर्माण तथा उस सम्पर्क का व्यावसायिक रुप से लाभ उठाने के योग्य बनाता है। आजकल वृत्तिक विकास के लिए किए जाने वाले आजीवन अधिगम जैसे स्वप्रयास भी आवश्यक है।

क्रिया–कलाप 4

सतत वृत्तिक विकास के उपरोक्त आवश्यकताओं के इतर अन्य कई आवश्यकताएँ हो सकती हैं। उनकी सूची बनाएँ।

अब आप इस बात से सहमत होंगे कि सतत वृत्तिक विकास वास्तव में निरंतर परिवर्तित हो रहे विश्व के साथ सामंजस्य बनाए रखने हेतु शिक्षकों को ज्ञान एवं कौशल से सुसज्जित करने के लिए आवश्यक है। इस प्रारंभिक चर्चा के बाद हमलोग वृत्तिक विकास में सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी विशेषतः कम्प्युटर एवं इंटरनेट की चर्चा करेंगे। यह चर्चा मौलिक एवं तकनीकी व्याख्याओं के बजाय अभ्यास पर आधारित होगी।

16.7 सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी के माध्यम से सतत वृत्तिक विकास

16.7.1 संसाधनों तक पहुंच हेतु सूचना–संप्रेषण तकनीकी (आइ.सी.टी.)

सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी समस्त शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का आवश्यक अंग बन गयी है। आए.सी.टी. अधिगम के अवसरों में वृद्धि करती है और जैसा कि आप जानते हैं कि प्रयोगकर्ता को सीखने की गति एवं समय संबंधी छूट प्रदान करती है। निम्न भाग में हमलोग सतत व्यावसायिक विकास के अवसर प्रदान करने में आइ.सी.टी. के उपयोग पर चर्चा करेंगे। हालाँकि सी.पी.डी. के लिए यह आवश्यक है कि आप उपरोक्त वर्णित तकनीकों के विषय में सिर्फ पढ़े ही नहीं बल्कि उनमें से कुछ का प्रयोग सूचनाओं को प्राप्त करने एवं उसे साझा करने में करें।

शैक्षिक उद्देश्य के लिए पोर्टलः साक्षत (SAKSHAT)

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने आजीवन अधिगम को सुलभ बनाने के लिए 30 अक्टूबर, 2006 को शिक्षार्थियों, शिक्षकों एवं अन्य व्यक्तियों को निःशुल्क ज्ञान प्रदान करने हेतु शैक्षिक पोर्टल का आरंभ किया। साक्षत परियोजना का उद्देश्य सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी के द्वारा शिक्षा के राष्ट्रीय अभियान के तहत 50 करोड़ से भी अधिक लोगों के अधिगम आवश्यकताओं का ध्यान रखना है। शिक्षार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं एवं उनकी आकांक्षाओं का ध्यान रखने हेतु आइ.सी.टी. को और प्रभावी बनाकर उचित ई–पाठ्यसामग्री के साथ इकाई उच्च गुणवत्तपूर्ण पाठ्यसामग्री प्रदान करने के लिए उच्च अधिगम के सभी संस्थानों की साइबर एवं ज्ञान के संसार से सम्पर्क स्थापित करने की योजना है। इन इकाइयों को साक्षात के द्वारा दिए जाने हैं।

साक्षात का प्रमुख लाभ यह है कि यह विविध सरकारी संगठनों द्वारा किए जा रहे सूचना एवं संप्रेषण संबंधी सभी प्रयासों को एक स्थान पर लाता है तथा शिक्षा में आए.सी.टी. का समावेशन कर इस दिशा में हो रहे नए प्रयासों की जानकारी देता है। इसके लाभ को समझने के लिए आपको निम्नलिखित गतिविधि को निष्पादित करना होगा।

क्रिया–कलाप 5

साक्षात पोर्टल में बने शिक्षक कॉर्नर मेनु को देखें तथा इसके अंतर्गत बनें विविध उपखंडों का, शिक्षक को मिलनेवाले लाभ की दृष्टि से, विश्लेषण करें। भारत में आई.सी.टी. समर्थित शिक्षा की उन्नति में साक्षात की भूमिका पर एक आलोचनात्मक प्रतिवेदन तैयार करें।

DIGITAL TOOLS » TEACHING STRATEGIES »

MOOCs for Teachers: Coursera Offers Online Teacher Training Program

Katrina Schwartz | April 30, 2013 | 4 Comments

Tweet 298 Like 195 Share 33 Email Post

आई.सी.टी. आधारित शिक्षण–अधिगम के क्षेत्र में मूकस (MOOC), एक नवाचार है। मूक्स में निहित दर्शन, शिक्षण एवं अधिगम को एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया मानता है। सह दूरस्थ प्रशिक्षण कार्यक्रम के क्षेत्र में आई.सी.टी. आधारित प्रयास है, जिसका शिक्षक शिक्षा में व्यापक क्षेत्र है तथा यह शिक्षक सहित अनेक लोगों के लिए प्रचुर मात्रा में अवसर प्रदान करता है। भारत जैसे विकसित देशों में मूक्स आधारित शिक्षक प्रशिक्षण अभी प्रारंभिक अवस्था में है और अधिकांश प्रयास व्यक्तिगत हैं, संस्थागत नहीं। अधिकांश मूक्स आधारित शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा मूलभूत आई.सी.टी. कौशलों या विषयवस्तु के समृद्धिकरण पर केंद्रित हैं लेकिन मूक्स निकट भविष्य में शिक्षक प्रशिक्षण के सम्पूर्ण माध्यम के रुप में विकसित होगा।

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने 2016 में अपना मूक्स मंच जिसका नाम 'स्वयं' है का आरंभ किया है। **स्वयं (SWAYAM)** का शब्द विस्तार है **'स्टडी वेब्स ऑफ एक्टिव–लर्निंग फॉर यंगएस्पाइरिंग माइण्डस)**।

शिक्षकों के सतत वृत्तिक विकास में मूक्स का बेहतर प्रयोग किया जा सकता है। संस्थाएँ इसके लिए प्रयास कर सकती हैं या शिक्षक व्यक्तिगत रुप से ऐसे पाठ्यक्रमों में सहभाग कर सकते हैं।

क्रिया–कलाप 6

मूक्स आधारित वेबसाइट www.swayam.gov.in को देखें। एक अल्पकालिक पाठ्यक्रम में अपना नामांकन करें तथा अपने अनुभवों के आधार पर शिक्षकों के सतत वृत्तिक विकास में मूक्स द्वारा प्राप्त होनेवाले लाभ पर एक आलोचनात्मक प्रतिवेदन तैयार करें।

मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER) तथा NROER

आपने मुक्त शैक्षिक संसाधनों एवं शिक्षार्थियों के लिए इसके लाभ के विषय में अवश्य सुना होगा। ओ.ई.आर. शिक्षण एवं अधिगम सामग्री है जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए निःशुल्क है, कोई भी चाहे वह शिक्षक हो या शिक्षार्थी, शिक्षक प्रशिक्षक हो या फिर शिक्षा के क्षेत्र में स्वतंत्र रुप से कार्य कर रहा व्यक्ति, ओ.ई.आर. के रुप में प्रदत्त विषयस्तु से लाभान्वित हो सकता है। ओ.ई.आर. के रुप में विविध प्रकार की विषयवस्तु जिनमें कि लेख, पाठ्य योजना, अधिगम एवं मूल्यांकन के तकनीक एवं उपकरण, शिक्षक निर्मित प्रारुप, प्रयोगशाला नियमावली, पाठ्य–पुस्तक एवं संदर्भ पुस्तक, चित्र प्रश्नावली तथा अन्य कई संसाधन दृश्य रुप में उपलब्ध हैं।

ओ.ई.आर. में निहित दर्शन शिक्षण एवं अधिगम के सहयोगी प्रकृति से मिलता–जुलता है। ओ.ई.आर. शिक्षार्थियों एवं शिक्षकों को अधिक श्रम एवं समय का निवेश किए बिना ही गुणवत्तापूर्ण विषयवस्तु का दोहन करने का अवसर प्रदान करता है। विभिन्न स्थानों में कई ओ.ई.आर. प्लेटफॉर्म हैं लेकिन ओ.ई.आर. के दो स्वदेश विकसित प्रतिमान हैं:

पहला राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय संस्थान तथा दूसरा मुक्त शैक्षिक संसाधनों का राष्ट्रीय कोष (नेशनल रिपोजिटरी ऑफ ओपेन एजुकेशनल रिसोर्सेज) हैं। इनका प्रबंधन एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली द्वारा किया जाता है। एन.आर.ओ.ई.आर. का शिक्षकों द्वारा विविध उद्देश्यों के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

क्रिया–कलाप 7

एन.आर.ओ.ई.आर. को देखें तथा अपने विषय से संबंधित कुछ विषयवस्तु/श्रव्य–दृश्य संसाधन एकत्रित करें। इनका प्रयोग अपने अध्यापन कार्य में करें । इसके लाभ को अंकित करते हुए एक प्रतिवेदन तैयार करें तथा इनके सुधार के लिए सुझाव दें।

16.7.2 अंतर्क्रिया एवं पारस्परिक सहयोग हेतु आई.सी.टी

विकी (WiKi)

विकी एक बहुत ही उपयोगी एवं रुचिकर सामग्री है जहाँ लोग पारस्परिक सहयोग के द्वारा विषयवस्तु में कुछ जोड़ सकते हैं, सुधार कर सकते हैं और विषयवस्तु को बदल कर सकते हैं। शिक्षक अपने विषयक्षेत्र में उपलब्ध असंख्य पृष्ठों का अपने ज्ञान के नूतनीकरण हेतु प्रयोग कर सकते हैं।

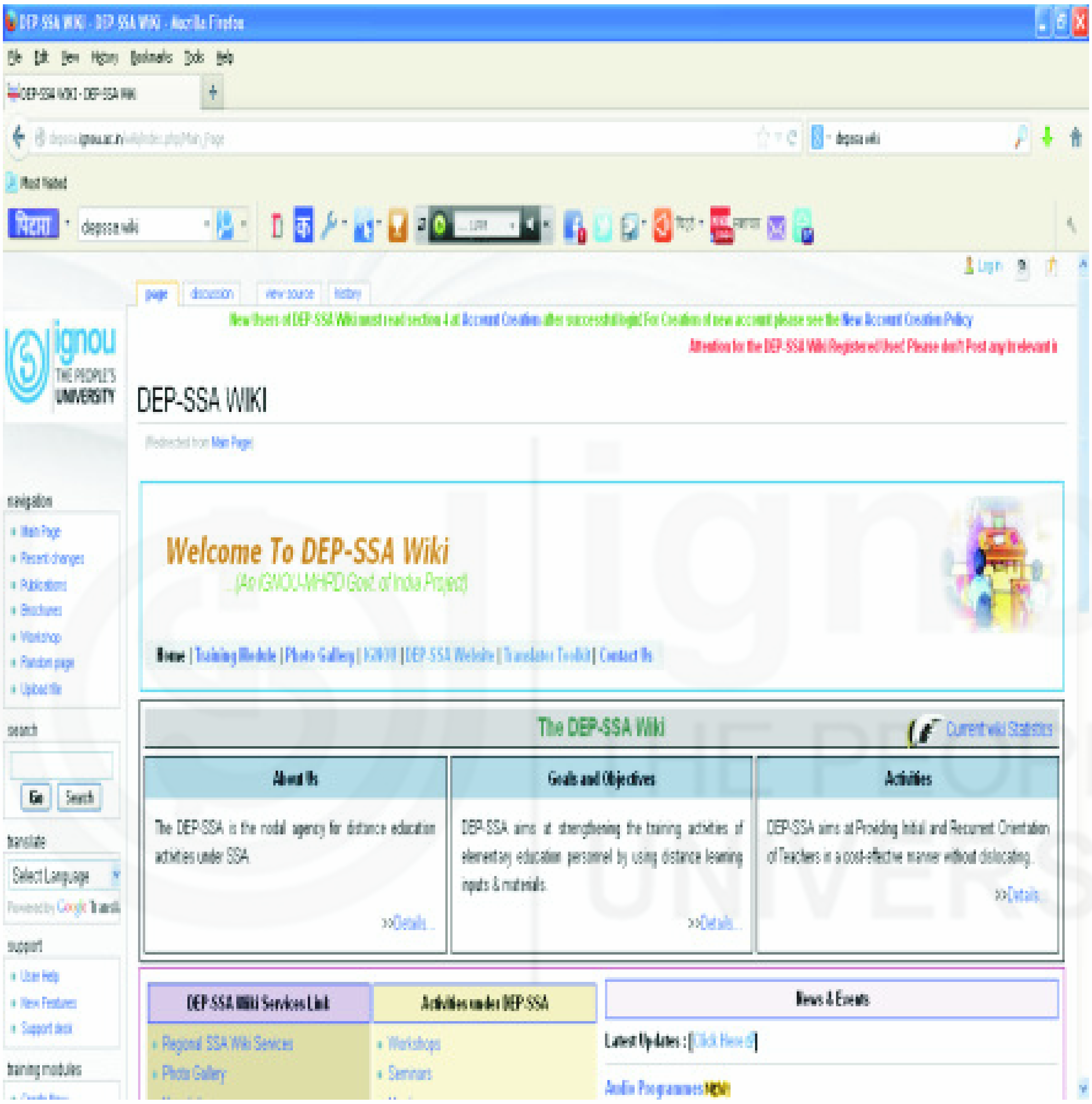

विकिपिडिया जानकारी प्राप्त करने हेतु सामान्य रुप से प्रयोग में लाया जाने वाला स्रोत है। लेकिन क्या आप यह जानते हैं कि आप इसका प्रयोग विषयवस्तु निर्माण के लिए कर सकते हैं। आप विषयवस्तु का संपादन भी कर सकते हैं तथा समूह के अन्य सदस्यों को भी विषयवस्तु के संपादन का अवसर दे सकते हैं । इस प्रकार, आप अपना स्वयं का विकी पृष्ठ निर्मित कर सकते हैं और बेहतर यह है कि इसे आपसी सहयोग द्वारा करें। विविध शैक्षिक एवं व्यावसायिक मुद्दों पर चर्चा करने एवं उन्हें साझा करने के लिए विकी पर एक चर्चा समूह बनाएँ। विकी को अनुभव करने का एक श्रेष्ठ तरीका अपना विकी पेज बनाना एवं उस पर अभ्यास करना है। विकी सिर्फ विषयवस्तु को साझा करने का अवसर ही नहीं प्रदान करता है बल्कि आप श्रव्य सामग्री, दृश्य सामग्री, चित्र, ग्राफ आदि भी भेज (पोस्ट कर) सकते हैं।

आप अन्य विकी पेज या वेबसाइट का हाइपरलिंक भी दे सकते हैं। आप http://en-wikipedia-org/wiki/wikipedia:startingarticle पर कोई लेख लिखना शुरु कर सकते हैं या विकी ट्युटोरियल्स को पढ़ सकते हैं । आप कुछ निःशुल्क उपलब्ध पृष्ठों जैसे क्रिएट योर विकि नाउ http://www-wikisite-com/indeÛ-php/crteate_your_wiki_now;khttp://www-wikia-com/special create new wiki पर अभ्यास कर सकते हैं।http://en-wikipedia-org/wiki/wikipedia:tutorial पर संपादन, प्रारुपण, लिंक एवं साइटेशन (उद्धरण) संबंधित कुछ अच्छे ट्युटोरियल्स हैं। आप इसे पढ़कर इसका अभ्यास कर सकते हैं।

ब्लॉग एवं परिचर्चा मंच

ब्लॉग शिक्षकों एवं अन्य व्यक्तियों के लिए अपने अनुभव, विचार एवं पाठ्य सामग्री जैसे कि पाठ्य योजना, कक्षाकक्ष प्रबंधन तकनीक तथा अन्य उपयोगी सुझाव साझा करने का सशक्त माध्यम है। शिक्षक एवं शिक्षण से संबंधित मुद्दों पर अनेक ब्लॉग उपलब्ध हैं। उनमें से कुछ विशिष्ट विषयों एवं मुद्दों से संबंधित हैं जबकि कुछ व्यापक स्वरुप के हैं । वर्तमान में आप कक्षाकक्ष प्रबंधन, शिक्षण सामग्री को साझा करने तथा शिक्षार्थियों को व्यस्त रखने के मुद्दों पर अनेक ब्लॉग पा सकते हैं । विषय केंद्रित ब्लॉग आपको विशेष विषय पर अपने ज्ञान को अद्यतन करने में आपकी सहायता करता है। ऐतिहासिक घटनाअओं एवं तिथियों से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्यों के संबंध में सूचना की त्वरित पुनश्चर्या करने में यह उन शिक्षकों, जिनको इनकी आवश्यकता है, की सहायता करता है।

शिक्षा के विविध आयामों पर कई प्रसिद्ध ब्लॉग लिखे गए हैं। यदि आप इन ब्लॉग्स को पढ़ेंगे तो पाएँगे किए समस्त विश्व के शिक्षक अपने अनुभव, विषयवस्तु, विधि, तथा शिक्षण–अधिगम संबंधी प्रयोग ब्लॉग्स के माध्यम से शिक्षक समुदाय तथा शिक्षण व्यवसाय में शामिल व्यक्तियों के समूह में साझा कर रहे हैं।

ऐसे ब्लॉग्स, जो सिर्फ आपके ज्ञान के विकास एवं नूतनीकरण में ही सहायक नहीं है बल्कि अनुभवों को साझा करने, विचारों एवं शिक्षण–अधिगम में हो रहे नवाचारों को भी साझा करने में सहायक हों, को पढ़ने की आदत बनाइए।

परिचर्चा समूह एवं मंच

आई.सी.टी. का एक अन्य प्रयोग चर्चा समूह एवं चर्चा मंच के निर्माण हेतु किया जाता है। कुछ चर्चा समूह किसी एक विषय, जैसे शिक्षकों की समस्याएं, किसी एक विषय के शिक्षक, आदि पर केंद्रित होते हैं। ऑनलाइन चर्चा समूह ऑनलाइन मंच को समर्पित हैं जहाँ लोग एक बंद समूह में कुछ मुद्दों को भेज सकते हैं, साझा कर सकते हैं एवं उस पर चर्चा कर सकते हैं। लोग समूह में अपनी टिप्पणी भी दे सकते हैं। उस टिप्पणी पर समूह के दूसरे सदस्य टिप्पणी दे सकते हैं एवं अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकते हैं। चर्चा समूह चैट समूहों एवं इंस्टैंट मैसेजिंग (त्वरित संदेशन) समूहों से भिन्न होते हैं क्योंकि ये सामान्यतया एक विषय या समस्या से संबंधित होते हैं एवं व्यक्तिगत आदान–प्रदान को यहाँ कोई स्थान नहीं दिया जाता है। चर्चा समूह अक्सर आर्काइव्ड होते हैं अर्थात इन समूहों में की गई चर्चा संग्रहित रहती है। ये संग्रह एक निश्चित क्रम में व्यवस्थित होते हैं ताकि एक प्रारंभिक संदेश के उत्तर में प्राप्त समस्त संदेश एक क्रम में पढ़े जा सकें। ये चर्चा समूह एक जैसे विचार वाले शिक्षकों को वाद–विवाद करने, चर्चा करने, अपने ज्ञान को समृद्ध करने तथा कौशलों में निखार लाने के लिए एक साझा मंच प्रदान करता है। इन चर्चा समूह के लाभों को अनुभूत करने के लिए आप अपने पसंद के किसी विषय पर स्वयं का चर्चा समूह विकसित करें या किसे चर्चा समूह में शामिल हो जाएँ।

क्रिया–कलाप 8

चर्चा समूह की सुविधा प्रदान करने वाले पोर्टल पर एक चर्चा समूह का आरंभ करें। निम्नतम 10 सदस्यों के एक समूह की शुरुआत करें तथा अपने शिक्षण अनुभवों के संबंध में प्रतिदिन चर्चा करें। 15 दिनों के पश्चात अपने अनुभवों के आधार पर एक प्रतिवेदन तैयार करें।

16.7.3 सामाजिक सम्पर्कतंत्र (Social Networking)

सोशल मिडिया वर्तमान का सबसे प्रभावी नवाचार है। सामाजिक सम्पर्कतंत्र संबंधी वेबसाइट के विकास ने इंटरनेट के उपभोक्ताओं की संख्या में आश्चर्यजनक वृद्धि की है। ऑनलाइन सामाजिक सम्पर्कतंत्र समुदाय जैसे फेसबुक, ट्वीटर, लिंक्ड इन तथा अन्य कई साइट कई सारे शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों के दैनिक जीवन का हिस्सा बन गए हैं। क्योंकि वे इसका प्रयोग संप्रेषण, सूचनाओं को साझा करने तथा संबंधों को बनाने और उसे बनाए रखने के लिए करते हैं। इन साइट पर कोई भी व्यक्ति कुछ भी साझा कर सकता है, संप्रेषित कर सकता है, पढ़ सकता है, टिप्पणी कर सकता है, अद्यतन कर सकता है, आलोचना कर सकता है, तथा सुझाव दे सकता है।

यदि आप ऐसे सामाजिक सम्पर्कतंत्र साइट्स पर जाते हैं तो आप एक संस्था या एक क्षेत्र में रुचि रखनेवाले कई सारे समूह पाएँगे, जैसे, विज्ञान शिक्षक, शोधार्थी के रुप में शिक्षक, क्रियात्मक अनुसंधान कर्ता, आदि, जो एक–दूसरे का सहयोग कर रहे हैं या सिर्फ टिप्पणी साझा कर रहे हैं। ऐसे मंच शिक्षकों के वृत्तिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन साइटस की मुख्य विशेषता सिर्फ विषयवस्तु के ज्ञान में वृद्धि करना तथा शिक्षण विधि में दक्षता प्रदान करना ही नहीं है बल्कि व्यावसायिक चुनौतियों को साझा करना, कक्षाकक्ष प्रबंधन की समस्याओं, क्रिया–कलापों के संगठन में अच्छे प्रयोग एवं अभ्यास करना भी है। शिक्षक योग्यता– वृद्धि, वृत्तिक विकास संबंधी कार्यक्रमों जैसे संगोष्ठी, कार्यशाला, विचार गोष्ठी(सिम्पोजिया), अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अवसरों को अपने सहकर्मियों के साथ साझा कर सकते हैं ताकि शिक्षक समुदाय के अधिकांश लोग इससे लाभान्वित हो सकें। शिक्षकों के कल्याण, शिक्षकों की समस्याओं तथा आलोचना/निंदा की समस्याओं से संबंधित मुद्दों पर इन मंचों पर व्यापक चर्चा होती है। सामाजिक सम्पर्कतंत्र (Social Networking) एक प्रजातांत्रिक काल्पनिक (वर्चुअल) सामाजिक वातावरण है जो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है तथा व्यवसायिकों के मध्य स्वस्थ चर्चा को बढ़ावा देता है।

ज्ञान साझा करनेवाले समुदाय

अधिकांश शिक्षक शिक्षार्थियों के साथ संप्रेषण हेतु पावर प्वायंट प्रस्तुतीकरण या श्रव्य–दृश्य सामग्री का प्रयोग करते हैं। अक्सर शिक्षक स्वयं इन के लिए सामान्य रुप से साझा किए जानेवाले विषयवस्तु का निर्माण करते हैं। उदाहरण के तौर पर पावर प्वायंट के स्लाइडों को साझा करने के लिए स्लाइड शेयर, आर्टिकल/लेख/शोध–पत्र/प्रयोगों के परिणाम/क्रियात्मक शोध संबंधी रिपोर्ट को साझा करने के लिए एकेडिमिया, टीचर ट्युब (शिक्षकों द्वारा निर्मित श्रव्य एवं दृश्य सामग्री को साझा करने हेतु), आदि। स्लाइड शेयर नामक साइट पर आप स्वयं द्वारा विकसित पावर प्वायंट स्लाइड्स को साझा कर सकते हैं और अपने पसंद के किसी भी स्लाइड को भी भेज(पोस्ट कर) सकते हैं। आपका पोस्ट (आपकी भेजी हुई सामग्री) सोशल नेटवर्किंग साइट पर बने आपके खाते से (जैसे कि फेसबुक) संबंधित होता है और आप अपने खाते से जुड़े सारे सदस्यों को अपने पावर प्वायंट प्रस्तुतीकरण के विषय में बता सकते हैं।

इस समुदाय के सदस्य उस पाठ्य सामग्री को देख सकते हैं, पढ़ सकते हैं।

Academia.edu नामक एक समूह में आप अपने शोध प्रकाशनों, अनुभवों, लेखों,क्रियात्मक शोधों के परिणामों को शैक्षिक समुदाय के साथ शाब्दिक प्रारुप (टेक्स्ट फॉर्मेट) में साझा कर सकते हैं।

यह आपको अपने क्षेत्र के नए आविष्कारों से तथा इस क्षेत्र में कार्य कर रहे विद्वानों के अध्ययन एवं शोध कार्यों का अनुगमन करने में आपकी सहायता कर सकता है। इस साइट पर बना आपका एकाउंट गूगल पर बने आपके एकाउंट या फेसबुक से भी लिंक किया जा सकता है।

शिक्षा से संबंधित श्रव्य–दृश्य सामग्रियों तथा विशिष्ट विषयवस्तु को साझा करने एवं प्रयोग करने के लिए अधिकांश शिक्षक, शिक्षा को समर्पित एक यू ट्युब आधारित पोर्टल टीचर्स ट्युब'' का प्रयोग करते हैं। टीचर ट्युब शिक्षा पर आधारित दृश्य एवं श्रव्य सामग्रियों का वृहदतम कोष है और बहुत सारे शिक्षक एवं शिक्षार्थी इस साइट के द्वारा अपनी श्रव्य एवं दृश्य सामग्रियों को शैक्षिक जगत के अन्य सदस्यों के साथ साझा करते हैं।

हमलोगों ने ज्ञान साझा करनेवाले इन समुदायों के विषय में चर्चा की लेकिन इनका प्रयोग करने और इन समूहों के साथ अंतर्क्रिया करने के लिए आपको इन साइट्स पर अपना खाता बनाना होगा और अपने द्वारा विकसित सामग्रियों को साझा करना होगा। आप में से बहुत लोग एम.एस.वर्ड. और एम.एस. पावर प्वायंट जैसे सॉफ्टवेयर से भली–भाँति परिचित होंगे लेकिन उचित प्रारुप में दृश्य–श्रव्य सामग्री का विकास करने, संपादन करने तथा अपलोड करने के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है।

16.7.4 ई–कॉन्फ्रेंस एवं वेबिनार

एक शिक्षक होने के नाते हम सब अपने वृत्तिक विकास में संगोष्ठी एवं सभाओं के महत्व से परिचित हैं। ऐसे कार्यक्रम न हमें सिर्फ अपने क्षेत्र के अन्य व्यक्तियों के साथ अंतर्क्रिया करने का अवसर प्रदान करते हैं बल्कि हमें अपने अनुभवों को साझा करने तथा विविध संस्थानों में कार्यरत अपने साथियों के प्रयोगों एवं अनुभवों से लाभान्वित होने का अवसर भी प्रदान करते हैं। सूचना एवं संप्रेषण तकनीक के विकास के साथ ही पारंपरिक रुप से आयोजित किए जाने वाले संगोष्ठियों एवं सभाओं के रुप में भी परिवर्तन आया है।

वर्तमान समय में ई–कॉन्फ्रेंस(इंटरनेट आधारित सभा) एवं वेबिनार(इंटरनेट आधारित सेमिनार) पारंपरिक कॉन्फ्रेंस एवं सेमिनारों को प्रतिस्थापित कर रहे हैं। ऐसे अनेक वेब पोर्टल हैं जो ई–कॉन्फ्रेंस एवं वेबिनार की सुविधा प्रदान करते हैं। ई–कॉन्फ्रेंस एवं वेबिनार के मुख्य लाभ निम्नलिखित हैं:

- भागीदार अपने कार्यस्थल से ही सहभाग कर सकते हैं;
- आभासी होने के कारण भागीदारों के संख्या की कोई बाध्यता नहीं रहती है;
- प्रत्येक भागीदार अन्य सभी भागीदारों के साथ साझा कर सकता है और अपने संदेश पोस्ट कर सकता है तथा अपने पोस्ट पर तुरंत पृष्ठपोषण एवं टिप्पणी पा सकता है;
- समस्त कार्यवाई को भावी प्रयोग के लिए प्राप्त किया जा सकता है;
- तुल्यकालिक एवं अतुल्यकालिक संप्रेषण संभव है। अभिलेखित सत्र भावी प्रयोग के लिए उपलब्ध रहते हैं।
- लोग अपने लाभ के क्रिया–कलाप को स्वयं चुन लेते हैं

- इन कार्यक्रमों के द्वारा क्षेत्रीय, राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय सीमाएँ एवं बाध्यताएँ समाप्त हो जाती हैं । अनेक देशों के शिक्षक एवं शिक्षार्थी एक ही मंच पर अपना योगदान दे सकते हैं तथा अपने कार्यों को साझा कर सकते हैं

क्रिया—कलाप 9

अपने रुचि के एक वेबिनार एवं ई—कॉन्फ्रेंस को पहचाने। एक लेख या शोध पत्र तैयार करें एवं इसमें सहभाग करें। अपने अनुभवों का एक प्रतिवेदन तैयार करें तथा पारंपरिक संगोष्ठियों / सभाओं की तुलना आई.सी.टी. बेस्ड वेबिनार एवं ई—कान्फ्रेंस से करें।

16.8 सारांश

प्रस्तुत इकाई सतत वृत्तिक विकास के अवसरों संबंधी विचार प्रदान करने का एक प्रयास है। एक सेवारत शिक्षक होने के नाते आपको कई बार कई प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शामिल होना पड़ता है। ये सारे कार्यक्रम सतत वृत्तिक विकास के तहत है लेकिन कई बार समय या संसाधनों की कमी के कारण आप कई अवसरों को खो देते हैं। इकाई की शुरुआत सतत वृत्तिक विकास की आवश्यकता एवं महत्व पर चर्चा के साथ शुरु हुई थी। इकाई यह भी व्याख्या करती है कि सतत वृत्तिक विकास सिर्फ ज्ञान के नूतनीकरण के लिए ही आवश्यक नहीं है बल्कि नवोदित चुनौतियों का सामना करने में स्वयं को दक्ष बनाने तथा व्यावसायिक सम्पर्कतंत्र के निर्माण के लिए भी आवश्यक है। इस इकाई में सूचना एवं संप्रेषण तकनीक के अनुप्रयोंगों पर भी रोशनी डाली गई है जो आपके व्यावसायिक विकास में आपकी सहायता करेंगे। पोर्टल जैसे कि साक्षात पर चर्चा शिक्षण—अधिगम प्रक्रिया के क्षेत्र में किए जा रहे सरकारी प्रयासों को ढूँढने / पता लगाने में आपके सहायता करेगी। इ—कॉन्फ्रेंस एवं वेबिनार व्यावसायिक विकास एवं व्यावसायिक अंतर्जाल निर्माण के लिए दूसरा महत्वपूर्ण अनुप्रयोग है जिसका प्रयोग आप अपनी सुविधा एवं रुचि के अनुसार कर सकते हैं। सहयोगी अधिगम (कोलोबीरटिव अधिगम एवं कॉपरेटिव अधिगम) के संबंध में आपको एक सामान्य जानकारी प्रदान करने के लिए मुक्त शैक्षिक संसाधनों एवं एम.आर.ओ. इ.आर. पर भी इस इकाई में चर्चा की गई है। मुक्त शैक्षिक संसाधनों तथा एम.आर.ओ.ई.आर. पर चर्चा ज्ञान के नए विकास से स्वयं को अद्यतन करने में आपकी सहायता करेगा तथा शिक्षार्थियों के अधिगम परिणाम में उन्नति हेतु आप गुणवत्तापूर्ण पाठ्य सामग्री युक्त नए संसाधनों को ढूँढ पाएँगे।

16.9 अभ्यास कार्य

1) अपने विद्यालय में 'शिक्षकों में व्यावसायवाद' विषय पर एक चर्चा का आयोजन करें। दूसरे शिक्षकों के विचारों का अवलोकन एवं अभिलेखित करें तथा चर्चा के मुख्य बिंदुओं, प्रमुख समस्याओं, चुनौतियों एवं सुझावों पर प्रकाश डालते हुए एक प्रतिवेदन तैयार करें।

2) अपने आस—पास में स्थित एक सी.टी.ई / शिक्षक शिक्षा संस्थान का भ्रमण करें तथा माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों को सतत व्यावसायिक विकास के अवसर प्रदान करने में इसकी भूमिका की आलोचनात्मक समीक्षा करे।

3) क्या आप समझते हैं कि आइ.सी.टी. समर्थित वृत्तिक विकास एक शिक्षक की तरह आपकी सहायता करेगा। एक माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक के लिए वृत्तिक विकास हेतु आई.सी.टी. के प्रयोग के रुप रेखा की चर्चा करे।

16.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

1) 1) एक व्यवसाय की निम्नलिखित प्रमुख विशेषताएँ हैः

☐ • एक व्यवसाय के लिए विशिष्ट ज्ञान वाले व्यक्ति एवं विस्तृत व्यावहारिक प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।

☐ • एक व्यवसाय समाज सेवा करता है।

☐ • एक व्यवसाय अपने सदस्यों के लिए अनवरत सेवाकालीन प्रशिक्षण की माँग करता है।

• व्यवसाय के हित को ध्यान में रखते हुए व्यवसाय की सदस्यता एक समान हित वाले व्यक्तियों का सुपरिभाषित समूह की होती है।

• व्यवसाय की अपनी आचार संहिता होती है।

• व्यवसाय अपने सदस्यों के व्यावसायिक जीवन को सुनिश्चित करता है

2) शिक्षण व्यवसाय को निरंतर परिवर्तित हो रहे समाज की आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं को ध्यान में रखना पड़ता है। यह एक राष्ट्र के आर्थिक एवं राजनीतिक विचार धारा से प्रभावित होता है । यह सिर्फ अपने राष्ट्र के इतिहास से ही नहीं बल्कि अन्य राष्ट्र के इतिहास से भी सीखता है। शिक्षार्थी जो कि ग्राहक होते हैं रुचि, योग्यता, सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि आदि चरों के आधार पर एक–दूसरे से भिन्न होते हैं।

2) 1) अपने शब्दों में उत्तर दें।

2) विषयों के ज्ञान का विस्तार करना, बदलती हुई शिक्षण विधि के कारण, मीडिया की बढ़ती हुई भागीदारी, आई सी टी के उपयोग पर ध्यान, नीतियों एवं योजनाओं का क्रियान्वयन/व्यस्थापन समाज एवं राष्ट्र के माँग को पूरा करना

3) 1) तालिका 16.1 देखें।

2) ये कार्यक्रम अल्पकालिक हैं तथा शिक्षकों में सिर्फ जागरुकता लाने में सक्षम है।

16.11 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें

• बी.ई.सी.टी.ए. (2004). व्हॉट रिसर्च सेज् एबाउट आईसीटी एंड कान्टिन्यूअस प्रोफेशनल डेवलपमेंट ऑफ टीचर्स, www.beeit.comGuidance%20Docs/../Archive/04b%20wtrs_cpds.pdfhttp://www.bee_it.com Guid ance Docs/…/Archive/04b wtrs_cpds.pdf. से लिया गया।

• डे.सी. (1999). डेवलपिंग टीचर्स. लन्दनः रूथलेज फाल्मर

• हूकर.एम. (2009). कन्सेप्ट नोटः द यूज ऑफ आईसीटीई इन टीचर प्रोफेशन डेवलपमेट www.gesci.org/old/files/doeman/TPD_workshop Concept_Note.docy से लिया गया

• हूकर एम. (2009). मॉडल्स एंड बेस्ट प्रैक्टिस्स इन टीचर प्रोफेशनल डेवलपमेंट http://www.gesci.org/old/files/docman/ Teacher_Professional_ Development_ Models.pdf से लिया गया।

• http://ncte-india.org/ncte_new/pdf/NCFTE_2010.pdf

- मानवसंसाधन विकास मंत्रालय (2012). गाइडलाइन्स फॉर इम्प्लीमेंटेशन फॉर रिस्ट्रकचरिंग एंड रिआरगेनाइजेशन ऑफ द सेन्ट्री स्वान्सर्ड स्कीम आफन टीचर एजुकेशन, pp.32-33
- मानवसंसाधन विकास मंत्रालय (2012). साक्षातः एक वन स्टॉप एजुकेशन पोर्टल, mhrd.gov.in/sakshat_hindi से लिया गया।
- ओ.ई.सी.डी. (1996). द नॉलेज वेस्ड इकोनॉमी, आरगेनाजेशन फॉर इकोनॉमिक कोऑपरेशन एंड डेवलपमेंटः पेरसि, www.oecd.org/ dataoecd/51/8/19/3021.pdf से लिया गया।
- पचतर.एन. एवं डियेली.सी. (2003). कम्प्यूटर मीडियेटेड कम्युनीकेशन एंड टीचर्स प्रोफेशनल लर्निंग, पेपर प्रेजेन्टेड एट द ब्रिटिश एजुकेशनल रिसर्च ऐसासिएशन, एनुमल कांफ्रेंस, हीरिट–वॉट यूनिवर्सिटी, एडिनवर्ग http://www.leeds.ac.uk/educol/documents/00003395.htmhttp://www.leeds.ac.uk/educol/documents/00003395.htm से लिया गया।
- www.nroer.in/home
- www.sakshat.ac.in